"मोमन अथवा खबर या दार विशेष"

मोमन अर्थात मुरीद यानी के मुर्दा । मुर्दे का भाव है कि जब मृतक को काटा भी जाये तो वह प्रतिरोध करने में केवल असमर्थ है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । अर्थात जब मोमन अथवा शिष्य श्रेणी की आत्मा को तैयार किया जाता है अर्थात सफाई की जाती है आत्मा के केवल अपने ही एकत्र किये हुऐ कर्मो रूपी मैल विशेष को धोने की तब भुगतान देते हुऐ वह "विशेष आत्मा" एतराज करने की बजाय केवल "प्रभु" का शुक्र

करती है निश्चित रूप से तथा अपने ही कमाये हुऐ "दुखों विशेष" को खामोशी से केवल हज्म करती है तथा निरन्तर "प्रभु" से हज्म करने के लिये "ताकत विशेष" मांगती रहती है और आगे से पाप एकत्र न करने का दृढ़ संकल्प केवल व्यवहारिक रूप से बनाये रखती है यकीनी तौर पर प्रत्येक "दुर्गम काल विशेष" में भी निश्चित रूप से । तभी केवल आत्मा विशेष स्वंय को मोमन अथवा शिष्य कहलवाने का अधिकार विशेष "प्रभु" के "दुर्लभ दरबार विशेष" से लिखित रूप से दिलवाने में समर्थ होती है निश्चित रूप से । मोमन अथवा शिष्य का मुखौटा विशेष तो देखा देखी सभी केवल अपने लोभ अथवा स्वार्थो विशेष की ही पूर्ति हेतू लगा लेते हैं निश्चित रूप से पर "सच्चे परमार्थी अथवा शिष्य विशेष" को आप ढूंढने के बावजूद भी प्राप्त कर सकने अथवा मिलने में केवल असमर्थ ही साबित होओगे निश्चित रूप से । सभी मुखौटा धारी विशेष-2 शिष्य अथवा मोमन केवल अपनी वासनाओं दुर्लभ को ही पूरा करवाने के चक्कर में चक्कर काटते मिलेंगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । बिना कुछ भी पुरुषार्थ किये दुर्लभ फल विशेष की कामना संजोये ही आज का मोमन अथवा शिष्य विशेष आप को प्रत्यक्ष उपलब्ध मिलेगा निश्चित रूप से । अगर जरा सा कुछ कह दोगे तो बिस्तर बांधे ही मिलेगा सदा के वास्ते आपको आखिरी प्रणाम लिखित रूप से पेश करता हुआ यकीनी तौर पर । अर्थात आपको अवश्य डिक्टेशन लेने का

अभ्यास बिना नागा नियम से करने का अभ्यासित होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से यदि इस विशेष मोमन अथवा शिष्य नाम की बीमारी विशेष को पालने का आप दुर्लभ शौक़ विशेष रखते हैं तो यकीनी तौर पर आपको इस का आदी बनना ही पड़ेगा ! आज का मोमन अथवा शिष्य विशेष "प्रभु" की "दुर्लभ रजा विशेष" में रहना तो दूर रहा सुनना तक पसन्द नहीं करता निश्चित रूप से। केवल "प्रभु" को ही अपनी "दुर्लभ रजा" विशेष में रखते हुऐ स्वंय को श्रेष्ठ समझता है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । अर्थात अंधा आँख वाले को रास्ता बताये तो फिर क्या नतीजा निकलेगा ? फिर आँख वाला कैसे भला दे देवे अर्थात अपने ही हाथों शिष्य विशेष को अंधे कुँऐं में ढकेलने का साधन बने ? "प्रभु" के प्रत्येक कार्य में केवल शिष्य का ही कल्याण निहित रहता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । प्रत्यक्ष का अभाव अथवा दुख केवल शिष्य की सफाई विशेष अथवा कल्याण के हेतू ही निश्चित रूप से आवश्यक साधन विशेष ही है यकीनी तौर पर । इस आवश्यक तथा लाभ विशेष से अन्जान शिष्य केवल रूकावट बनना ही पसन्द करता है क्रिया विशेष में निश्चित रूप से । परन्तु बाद में प्रत्यक्ष होने पर केवल पछताना ही शेष हाथ आता है शिष्य के निश्चित रूप से या तो शिष्य फोड़े विशेष की सफाई करवाना ही पसन्द नहीं करता अगर करवाता भी है तो काफी मवाद विशेष बीच में ही रखवा करके मलहम पट्टी करवा लेता है निश्चित रूप

से रोते चिल्लाते हुऐ । फिर बाद में वही "मवाद विशेष" कई गुना बढ़ करके केवल उसे, शिष्य स्वंय को ही निश्चित आवश्यक रूप से हज्म करने के लिये मजबूर होना ही पड़ता है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । शिष्य का कल्याण केवल स्वंय को "प्रभु" की "दुर्लभ रजा" विशेष के हवाले अथवा सुपुर्द करने में ही निश्चित रूप से अर्थात केवल मुर्दा बनने में ही सिर्फ शिष्य का ही लाभ है यकीनी तौर पर । यह सफाई विशेष भी केवल तभी सम्भव है जब शिष्य केवल "प्रभु" का ही शौक़ विशेष रखे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "शुद्ध हृदय" को व्यवहारिक रूप से प्रत्यक्ष साबित करते हुऐ । शिष्य अथवा मोमन कहलवाना बहुत आसान है परन्तु बनना केवल व्यवहारिक रूप से असंभव जैसा मुश्किल ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "मिहर" यानी के दया विशेष "मसीत" अर्थात मस्जिद समझ । भाव है कि शिष्य में दया विशेष यानी के स्वंय अर्थात आत्मा को आजाद करवाने की दया विशेष का भाव होना चाहिये । आत्मा अनन्त काल से मूल विशेष से बिछुड़ी हुई भूखी प्यासी तड़प रही है, सुख अथवा शान्ति की तलाश में है दूसरे पर दया करने से पहले तू अपनी खबर कर निश्चित रूप से दूसरे के चक्कर में ही तू केवल आज तक इस जेलखाने में बंदी अथवा कैदी बना हुआ है यकीनी तौर पर । पहले अपने को मुक्त करवा ले फिर दूसरे की मदद करने में भी तू काबिल हो ही जायेगा निश्चित रूप से जो खुद स्वंय कैदी है,

ऐड़ियाँ रगड़ रहा है भला दूसरे कैदी की क्या मदद कर सकता है अर्थात कुछ भी दया करने में समर्थ हो ही नहीं सकता निश्चित रूप से । जिस आत्मा में स्वंय को आजाद करवाने का "दुर्लभ शौक़" विशेष नहीं है निश्चित रूप से उस आत्मा विशेष अथवा मोमन का मस्जिद अथवा स्थान विशेष पर जाना कुछ भी अर्थ ही नहीं रखता । "सिदक" अर्थात यकिन "मुसला" अर्थात जिस वस्त्र विशेष पर बैठ करके नमाज अर्थात "प्रभु बन्दगी" की जाती है । यानी के यदि तेरा केवल "एक अल्लाह" अथवा "परम चेतन सत्ता" पर ही यकीन अर्थात विश्वास ही नहीं है कि वो "प्रभु" तुझे प्रत्येक काल में मुक्त करवाने में पूर्ण समर्थ है निश्चित रूप से तो तू निश्चित रूप से मुसला से रहित अर्थात अपनी जिन्दगी व्यर्थ ही जी अथवा खोता चला जा रहा है निश्चित रूप से । यानी के प्रत्येक काल में तुझे अपने छुड़ाने वाले "दुर्लभ प्रभु विशेष" पर पूरा भरोसा होना ही चाहिये आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । "हक" "हलाल" कुराण । अर्थात केवल अपने अधिकार अथवा हक विशेष तक ही सीमित रहना "सच्चे मोमन" को निश्चित रूप से कभी भूले से भी किसी दूसरे के अधिकार विशेष को नहीं रखना अथवा दबाना तभी तू स्वंय को हलाल यानी के पवित्र लफ्ज में पूरा उतारने में सफल हो सकेगा "सच्चे मोमन ।" ऐसी पवित्रता धारण करने पर ही तू दावा कर सकता है कि तेरी व्यवहारिक जिन्दगी रूपी किताब विशेष "कुराण द्वारा निर्देशित" है। "सरम"

"सुन्नत" अर्थात तुझे परमार्थ रूपी विशेष कार्य में सरम यानी के मेहनती होना चाहिये नियमानुसार निश्चित रूप से । प्रमादी विशेष आत्माओं का इस दुर्लभ परमार्थी मार्ग विशेष में कुछ भी "अर्थ" ही नहीं है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । तुझे स्वंय को मुक्त करवाने का कार्य अथवा शौक़ पूरी समर्था विशेष से साबित करना ही "सुन्नत" विशेष है निश्चित रूप से । इस पुरुषार्थ दुर्लभ के अभाव में तेरा मोमन होने का दावा केवल व्यर्थ का प्रलाप मात्र ही है निश्चित रूप से । "सील" यानी के संयम ही केवल "रोजा" अर्थात उपवास है निश्चित रूप से । उपवास अथवा रोजा का भाव है सभी इन्द्रियों को सीमित करना अर्थात अभ्यास करना आत्मा को सभी निकृष्ट वासनाओं से ऊपर उठाने का नियमानुसार संसार अथवा इन्द्रियों में केवल गुजारे मात्र की ही प्रविष्टि रखना निश्चित रूप से प्रत्येक विशेष काल अथवा धर्म में विचार कर यकीनी तौर पर । यदि भूखा यानी के उपवास अथवा रोजा रखने से ही "प्रभु" मिलन या प्रभु प्रसन्नता हो तो आप के अपने ही देश में पचास करोड़ रोज भूखे ही सोते हैं निश्चित रूप से उन्हें फिर "दुर्लभ प्रभु मिलन" सम्भव क्यों नहीं हो सका आज तक ? यानी के "अन्न" जीवित रहने का आवश्यक साधन है निश्चित रूप से प्रत्येक काल विशेष में ना कि अन्न रहित जीवन "दुर्लभ प्रभु मिलन" का प्रमाण पत्र हो ही नहीं सकता निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । शरीर की मांग को स्थिति विशेष

के अनुसार विचार कर पूरा करना ही केवल मनुष्य धर्म अथवा रोजा ही है निश्चित रूप से । विशेष धर्म में इन्द्रियों के बल विशेष को तोड़ने अथवा कमजोर करने हेतू ही केवल उपवास की क्रिया को प्रयोग में लाया जाता है निश्चित रूप से । इस रोजा अथवा उपवास की क्रिया विशेष से "प्रभु" प्रसन्नता का दूर-2 तक कोई भी सम्बन्ध ही नहीं है यकीनी तौर पर । शरीर को इतना भी मत दो कि आत्मा इन्द्रियों की ही गुलाम बन जाये तथा इतना कम अभाव में भी मत रखो शरीर को कि आत्मा शरीर से कुछ कार्य ही न ले सके । शरीर आत्मा का मृत लोक में स्वंय को प्रस्तुत करने का एक "दुर्लभ साधन" अथवा वस्त्र ही है निश्चित रूप से । इस दुर्लभ कीमती वस्त्र को पूरी हिफाजत से स्वच्छ तथा समर्थ रखना प्रत्येक स्थिति अनुसार विचार कर के आत्मा विशेष का स्वधर्म ही है निश्चित रूप से । इसलिये प्रत्येक आत्मा विशेष को अपने इस स्वंय के धर्म पालन से विमुख कभी भूले से भी न होना चाहिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । कब शरीर को कैसा तथा कितना अन्न रूपी साधन विशेष उपलब्ध करवाना है इसका प्रत्येक आत्मा विशेष को अवश्य आवश्यक रूप से ज्ञान होना ही चाहिये निश्चित रूप से । शरीर की अन्दरूनी सफाई में उपवास काफी कामगार साधन साबित होता है निश्चित रूप से । जिस तरह से मशीन की सफाई आवश्यक होती है उसी तरह से इस दिन-रात लगातार चलती रहने वाली शरीर रूपी मशीन की भी

सफाई विशेष की अवश्य आवश्यकता आवश्यक रूप से होती ही है । "आत्मा तथा परमात्मा" दोनों ही इस शरीर में निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध रहते हैं निश्चित रूप से । शरीर को अभाव में रखने से आत्मा तड़पती है फिर "प्रभु" कैसे प्रसन्न हो सकते हैं अपने ही अंश आत्मा के तड़पने से ? निश्चित रूप से "प्रभु" की केवल अप्रसन्नता ही उपलब्ध होगी यकीनी तौर पर सम्बन्धित आत्मा विशेष को अभाव विशेष में रहने से प्रत्येक काल में । "प्रभु" अपने अंश विशेष को कभी भी अभाव में देखना पसन्द ही नहीं करता । "नक नथ खसम हथ किरत धक्के देई ।" अर्थात आत्मा की केवल अपनी निकृष्ट करतूतों अथवा किरत विशेष-2 के कारण ही उसे खाने अथवा भोजन से रहित या बेदखल होने पर मजबूर होना ही पड़ता है नियमानुसार अवश्य आवश्यक रूप से । वरना जैसे नाक में नथ पिरोयी हुई रहती है वैसे ही पूरी सृष्टि का कुल बन्दोबस्त "खसम अथवा प्रभु" के दरबार से "प्रत्यक्ष" होने से पहले ही उपलब्ध कर दिया जाता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में जीव के प्रत्यक्ष होने से पहले ही थनों विशेष में दूध उपलब्ध कर दिया जाता है निश्चित रूप से, केवल जीव के अपने कमाये हुऐ कर्म अथवा किरत विशेष ही जीव को पहले से ही उपलब्ध दूध विशेष से बेदखल होने के लिये अवश्य मजबूर कर ही देते हैं निश्चित रूप से । "जैसा बीजै सो लूणे करम एह खेत ।" यानी के मनुष्य के दुर्लभ जन्म रूपी खेत विशेष में आत्मा जैसा भी भला

या बुरा बीज बीजती है केवल उसे स्वंय को ही अवश्य अपने ही हाथों द्वारा बीजे हुऐ करम रूपी बीज विद इंटरेस्ट अलग-2 जूनों रूपी फल विशेष के रूप में हज्म करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से अनन्त कल्पों के बाद भी यकीनी तौर पर । फिर कैसे आत्मा के अभाव से "प्रभु" प्रसन्नता उपलब्ध हो सकती है ? अर्थात "प्रभु" प्रसन्नता केवल आत्मा के विकास यानी के मुक्ति से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होती है निश्चित रूप से । फिर जो आत्मा स्वंय को मुक्त करवाने में दृढ़ संकल्प रखती है उसे भला क्यों नहीं "प्रभु की दया विशेष" उपलब्ध होगी निश्चित रूप से । "प्रभु" उस आत्मा विशेष पर सदा ही कुर्बान है जो स्वंय को निरन्तर मुक्त करवाने के लिये प्रयन्नशील है निश्चित रूप से । "होह मुसलमान" यानी के यदि मोमन रूपी मुसलमान कहलवाना चाहता है तो निश्चित रूप से तुझे इन भावों विशेष का चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप होना ही पड़ेगा यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । "करणी काबा" अर्थात तेरी ईमानदारी की कृत विशेष ही "काबा का हज" विशेष है निश्चित रूप से । "सार काबा घट ही भीतर जे कर जाने कोई ।" कर यानी के कृत तेरी अगर पवित्र है तो एक नहीं सार काबा का चलता फिरता तू प्रत्यक्ष हज रूपी फल ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "कोई" अर्थात ऐसी पवित्र आत्मा दुर्लभ ही है निश्चित रूप से । लेकिन काबा में हज करने वाली आत्माओं की अवश्य भीड़ घौर उपलब्ध ही है निश्चित

रूप से । अर्थात जो आत्मा स्वंय रहत मर्यादा रूपी व्यवहारिक जीवन जीने से रहित अथवा दूर ही है इसके लिये इन काबा के हज विशेषों से कुछ भी उपलब्ध होना सुपने में भी केवल असंभव ही है निश्चित रूप प्रत्येक काल में तथा जो आत्मा पवित्र व्यवहारिक जीवन जीती है उस दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये इन व्यर्थ के "काबा के हज" जैसे कार्यो विशेष से भला क्या उपलब्ध हो सकता है ? अर्थात ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये काबा के हज नाम के कार्यो विशेष से कुछ भी मदद मिलना केवल असंभव लफज को ही समर्थ बनाना है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में। यानी के बाहर के सभी महान-2 क्रियाओं विशेष-2 से जीव की मुक्ति का दूर-2 तक कुछ भी सम्बन्ध ही नहीं है निश्चित रूप से । ये सभी तीर्थ-स्नान इत्यादि विशेष-2 क्रियाऐं केवल घसीटा राम जी अथवा शैतानी ताकतों के मीठे-2 से दुर्लभ विशेष-2 भयानक फंदे मात्र ही हैं आत्मा को फँसाने के निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "सच पीर कलमा ।" कलमा अर्थात शब्द विशेष यानी के "रागमई प्रकाशित आवाज" जो इस सृष्टि का केवल सच अथवा सत्य है निश्चित रूप से "पीर" यानी के केवल सच्चा अथवा पूरा गुरू कहलाने का दुर्लभ विशेष अधिकारी ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "करम निवाज" अर्थात इस "रागमई प्रकाशित आवाज" को प्रत्यक्ष अनुभव कर लेने के लिये "बेताब आत्मा" जो निरन्तर प्रयत्नशील है निश्चित रूप से नमाज पढ़ने जैसा ही पवित्र

है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में। इस "शौक़ विशेष" के अभाव में तेरी "समस्त नमाजें तथा रोजे" विशेष कुछ भी अर्थ ही नहीं रखते "आत्मिक कल्याण" हेतू निश्चित रूप से । "तसवी सा तिस भावसी नानक रखे लाज ।" "नानक" लफज का प्रयोग वाणी विशेष में केवल मिलावट को रोकने के लिये किया गया है "गुरू अर्जुन देव जी" द्वारा न कि नानक नाम की आत्मा विशेष के द्वारा स्वंय की अहमियत को स्थापित करने के लिये । नानक लफज विशेष को उपदेशक अथवा मार्गदर्शक के स्थान पर प्रयोग करो फिर अर्थ ठीक प्रत्यक्ष होंगे निश्चित रूप से । अपना ब्यान नानक नाम की आत्मा के द्वारा स्वंय को "कहु नानक हम नीच करमा" - "जन नानक हाट विहाजिये हर गुलम गुलामी" -"जन नानक दान मागे तेरे दासन दास दसाइण" नीच, कमीना, गुलामों का गुलाम तथा दासों का दास का भी दास प्रत्यक्ष अनुभव करवाया है निश्चित रूप से । केवल यह साबित करने के लिये कि आत्मा पापों के ढेर पर बैठी निरन्तर पाप को एकत्र करने का दुर्लभ पेशा विशेष ही अपनाये बैठी है । विशेष निरन्तर व्यवहारिक रूप से नहीं अपनाती कोई इसे कैसे बक्श देगा भला ? फिर बक्शने वाला केवल "एक परमात्मा विशेष" ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । स्वंय को बक्शने योग्य प्रत्यक्ष अनुभव करवाना केवल आत्मा विशेष के स्वंय के ही "निजी कल्याण" हेतू आवश्यक है निश्चित रूप से । ऐसे ही "दुर्लभ भाव विशेष" धुर निर्देशित वाणी

में वाणी विशेष को प्रत्यक्ष करने वाली "दुर्लभ आत्माओं" विशेष द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव करवाये गये हैं निश्चित रूप से । न कि स्वंय को गुरू परमात्मा अथवा बक्शने वाला स्थापित करने के लिये इन लफजों विशेष का प्रयोग किया है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । फिर लोभी तथा ठग श्रेणी की आत्माओं विशेष द्वारा जो ये उल्टे भाव प्रचारित किये जा रहे हैं और जिन को धारण करते हुऐ आप स्वंय को श्रेष्ठ स्थापित करने में ही व्यस्त हो निश्चित रूप से, इन "दुर्लभ आत्माओं" विशेष की प्रसन्नता तो एक तरफ रही इन को जान छुड़ानी तक मुश्किल पड़ रही है । फिर आपको इनकी प्रसन्नता कैसे प्रत्यक्ष अनुभव हो सकेगी कभी सुपने में भी ? केवल विचार में भी सिर्फ अप्रसन्नता ही आपको उपलब्ध होगी प्रत्येक काल में इन दुर्लभ-2 आत्माओं विशेष को निश्चित रूप से । ये सब धन्धा आप से "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" ही करवा रही हैं निरन्तर केवल स्वंय के इस "मृत लोक" को रोशन रखने के लिये ही निश्चित रूप से । ऐसे उल्टे धन्धे विशेष-2 करवा कर जुर्माना भी यही "शैतानी ताकतें" ही वसूल करती हैं अर्थात इस शमशान भूमि में आत्मा का प्रकाश प्रत्यक्ष रहे । यदि आत्मा अपने विशेष घर चली गई तो फिर इन "कब्रिस्तानों विशेषों" का भला क्या अर्थ है निश्चित रूप से । जबरदस्ती रोका नहीं जा सकता आत्मा को नियमानुसार ! फिर नियम विशेषों का उल्लंघन आत्मा के द्वारा और जुर्माना अनन्त जूनों अथवा पिंजरे विशेष रोशन

करने के रूप में आत्मा का भुगतान पहले से ही निश्चित है यकीनी तौर पर । हर लफज विशेष को प्रत्यक्ष होने से रोकने हेतू ये "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" निरन्तर प्रयन्नशील हैं बिना रूके अपनी "दुर्लभ कमाई" विशेष को प्रत्यक्ष किये हुऐ निश्चित रूप से । हर लफज ऐसे ही प्रत्यक्ष हो रहा है जैसे किसी "भयानक विशधर" के मुँह से उसकी जान ही निकाली जा रही हो निश्चित रूप से । केवल इतने से ही आप विचार लो कि कितनी बड़ी-2 ताकतें विशेष-"धुर विशेष" से उतरी हुई हैं इन "शैतानों" के मुँह से लफज रूपी निवाला निकालने हेतू केवल एक दीन हीन आत्मा के कल्याण अथवा छुड़ाने हेतू ही निश्चित रूप से । बिना "शब्द विशेष" की "रजा अथवा दया विशेष" ताकत के कैसे ये असंभव कार्य सम्भव हो सकता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ? इन "शैतानी मुल्कों" में गुप्त भेदों को प्रत्यक्ष करना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से। इस शरीर को हजारों बार चाट चुकी हैं ये "शैतानी ताकतें" दीमक की तरह से निश्चित रूप से । केवल एक मुर्दे से ये भेद प्रत्यक्ष किये जा रहे हैं "आत्मिक कल्याण" हेतू निश्चित रूप से । जो केवल "शब्द रजा" का एक "उत्कृष्ट नमूना" मात्र ही है निश्चित रूप से । जिसे आप जड़ पदार्थों अथवा निकृष्ट जूनों को पूजने से ही प्राप्त कर लेना चाहते हो भला ये "दुर्लभ फल विशेष" इन निकृष्ट के कार्य विशेषों से उपलब्ध हो सकता है कभी सुपने में भी ? केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना

है निश्चित रूप से । बाहरी क्रियाओं रोजे-नमाजों अथवा ईसा-मोहम्मद-नानक-गोबिंद इत्यादि के नामों विशेषों के ढोल बाजे बजाने-नाचने कूदने से भला ये मुक्ति नाम का दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष आप कैसे सम्पन्न करने में समर्थ हो सकोगे सुपने में भी ? केवल चोटें खाने के लिये ही स्वंय को मजबूर बना रहे हो अपने ही हाथों निश्चित रूप से । बहुत दुख भयानक-2 आपको भुगतने पड़ेंगे "प्रभु" को भुलाने के एवज में निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । इन उपलब्ध लफजों की सख्ती से आप "प्रभु" की अप्रसन्नता का अंदाजा अवश्य अनुभव कर सकते हो निश्चित रूप से । एक लफज विशेष भी किसी भी आत्मा विशेष की पसन्दगी अथवा नापसन्दगी का इसमें प्रत्यक्ष नहीं हुआ है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । प्रत्येक काल में केवल यही लफज विशेष "प्रभु" की दुर्लभ "आत्मिक प्रेरणा" होने के कारण निश्चित रूप से "पत्थर की लकीर" ही साबित होंगे यकीनी तौर पर । आपके समस्त उपलब्ध परमात्माओं सहित ने अनन्त विघ्न विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किये हैं तथा कर रहे हैं इन लफजों विशेष को प्रत्यक्ष होने से रोकने के लिये निश्चित रूप से "शैतानी ताकतों" को "दुर्लभ-योगदान" प्रस्तुत करते हुऐ निरन्तर यकीनी तौर पर । आपके सभी दुर्लभ-2 प्यारे-2 परमात्माओं विशेष का इन्तजाम विशेष तौर पर "प्रभु के दरबारे खास" में किया जा चुका है निश्चित रूप से केवल प्रत्यक्ष होना बाकी है वो भी जैसे-2 समय बीतेगा जरूरत

अनुसार अवश्य प्रत्यक्ष होता ही जायेगा अपने आप स्वाभाविक रूप से नियमानुसार यकीनी तौर पर । सभी दुर्लभ-2 परमात्माओं को अवश्य अनन्त काल तक के लिये दुर्लभ-2 खास-2 सेवकों सहित चोटें विशेष-2 खाने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । ये सब दुर्लभ हिसाब विशेष यही विशेष "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" ही करेंगी निश्चित रूप से जिनके कि आप नुमाईंदें अथवा पैगम्बर विशेष-2 बने बैठे हो इन्हें ही खुश करने में व्यस्त हो दिन रात केवल इन "शैतानी ताकतों" की मदद करने हेतू ही निश्चित रूप से । आपके बचाव के समस्त प्रयन्न केवल असमर्थ ही साबित होंगे प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । सृष्टि "कर्म" पर आधारित है निश्चित रूप से । "कर्म" विशेष आपका "शैतानी" पक्ष का है फिर मुक्ति का सुपना कैसे साकार होना संभव हो सकता है निश्चित रूप से ? "कर्म" के "फल विशेष" बदलने अथवा बक्शने की विशेष समर्था एक "प्रभु" के सिवाय और किसी में भी केवल असंभव ही है निश्चित रूप से । "प्रभु" प्रत्येक फल का दाता विशेष है "इकलौता" निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "प्रभु" प्रसन्नता का अन्दाजा तो उपलब्ध लफजों विशेषों में प्रत्यक्ष ही है निश्चित रूप से । फिर बचायेगा कौन तथा कैसे-किस बल अथवा ताकत से ? अब तो केवल स्वंय को "परमात्मा" स्थापित करने का फल विद इंटरेस्ट भुगतना भर बाकी है निश्चित रूप से तैयार रहो !

"तसवी" अर्थात माला-तिस यानी के "प्रभु" "भावसी" अर्थात उपलब्ध "प्रभु प्रेरणा" का चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप बनने वाली आत्मा विशेष का ही कार्य विशेष यानी के हाथ में पकड़ी हुई माला "प्रभु" बन्दगी हेतू को भायेगी तथा नानक रखे "लाज" यानी के आत्मा मुक्त करवाने हेतू "प्रभु दया विशेष" उपलब्ध हो सकेगी निश्चित रूप से तभी तेरा केवल स्वंय का कल्याण होना संभव हो सकेगा प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर और फिर तू सच्चा मोमन अथवा परमार्थी विशेष कहलाने का स्वंय को अधिकारी घोषित करवाने में सफल हो सकेगा "दुर्लभ प्रभु" विशेष के "दरबारे खास" से निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । अब तेरा धन्धा विशेष क्या है ? नमाज अथवा रोजों विशेष को निभाते हुऐ गरीब जानवर की गर्दन पर छुरी फेरना और स्वंय को मुक्त घोषित करना ! अपना तथा सभी सम्बन्धियों के मनुष्य जन्म के "दुर्लभ अवसर" को इन निकृष्ट बाहरी क्रियाओं विशेष में पूरी तरह से केवल डुबोना निश्चित रूप से । यह दुर्लभ विशेष संदेश पूरी मनुष्य जाति में आई हुई आत्माओं के केवल स्वंय के "निज कल्याण" हेतू ही प्रस्तुत किया गया है "धुर विशेष" से निश्चित रूप से । "परथाई साखी महापुरख वोलदे सांझी सगल जहानें ।" अर्थात ब्यान किसी एक को सामने रख कर दिया जाता है पर यह "प्रभु" की विशेष दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा सभी आत्माओं

के लिये अवश्य कल्याणकारी साबित होती है विशेष रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ! जैसे सिख अथवा मोमन या मुसलमान लफज के स्थान विशेष पर स्वंय को रख लो अथवा शिष्य स्थापित कर लो शेष अपनी अपनाई हुई सभी प्रकार की मत धर्म विशेष की विशेष-2 बाहरी क्रियाओं और लफजों विशेष को सामने रख लो सब कुछ अपने आप स्पष्ट होता चला जायेगा निश्चित रूप से कि आप "प्रभु" के नजदीक जाने वाले कार्यो विशेष में व्यस्त हो या कि "प्रभु" से केवल दूर ही दूर जाने में अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने में लगे हुऐ हो निरन्तर अपनी "दुर्लभ हस्ती" मनुष्य के जन्म को इन व्यर्थ की बाहरी निकृष्ट क्रियाओं में पूरी तरह से डुबोते हुऐ निश्चित रूप से ।

"पंज निवाजां वखत पंज पंजा पंजे नाउ" पाँच नमाजों की क्या कहें कौन सा पल विशेष नाउ अर्थात केवल प्रकाश से रहित है ? अर्थात प्रत्येक प्राण पर केवल प्रकाश का ही नाम दर्ज है निश्चित रूप से और तू लफजों विशेष में ही केवल स्वंय को डुबो रहा है निश्चित रूप से । इस प्रकाश के अभाव में कुछ भी प्रत्यक्ष होना केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "पहला सच" अर्थात पहली नमाज "सच" यानी के केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" को ही तू धारण कर व्यवहारिक रूप से अन्दर तथा बाहर दोनों तरफ से केवल सच लफज को ही सार्थक बना निश्चित रूप से । "हलाल

दुई" अर्थात केवल ईमानदारी से अपने अधिकार विशेष तक ही सीमित रख स्वंय को निश्चित रूप से । गरीब जानवर को अधिकार विशेष जीने के हक से बेदखल करके बेरहमी से उसकी गर्दन पर छुरी फेर कर तड़प-2 मारते हुऐ तू कैसे "प्रभु" के "दरबारे खास" में स्वंय को निरपराध साबित कर सकेगा ? यही आत्मायें विशेष चीख-2 करके केवल तुझी से बदला मांगेगी प्रभु दरबार में फिर तुझे भी अवश्य केवल अपनी ही गर्दन प्यारी सी पर छुरी फिरवाने के लिये इन्हीं आत्माओं विशेषों से अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से अनन्त काल के बाद भी यकीनी तौर पर । इन्हें तड़पा-2 कर मारता है फिर इनकी मौत को अपने नाम दुर्लभ "कुर्बानी" लफज से जोड़ लेता है । तेरी ये चालाकी क्या "प्रभु" से छुपी हुई है ? क्या इनमें कैद आत्मायें बेजुबान हैं ? क्या इन्हें तेरी वासनाओं विशेष को पूरा करने के हेतू ही प्रस्तुत किया गया है ? "कुर्बानी" का शौक़ विशेष रखता है तो केवल स्वंय का सिर प्रस्तुत कर "प्रभु दरबार" में केवल अपनी ही गर्दन पर छुरी फेर कर तो देख जरा । फिर तुझे अवश्य अनुभव हो ही जायेगा कि कुर्बानी लफज को कैसे अनुभव किया जाता है व्यवहारिक तरीके विशेष से निश्चित रूप से । ये कुर्बानी जानवर की तो "प्रभु" दरबार में केवल जानवर में कैद आत्मा के खाते विशेष में ही दर्ज की जायेगी निश्चित रूप से तेरे खाते में केवल "घोर-2 नर्को विशेष"

' ' की भयानक-2 तड़पाने वाली दुर्लभ-2 यातनायें ही लिखी जायेंगी "प्रभु दरबार" में निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले। केवल यही नतीजा निकल चुका है सिर्फ तेरे आने भर का इन्तजार है बस फिर तू स्वंय ही देख लियो "नर्को घोर" को भुगतते हुऐ अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । "सीस डार भुई धरे तापै रखे पांव । दास कबीर यो कहे ऐसा होई तो आओ ।" ये "मार्ग विशेष मुक्ति" का केवल स्वंय को कुर्बान कर देने का है निश्चित रूप से । नौ द्वारों से स्वंय को समेटना अथवा "शैतानी ताकतों" विशेष से लड़ना केवल तपते अंगारे में स्वंय को जलाना मात्र है निश्चित रूप से । इन ताकतों विशेष "शैतानों" का सीस काटे बिना अथवा इनके चंगुल से ऊपर उठे बिना तेरा कार्य विशेष मुक्ति का कैसे सम्पन्न हो सकता है कभी सुपने में भी तू केवल असमर्थ ही साबित होगा निश्चित रूप से । केवल बार-2 मरने अथवा जलने का हौंसला विशेष रखने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष का ही "प्रभु दरबार" में विचार किया जाता है निश्चित रूप से । और तू केवल मुर्दो अथवा कब्रों विशेष को देखकर के ही मुक्ति गाँठ बाँध लाया है पोस्टर विशेष के रूप में गले विशेष में लटका रखा है और स्वंय को मुक्त समझ रहा है केवल मौत के मुँह में ही आखिरी साँसें गिनते हुऐ । "शैतानी ताकतें" निरन्तर तुझे हज्म करती जा रही हैं निश्चित रूप से और तू हाथ पर हाथ धरे केवल नाचने कूदने-ईद मनाने में ही व्यस्त है गरीब जानवर को जिबह कर के ये

दुर्लभ नाच विशेष केवल तेरे स्वंय का ही आत्मिक मौत करने का तमाशा है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । "हलाल" केवल तेरी स्वंय की प्यारी सी दुर्लभ सुराईदार गर्दन विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में इस अपनी सुराई जैसी गर्दन विशेष पर तेरे स्वंय के ही हाथों के द्वारा छुरी फेरे बिना तेरा स्वंय की मुक्ति का दुर्लभ सुपना कभी भी साकार होना केवल असंभव लफ्ज को ही समर्थ बनाना है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "जो सिर साटे हरि मिले तो तेहि लीजे दौरि ।" अर्थात अगर तेरे स्वंय के सिर भेंट करने से ही केवल तुझे "हर" यानी के प्रभु मिलता है तो "दौड़" यानी के जल्दी कर ये बहुत सस्ता सौदा मिल रहा है तुझे देरी करने से यदि मिलने वाले का भाव बदल गया तो फिर तू क्या करेगा इस मुर्दे विशेष अथवा सिर को रख करके ? क्योंकि ये सिर भी तो केवल उसी "अकाल पुरख परमात्मा" का ही तो दिया हुआ है । तेरा अपना क्या है जो तू संभालता फिर रहा है ? जिसकी अमानत है उसे "मालिक" को लौटा देने में भला तेरा क्या जाता है घर से जो तू फिक्र विशेष में ही लगा हुआ है अभी तक इस अमानत को लौटा कर तू देने वाले को ही ठग अथवा लूट लेगा निश्चित रूप से ! इस भेद विशेष को किसी से मत कहियो नहीं तो सभी "प्रभु" को लूटने लग जायेंगे और कहीं नतीजा "प्रभु" दिवालिया ही न घोषित कर दिया जाये और फिर स्वंय को कायम रखने हेतू "प्रभु" को अपने भाव विशेष बढ़ाने के लिये मजबूर

होना पड़े । भाई प्रतिस्पर्धा का जमाना है क्या किया जाये स्वंय को कायम अथवा स्थिर रखना कोई आसान थोड़े ही है । पर औरत का क्या करेगा उसे तो बदहजमी की बीमारी मिली हुई है "धर्मराज युधिष्ठिर" से उसके पेट में तो कोई बात हज्म होती ही नहीं बेचारी को विद इंटरेस्ट उगलनी ही पड़ती है निश्चित रूप से । इसलिये औरत से विशेष रूप से सावधान रहियो निश्चित रूप से । एक बार इसे पता चल गया तो भाई फिर सभी मुहल्ले की औरत जात सिर हाथ पर धरे "प्रभु दरबार" में लाईन में ही खड़ी मिलेगी और तुझे कच्ची-पक्की स्वंय ही पका कर के खानी पड़ेगी निश्चित रूप से लिल्ले-लिलियों का बन्दोबस्त और करना पड़ेगा पल्ले से इंटरेस्ट के रूप में । जब तुझे सावधान किया था तू तलवार पकड़े खोते (गधे) पर चढ़ा बैठा था स्वंय को सूरमा विशेष साबित करता हुआ बड़ा प्रसन्न था कि भाग जा अभी भी मौका है बचने का, तब तूने सोचा कि हमें ईर्ष्या हो रही है तेरी इस महान दुर्लभ उपलब्धि विशेष से इसलिये शायद ये स्वंय ही हज्म कर जाना चाहते हैं मुझे इस मीठी सी लेकिन गले में निश्चित रूप से अटक जाने वाली उपलब्धि विशेष से दूर करके पर अब तुझे अवश्य यकीन आ गया होगा कि किस का कल्याण था तेरे भागने से ? पर अब क्या हो सकता है भाई अब तो गले में प्यारी-2 नर्म-नर्म सी बाँहों की घंटी बंध ही गई है बजाता रह फिर दिन रात केवल स्वंय को ही निश्चित रूप से डुबोने के हेतू यकीनी तौर पर

। फिर केवल तूने स्वंय ही तो ये प्यारी सी दुर्लभ घंटी विशेष बांधी है स्वंय के ही हाथों अपनी ही प्यारी सी सुराईदार गर्दन विशेष में ! उस वक्त तो बहुत उतावला हो रहा था जब वर माला पड़ने वाली थी । बहुत जल्दी थी तुझे शायद इसीलिये तूने फट से अपना "लाल किला विशेष" झुका दिया था "बेगम ताजमहल" के आगे कि कहीं कोई और दूसरी गर्दन बीच में न आ जाये और माला बेगम ताजमहल की कोई दूसरी गर्दन विशेष ही न लूट करके ले जाये और तुझे शर्मिंदा होना पड़े समस्त बारातियों विशेष के आगे और बैरंग ही लौटना पड़े अपने "दीवाने खास" में दुर्लभ बारातियों सहित मायूस हो करके निश्चित रूप से । पर अब तुझे अवश्य पता चल गया होगा कि कौन सी माला विशेष थी ये "खुशबूदार" ! इस विशेष मीठी सी सुगंधित माला से केवल मौत नाम की ही खुशबू विशेष आती है निरन्तर जो तेरी दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म को दिन रात हज्म करती चली जा रही है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । अब तुझे अवश्य समझ आ गई होगी कि ये "गन्धित मीठी सी माला" विशेष केवल "फांसी" का फंदा विशेष ही है "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का डाला हुआ जो निरन्तर तेरी प्यारी सी सुराईदार गर्दन विशेष पर सख्त होता चला जा रहा है निश्चित रूप से । वो मुश्किल की घड़ी दूर नहीं है लगातार तेरे सिर पर सवार है तुझे हज्म करने के लिये जिससे तू बचना चाहता है । अभी भी

मौका है केवल स्वंय को हलाल करने का जब तक प्राण बाकी हैं निश्चित रूप से स्वंय को "प्रभु" के आगे भेंट कर दे नहीं तो "शैतानी ताकतें" तो तुझे हज्म कर ही जायेंगी निश्चित रूप से यकीनी तौर पर बिना अवसर खोये । "अजहू कछ बिगरिओ नहीं जो प्रभ गुन गावै । कह नानक तिह भजन ते निरभै पद पावै ।" केवल मौत की आखिरी मुश्किल की घड़ी के प्रत्यक्ष होने से पहले ही अपना बन्दोबस्त कर ले निश्चित रूप से वर्ना बहुत दुख उठाने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में अवश्य आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार !

तीजा "खैर खुदाई" अर्थात सृष्टि की सलामती मांग "प्रभु" से । यदि कुछ पलों के लिये ही हवा का अभाव हो जाये तो तेरे इस "दुर्लभ प्लैनेट" रूपी शमशान भूमि में भला कौन उपलब्ध होगा तेरे महान-2 आविष्कारों को देखने के लिये तेरे सहित ? इसलिये पल-2 केवल उस "परम चेतन सत्ता" का ही "शुक्र गुजार" हो निश्चित रूप से । जिसे भुलाने के बावजूद उसने तुझे कायम रखा हुआ है अर्थात केवल तू स्वंय प्रत्येक पल उस "अकाल पुरख परमात्मा" की "नजर विशेष" में निश्चित ही है यानी के उसने अब तक तेरे अनन्त अपराधों के बावजूद तुझे कभी भी किसी भी काल में भुलाने का अपराध नहीं कमाया "अकाल पुरख परमात्मा" ने निश्चित रूप से । उसने केवल तुझे निरन्तर याद रखा हुआ है अपना निजी अंश विशेष होने के ही

कारण यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में उस प्रभु को याद रखने में केवल तेरे स्वंय का ही "निजी कल्याण" निहित है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ।

"चौथी नीयत रास मन" अर्थात शरीर के साथ मन की पवित्रता भी आवश्यक है निश्चित रूप से । क्योंकि यही मन "शैतानी ताकतों" का दुर्लभ अंश विशेष ही है निश्चित रूप से । जो आत्मा को उल्टे धन्धों विशेष में लगाये रखता है निरन्तर फँसाने के लिये निश्चित रूप से । और फिर यही दरबार विशेष में गवाही भी देता है आत्मा के खिलाफ यकीनी तौर पर "मन थों लेखा मंगिऐ जिन कीता वापार । "खाणा-पीणा पैनणा मन की खुशी खुआर ।" अर्थात आप इसे केवल "शैतानी ताकतों" के अंश यानी के मन को प्रसन्न करने में ही लगे हुऐ हो दिन रात केवल अपनी "दुर्लभ हस्ती" विशेष मनुष्य के जन्म को खर्च करते हुऐ केवल अपने "दुर्लभ आवश्यक मकसद विशेष" से स्वंय को दूर ले जाने के लिये ही निश्चित रूप से । उस प्रमाद विशेष का बहुत बड़ा जुर्माना अवश्य आपको देने के लिये मजबूर होना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । "खुआर" के रूप में अर्थात आत्मा को बार-2 जन्म-मरन का दुख भुगतना ही पड़ेगा निश्चित रूप से अनन्त काल तक के लिये । जैसे "आत्मा विशेष" बहुत व्यस्त है क्यों भाई किस दुर्लभ कार्य विशेष में बहुत "विज़ी" (व्यस्त) है ? खोज

विशेष हुई तो पता चला कि नर्म-2-गर्म-2 कुछ विदेशी मीठे से खास-2 मेहमानों के साथ "शॉपिंग" विशेष में व्यस्त है । अन्दर के बहुत छोटे-2 से वस्त्रों विशेष को खरीदने में अपने नहीं केवल नर्म-2-गर्म-2 से मेहमानों विशेष के केवल इनकी दुर्लभ विशेष-2 प्रसन्नता को उपलब्ध करवाने के हेतू केवल स्वंय के "दुर्लभ मनुष्य के जन्म" को खर्च करते अथवा (इन बहुत छोटे-2 से पारदर्शी वस्त्रों में) डुबोते हुऐ निश्चित रूप से कौन करवा रहा है ये सब विशेष ! केवल आपका प्यारा सा खसम विशेष यानी के "मन" अर्थात "दुर्लभ सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें !" इस "प्रमाद" विशेष का हिसाब भी केवल यही "शैतानी ताकतें" ही लेंगी और देना भी केवल तुझे ही पड़ेगा अर्थात प्यारी सी आत्मा विशेष को ही देने के लिये अवश्य मजबूर कर ही देंगी यही "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें ।" मुखौटा लगा रखा है "मोमन अथवा शिष्य" विशेष का ! लगभग ऐसे ही व्यर्थ के धन्धों विशेष में आत्मा अपनी "दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म" को केवल स्वंय के ही हाथों से पूरी तरह से डुबोती चली जा रही है निरन्तर निश्चित रूप से । केवल घोर-2 दुखों को भुगतने का ही बन्दोबस्त कर रही है मूर्ख आत्मा विशेष अनन्त काल से ये "शैतानी ताकत" मन अपनी नहीं केवल दूसरों की निजी संपत्ति विशेष को ही टटोलता अथवा मुआयना करता रहता है निश्चित रूप से दूसरे के निजी विशेष सुरक्षित दायरे में भी सूक्ष्मता से प्रवेश करके प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

जिसका नतीजा केवल घोर-2 नरक भुगतना ही है निश्चित रूप से । "निमख काम स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावह ।" यदि पलक झपकने अर्थात निमख घड़ी की कामना विशेष का फल एक करोड़ दिनों का नरक भुगतना है निश्चित रूप से तो फिर जिस आत्मा विशेष के मन का पेशा ही केवल दूसरे की "दुर्लभ गुप्त" विशेष-2 सुरक्षित संपत्ति को ही हज्म कर लेने का है फिर भला उस आत्मा विशेष के लिये उपलब्ध होने वाले घोर-2 दुखों विशेष को भला किस कलम अथवा लफज विशेष से ब्यान किया जा सकता है । अर्थात ऐसी आत्मा विशेष केवल अपने ही हाथों अपने स्वंय का ही गला दबा रही है आत्मिक मौत मरने के हेतू निश्चित रूप से । केवल स्वंय को ही खून के आँसू रूलाने के लिये अनन्त काल तक के वास्ते । "घरी मुहूर्त रस माण्डेय फिर बहुर-बहुर पछुतावहि ।"

"शैतानी ताकत तथा परमात्मा" दोनों को प्रसन्न अथवा संतुष्ट रखने में प्रत्येक आत्मा प्रत्येक काल विशेष में केवल असमर्थ ही है निश्चित रूप से । दोनों में से एक विशेष को अवश्य रूठने के लिये मजबूर कर ही देगी प्रत्येक आत्मा विशेष केवल दूसरे विशेष को प्रसन्न अथवा संतुष्ट रखने के हेतू यकीनी तौर पर प्रत्येक विशेष काल में निश्चित रूप से । अब किसे प्रसन्न रखना अथवा संतुष्ट करना अधिक आवश्यक है ? केवल आत्मा विशेष के "निज कल्याण" के हेतू "शैतानी ताकत अथवा

परमात्मा" में से यह केवल प्रत्येक आत्मा विशेष का अपना निजी व्यवसाय अथवा फैसला ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "शैतानी ताकतों" ने अपने मुल्कों विशेषों में असल खेल की नकल रूबरू प्रत्यक्ष उपलब्ध की है, सुर तथा असुर वृति विशेष के जरिये आत्मा को भ्रमाने के लिये । इन दोनों पक्षों को आपस में भिड़ाते रहो तथा अपने कार्य विशेष को सिद्ध करते रहो चुपके से । अपने पास "शैतानी ताकत" को असुर वृति की आत्माओं विशेषों के जरिये प्रत्यक्ष किया जाता है । तथा सुर वृति की आत्माओं विशेषों के पीछे असल परमात्मा की नकल बन कर स्वंय को प्रस्तुत किया जाता है । दोनों पक्ष विशेषों की आत्माओं का अन्त केवल इन्हीं तीनों मुल्कों का कोई विशेष कोना ही है निश्चित रूप से । सुर वृति की आत्माओं विशेषों को कुछ महत के विशेष भण्डारों का मालिक घोषित किया जाता है, जब इन विशेष आत्माओं को ये उपलब्धी "अकथ अथवा विशेष" करने पर ही केवल उपलब्ध होती है तब फिर ये आत्मा विशेष आपको अपने भण्डारों में से कुछ भी बिना तप अथवा पुरुषार्थ विशेष किये कैसे तथा क्यों कर देगी निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ? फिर इन आत्मा विशेषों को भी अपने को ऊपर के मण्डलों में स्थिर रखने के लिये निरन्तर तप विशेष अर्थात "प्रभु" का ध्यान विशेष करना ही पड़ता है अवश्य आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इस तप विशेष के अभाव में आत्मा विशेष को ऊपर के मण्डल विशेष

को छोड़ने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा तथा फिर से इस शमशान भूमि में मसाणों विशेषों से स्नान विशेष-2 करने के लिये झख विशेष-2 मारनी ही पड़ेगी दीर्घ काल के लिये निश्चित रूप से । इसीलिये आत्मा विशेष केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये ही निरन्तर "प्रभु" के ध्यान विशेष में मग्न ही रहती है निश्चित रूप से । कोई भी आत्मा विशेष निचले मण्डलों विशेषों में रहना क्यों कर पसन्द करेगी ? "शैतानी परमात्मा" का यही सबसे बड़ा आखिरी लोभ से भरा भण्डार विशेष अथवा मुक्ति विशेष ही है । ज्यादातर तपस्वी श्रेणी की आत्मायें विशेष इसी भण्डार विशेष तक ही सीमित हैं । तथा स्वंय को परमात्मा स्थापित करवा कर पूजा करवाने में ही संतुष्ट रहती हैं । "शैतानी पक्ष" इतना "गोपनीय" विशेष रहता है इन आत्मा विशेषों के लिये भी कि कुछ भी विचार ही उत्पन्न नहीं होता इन की चालाकियों विशेषों का निश्चित रूप से । सभी आत्मा विशेष "असल प्रभु" का ही धन्धा विशेष समझती हुई मग्न हैं यकीनी तौर पर । "शैतानी पक्ष" ठीक इस तरह से कार्य विशेष करता है नकली खेल विशेष में भी विघ्न विशेष के रूप में जैसे कि असल खेल में विशेष रूप से विघ्न प्रस्तुत किये जाते हैं लगातार बिना रूके सभी कर्मों विशेषों का पूरा-2 भुगतान विशेष हो जाने पर ही केवल "शैतानी पक्ष" विशेष से शैतानी मुल्कों में कुछ विशेष उपलब्ध किया जाता है आत्मा विशेष के लिये । जिससे "खेल असल" में "नकली खेल" की

सत्यता भी प्रमाणित होती ही रहती है तथा आत्मा विशेष "असल प्रभु" का कुछ ख्याल ही नहीं कर पाती फिर साधारण आत्मा का क्या विचार किया जाये ? कोई-2 आत्मा विशेष बहुत व्यस्त हैं विशेष-2 स्थानों को सजाने अथवा स्वंय को डुबाने या लुटाने में निश्चित रूप से । इन दुर्लभ-2 स्थानों विशेष की महान उपलब्धी ही दुर्लभ आत्मा विशेष ही है प्यारी-2 सी निश्चित रूप से । और दूसरी बहुत सी आत्माओं को निर्वस्त्र करने में "दुर्लभ मददगार" निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । जिन महाराजों विशेष-2 की ये दुर्लभ प्यारियाँ उपासक हैं उनके दुर्लभ-2 कारनामों विशेषों को व्यक्त करने के लिये इस दुर्बल सी कलम में समर्था ही नहीं है निश्चित रूप से । बस इतने से ही समझ लो कि ये दुर्लभ उपासना केवल बाधा रहित सम्पन्न होनी ही सम्भंव है निश्चित रूप से । विशेष आसन अथवा पदार्थ की सिद्धि प्राप्त कर लेने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष को ही ये "दुर्लभ विशेष महाराज जी" अपनी निजी उपासना सिखाते हैं एकांत में अलग से समय का दुर्लभ दान विशेष दे करके । अर्थात ऐसी दुर्लभ नर्म-2 प्यारी-2 आत्मा विशेष ही प्रवेश प्राप्त करने का "दुर्लभ प्रमाण पत्र" उपलब्ध करवाने में समर्थ हो पाती है निश्चित रूप से अकथ अभ्यास रूपी "सिद्धि विशेष" को प्रत्यक्ष कर लेने के उपरान्त ही केवल ये असंभव जैसा कार्य विशेष सम्भव नाम के लफ्ज का मुँह विशेष देखने में समर्थ हो सकता है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । फिर तो प्यारी सी

आत्मा विशेष सूर्य चढ़े की उपासना में बैठी-2 अगले दिन ढले तक लौट आये तो गनीमत जानों । क्योंकि अब तो विशेष रूप से "सुरत चढ़ती" है दुर्लभ महाराज जी की विशेष "दुर्लभ कृपा" विशेष से । इस "दुर्लभ सुरत चढ़ी" में कई-2 दिन कईयों की डुबकियाँ लगती हैं इस घोर विशेष उपासना में निश्चित रूप से । बस अब ये मत कह देना लोभ में आकर के कि अभी तुरन्त हमें भी इन दुर्लभ-2 महाराजों का उपासक विशेष बनवा दो और अभी तुरन्त इस उपासना विशेष को सभी के सामने प्रत्यक्ष करवा दो । तो भाई इस के लिये आपको भी प्यारी सी दुर्लभ आत्मा विशेष की बाँह ही थामनी होगी निश्चित रूप से जान लो । ये तो केवल दुर्लभ-2 महाराजों विशेष का दुर्लभ करिश्मा ही है निश्चित रूप से केवल डूबने हेतू अनन्त काल तक के लिये । फिर आपके पास भी कुछ ट्रांसफर करने के हेतू कुछ विशेष "दुर्लभ गुप्त संपत्ति" भी अवश्य होनी ही चाहिये निश्चित रूप से । वरना आप को कैसे ये "दुर्लभ दान" विशेष दिया ही जा सकता है ? केवल फोकट में ही आप माला माल हो जाना चाहते हो । माला डी की माला गले में बांध कर ही सिर्फ कैसे "दुर्लभ महाराज जी" को उल्लू बनाने में समर्थ हो सकेगी तू प्यारी सी आत्मा विशेष ! शक हो तो जरा सा अन्दर झाँक कर के देख लियो । ज्यादा देर तक मत झाँकियो वरना तू भी फिर वही दुर्लभ महाराज जी की हो ही जायेगी निश्चित रूप से प्यारी सी । जरा उस "उल्लू विशेष" का भी तो ख्याल कर

बेचारा तेरे बिना तो वो वैसे ही अन्धा सा होता है सूर्य चढ़े होने के बावजूद भी ! फिर इन छोटे-2 से मासूम लिल्लो-पिल्लों का क्या बनेगा ? कौन देखेगा इन्हें तू तो "दुर्लभ उपासना" विशेष में ही डूब जायेगी सदा के लिये आँख मूंद करके घोर-2 पार्कों की सैर विशेष करने के हेतू निश्चित रूप से । ऐसे "दुर्लभ उल्लुओं" विशेषों का क्या इलाज है कि अन्दर दुर्लभ "गोसाईं जी" महाराज नयी ब्याहता को "दुर्लभ उपासना" विशेष सिखाने का "दुर्लभ दान" विशेष देने में व्यस्त हैं तथा बाहर "उल्लुओं के प्रधान" स्वंय को घोर भाग्यशाली समझते हुऐ केवल दुर्लभ महाराज जी की उच्छिष्ट चाटने के लिये बेताबी से इंतजार कर रहे हैं निश्चित रूप से । इन दुर्लभ उल्लू जी महाराज का नियम है कि हर उपलब्धी को पहले दुर्लभ "गो-साईं जी" महाराज भोग लगावें फिर झूठ को प्रसाद के रूप में ग्रहण कर अपने को पूर्ण मुक्त समझना । आखिर दुर्लभ गो-साईं जी महाराज परमात्मा जो ठहरे । पीढ़ी दर पीढ़ी केवल यही दुर्लभ उपासना सीखी तथा सिखायी जा रही है निश्चित रूप से । तेरे भाग्य में ये दुर्लभ उपासना का उपलब्ध होना नहीं लिखा है प्यारी सी आत्मा विशेष तू मान जा, इस दुर्लभ उपासना की वासना अपने अन्दर से निकाल दे । ये दुर्लभ उपासना केवल पेशेवर खानदानी महाराजों के यहाँ ही उपलब्ध होती है जो कि सुगन्धित तख्तों अथवा गद्दों विशेष पर सुशोभित होते हैं निश्चित रूप से परमात्मा बन कर ! तेरे पास अपने बैठने को तो तख्ती भी

नहीं है फिर तू कैसे इन दुर्लभ-2 पातशाहों विशेषों को बिना तख्त अथवा उपलब्धी विशेषों के लुभा लेगी ? फिर बिना लोभ ये कैसे तुझे ये चमत्कार विशेष अर्थात दुर्लभ उपासना का अधिकारी विशेष ही बना देगें निश्चित रूप से । ये उपासना है ही दुर्लभ । पूरे-2 परिवार विशेष-2 सूर्य ढले पर एकत्र होते हैं फिर "दुर्लभ महाराज जी" को सोम रस का दुर्लभ भोग लगाया जाता है फिर उच्छिष्ट को सभी परिवार जन पेट भरकर ग्रहण करते हैं बिना किसी भी वस्त्र इत्यादि बाधा विशेष के तथा कुंभ में हाथ डाला जाता है तथा जिसके हाथ जिस का छोटा सा वस्त्र विशेष उपलब्ध होता है शेष रात्रि को शुभ बनाने हेतू दोनों "दुर्लभ प्राणी" विशेष "दुर्लभ उपासना" में ही डूब जाते हैं तथा सूर्य चढ़े पर फिर से "मर्यादित परिवार" वाले बाप बेटी या भाई बहन अथवा माँ बेटा बन कर के सूर्य की तरह से "दुर्लभ धर्मात्मा" बन कर के प्रत्यक्ष रोशन हो जाते हैं फिर से पूरे मानव समाज को न खत्म होने वाली अमावस रूपी अन्धकार में पूरी तरह से डुबोने का निश्चित साधन बन कर के निश्चित रूप से । बस प्यारी आत्मा और कुछ मत पूछ तू केवल इस "एक व्यक्त लफज" विशेष से ही इन "दुर्लभ महाराज" रूपी परमात्माओं की "दुर्लभ उपासना" रूपी कारनामों विशेष-2 का अन्दाज लगा ले और सदा के लिये गाँठ बाँध ले इनसे हाथ धोने का निश्चित रूप से यदि लिल्लो-पिल्लो के पेट का कुछ भी ख्याल है तो तू इन मासूमों के पेट पर लात मारने

का अपराध मत कमा । कितना भी प्रोडक्शन बढ़ा ले तेरी डेरी विशेष की सप्लाई अवश्य इन दुर्लभ-2 महराजों रूपी परमात्माओं के यहाँ अवश्य थुड़ (कम हो) ही जायेगी फिर मासूमों को भला क्या उपलब्ध करवा सकेगी तू निश्चित रूप से बेचारे केवल भूखे ही मर जायेगें यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । यह सभी दुर्लभ-2 कारनामों का प्रेरणा स्त्रोत आत्मा के लिये केवल दुर्लभ प्यारा सा मन विशेष अथवा "शैतानी ताकतें" ही हैं निश्चित रूप से । मन के पास कोई ताकत नहीं है जो ये कुछ कर सके, यह अमर बेल की तरह से आत्मा के साथ महाभूत बन करके चिपटा हुआ है तथा आत्मा की ताकत से ही केवल कार्य करने में समर्थ है निश्चित रूप से ऊर्जा का स्त्रोत मन का केवल आत्मा ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर इसलिये आत्मा को प्रत्येक किये गये का भुगतान देने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से । आत्मा को विचारने के लिये बुद्धि दी गई है अतः प्रत्येक कार्य को अन्जाम देने से पहले उसको इससे उपलब्ध होने वाले फल विशेष पर अवश्य निश्चित रूप से विचार कर ही लेना चाहिये क्योंकि कर्म फल कभी भी आंशिक रूप से बदलने में अकथ प्रयत्नों के बावजूद भी आत्मा केवल असमर्थ ही साबित होगी निश्चित रूप से प्रत्येक काल में जवाब अनन्त निकृष्ट भोगी जूनें विशेष रूप से प्रत्यक्ष ही हैं केवल भुगतान अथवा जुर्माने के रूप में सभी प्राणियों में एक सी ही आत्मायें प्रत्यक्ष हैं एक सी ही

ताकत को उपलब्ध किये हुऐ निश्चित रूप से । एक आत्मा विशेष दूसरी आत्मा विशेष का कुछ भी अहित करने अथवा उस में कुछ जमा घटा करने में प्रत्येक काल में किसी भी उपाय विशेष से पूर्ण तौर पर असमर्थ ही है निश्चित रूप से । ना तो ये एक आत्मा दूसरी और आत्मा को प्रत्यक्ष अथवा पैदा कर सकती है और ना ही कभी दूसरी आत्मा को पहले वाली आत्मा हज्म ही कर सकती है निश्चित रूप से । ना ही एक आत्मा का दूसरी आत्मा से कुछ मोह ही है निश्चित रूप से । सभी आत्मायें प्रकाश का अंश केवल प्रकाश ही हैं निश्चित रूप से । फिर सभी प्रकाश के अंश केवल एक से प्रकाश जैसे ही हैं निश्चित रूप से। इन आत्माओं में कुछ भी लिंग भेद इत्यादि कुछ भी विचार ही नही हैं निश्चित रूप से । जब इन पर वस्त्र अथवा आवरण यानी के शरीर रूपी पिंजरा या कब्र चढ़ा अथवा मढ़ दिया जाता है तब यह दुर्लभ आत्मा विशेष स्त्री अथवा पुरूष हो जाती है या शेष जूनों के रूप में प्रत्यक्ष होने लगती हैं निश्चित रूप से । तभी इसमें इन शरीरों अथवा मुर्दो विशेष के प्रति मोह अथवा ममता जागती है निश्चित रूप से तथा इस मोह रूपी वासनाओं के कारण इसे यहाँ पर रूकने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से । फिर एक आत्मा अपनी किसी निकृष्ट वासना के कारण जब किसी निचली जून में गिर अथवा चली जाती है तो फिर दूसरी आत्मायें विशेष जो मनुष्य जन्म रूपी ऊँचे स्थान विशेष में

स्थापित हैं, केवल उस आत्मा के मोह के ही कारण स्वंय के ऊँचे पद मनुष्य के जन्म से गिर कर के वहाँ निचली जूनों विशेषों में पहुँचा दी जाती हैं जहाँ कि पहली आत्मा अपनी निकृष्ट वासना के कारण गिर कर के पहुँच गई थी । इसीलिये कहा है कि "पुत्र-कलत्र मोह सभ बिख है अन्त को बेली नाही ।" अर्थात मोह रूपी पुत्र-स्त्री इत्यादि पदार्थो से "बड़ा जहर" इस दुनिया में कोई नहीं अर्थात दुर्लभ ही है निश्चित रूप से । इस "भयानक मोह" रूपी "विष विशेष" के आगे और सभी प्रकार के जहर फीके से हैं यकीनी तौर पर । आत्मा इसी "मोह रूपी मीठे से विष" विशेष को जिन्दगी भर चाटती रहती है तथा अन्त में ये मीठा सा विष विशेष पूरी तरह से आत्मा विशेष को ही "हज्म" कर जाता है । फिर ये दुर्लभ मीठा सा ही जहर विशेष कैसे इसका मददगार साबित हो सकता है निश्चित रूप से "अन्त" की मुश्किल की घड़ी विशेष में ? इसीलिये "सच्चे परमार्थी अथवा मोमन" को ताकीद किया जाता है कि कुछ भी करने से पहले खूब सोच विचार ले, फल केवल तुझे ही भुगतना है तथा तेरा सच्चा मददगार प्रत्येक काल में केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले !

"पंजवा सिफत सनाई" अर्थात एक "अकाल पुरख परमात्मा" का शुक्र गुजार होना प्रत्येक काल विशेष में निश्चित रूप से । उस प्रभु की "दया विशेष" के अभाव में कुछ भी उपलब्ध

अथवा प्रत्यक्ष होना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । ऐसा व्यवहारिक भाव विशेष को धारण करना ही केवल तेरी पांचवी नमाज विशेष है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "करणी कलमा आख के ता मुसलमान सदाई ।" अर्थात ऐसी भाव भरी "करणी" विशेष रूपी पाँच नमाजे व्यवहारिक रूप से पढ़ते हुऐ दुर्लभ "परम चेतन सत्ता" अथवा "कलमें" विशेष को अपने शरीर में ही प्रत्यक्ष अनुभव करने के बाद ही केवल तू अपने को सच्चा दुर्लभ मोमन अथवा शिष्य या मुरीद रूपी मुसलमान कहलाने का अधिकारी है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

"भट नमाजा" "चिक्कड़ रोजे" अर्थात किसी को "भट्टी विशेष" में जलने का दुर्लभ शौंक विशेष हो तो नमाजों को पढ़ने का धंधा अपना लेवे कहीं जाने परेशान होने की कुछ आवश्यकता ही नहीं है । बिना ईंधन की "घोर भयानक भट्टी" विशेष घर में ही प्रत्यक्ष अनुभव हो जायेगी निश्चित रूप से । जिसमें आप का दुर्लभ मनुष्य का जन्म अवश्य जल कर खाक हो ही जायेगा निश्चित रूप से । अमल से रहित केवल पढ़ने अथवा रटने का धन्धा विशेष करने वाले सिर्फ "नमाज" लफज की जगह विशेष पर केवल "श्री गुरू ग्रन्थ साहिब" जी महाराज लिख लो

शेष अर्थ अपने आप प्रत्यक्ष हो जायेंगे निश्चित रूप से बिना ईंधन की भट्टी विशेष के रूप में स्वाभाविक रूप से अपने आप यकीनी तौर पर केवल पढ़ने का इससे बढ़िया फल विशेष "प्रभु" के "दरबारे खास" से भला और क्या उपलब्ध हो सकता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "पड़ीअह जेते बरस बरस-पड़िअह जेते मास । पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअह जेते सास । नानक लेखे "इक गल" होर हऊमै झखणा झाख ।" अर्थात बरसों पढ़-महीनों पढ़ फिर जितनी उम्र है पढ़ता रह जितने सास है केवल पढ़ता रह । नतीजा यदि "इक गल" नहीं बनी अर्थात आत्मा ने "परम चेतन सत्ता" को प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया तो तेरा ये जिन्दगी भर स्वास-2 केवल पढ़ने का ग्रन्थों विशेष को केवल "झख" मारने वाला कार्य ही है निश्चित रूप से क्योंकि तू हउमै अर्थात "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के हवाले ही कर दिया जायेगा निश्चित रूप से । तेरी इस की गई महान-2 केवल पढ़ने रटने की क्रिया के प्रतिफल के रूप में यकीनी तौर पर केवल यही नतीजा निकल चुका है गाँठ बाँध ले बस प्रत्यक्ष होना बाकी है । मनुष्य जन्म केवल "प्रभु" को प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिये ही उपलब्ध हुआ है निश्चित रूप से फिर "शैतानी ताकतों" का मुँह देखना भुगतना पड़े इससे बढ़िया झख मारना भला और क्या हो सकता है आत्मा विशेष के लिये ! आत्मा विशेष की इस महान दुर्लभ उपलब्धी विशेष के आगे ये "झख" लफज ही काफी छोटा पड़ जाता है

निश्चित रूप से । अब जिन्हें केवल सुनने की महामारी विशेष लगी हुई है केवल पढ़ने लफज की जगह सत्संग सुनना लगा लो शेष दुर्लभ भट्टी बिना ईंधन की अपने आप बिना लागत के घर पर ही उपलब्ध हो जायेगी केवल आप के ही नहीं सभी कुल परिवार के दुर्लभ-2 मनुष्य के जन्मों विशेष को पूरी तरह से हज्म अथवा स्वाहा करने के लिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "सत्संग सुनिऐ बरस बरस-सत्संग सुनिये मास । सत्संग सुनिये जेती आरजा, सत्संग सुनिये जेते सास । "प्रभु" लेखे "इक गल" होर हउमै झखणा झाख ।" "मुक्ति" केवल व्यवहारिक रूप से पढ़े-सुने के "अमल विशेष" में ही पूरी तरह से निहित है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । पढ़ना-सुनना व्यवहार करने की क्रिया का केवल एक आवश्यक अंग मात्र है । केवल एक रोम से पूरे शरीर की समर्था का कार्य कैसे सिद्ध कर लोगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ? "पढ़ना-लिखना-(सुनना) चातुरी इह तो बात सहल ।" अर्थात पढ़ना लिखना सुनना केवल "शैतानी ताकतों" की एक दुर्लभ कला विशेष अथवा चातुरी ही है निश्चित रूप से आत्मा को फँसाने का एक मीठा सा जाल "अथवा फंदा मात्र ।" "काम दहन" अर्थात आत्मा विशेष पर चढ़े हुऐ कामनाओं रूपी वस्त्र विशेष को उतारना या जलाना "मन बस करन" यानी के "मन अर्थात शैतानी ताकतों" के फंदे से स्वंय को मुक्त करवाना "गगन चढ़न मुश्किल" अर्थात इस कब्र रूपी शरीर विशेष को जीत कर "शैतानी

ताक़तों" के मुँह पर थूक कर अपने "निज घर" विशेष पर पहुँचना केवल जीते जी ही अथवा गगन चढ़ना केवल असंभव जैसा मुश्किल ही है परन्तु "प्रभु" की "दया विशेष" से अवश्य संभव हो ही जाता है निश्चित रूप से मुश्किल जैसा असम्भव कार्य भी यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । आसान कार्य आत्मा को करना अच्छा लगता है पर मुश्किल कार्य को करना तो दूर रहा उसे देखना सुनना भी पसन्द ही नहीं करती आत्मा, इसी कारण विशेष से ये डूबती है शैतानी जाल अथवा फंदे विशेष में निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर !

"चिक्कड़ रोजे" अर्थात यदि कोई आत्मा कीचड़ विशेष प्रकार में नहाना चाहती है तो उसे रोजे धरने वाला धन्धा विशेष अपना लेना चाहिये । एक बार इस रोजे अथवा उपवास या व्रत विशेष का व्यवसाय अपना लेने के बाद आप को आनन्द का "स्वयं के सर्वश्रेष्ठ समझने का" ऐसा दुर्लभ चस्का अथवा स्वाद विशेष लग जायेगा कि फिर शेष जिन्दगी भर बार-2 आप को केवल इसी "दुर्लभ सुगंधित कीचड़" में ही नहाना विशेष तौर पर अच्छा लगेगा निश्चित रूप से । अपने साथ फिर और आत्माओं को भी इसी "सुगंधित कीचड़" विशेष में नहलाने वाले आप दुर्लभ बिना दुम के दो पैरों वाले "पातशाह" विशेष ही बन जाओगे निश्चित रूप से । इस सुगंधित कीचड़ में नहाने के लिये कहीं

जाने की आवश्यकता ही नहीं, यह दुर्लभ कीचड़ का स्नान आपको स्वंय के घर पर ही उपलब्ध हो जायेगा, एक बार इस दुर्लभ पेशे विशेष अर्थात रोजे-उपवास को अपना लेने के बाद निश्चित रूप से । इस दुर्लभ कीचड़ के दुर्लभ स्नान विशेष से दूसरी नहीं केवल स्वंय की ही आत्मा विशेष तड़प-2 कर के नहाती है निश्चित रूप से । इस कीचड़ में आत्मा ऐसे फँसती है जैसे कोई प्राणी भयानक दलदल रूपी कीचड़ में फँसता है । एक बार फँसने के बाद प्राणी जितने जोर से बाहर निकलने की कोशिश करता है उस से दुगने वेग से प्राणी और अन्दर दलदल रूपी कीचड़ विशेष में ही केवल धँसता चला जाता है जब तक कि प्राण नही निकल जाते "दलदल" विशेष धीरे-2 प्राणी को हज्म करती चली जाती है निश्चित रूप से । इसी तरह से आप का यह "दुर्लभ कीमती मनुष्य का जन्म" यह "दुर्लभ कीमती सुगंधित कीचड़" यानी के "रोजा अथवा उपवास या व्रत" पूरी तरह से हज्म कर जाती है निश्चित रूप से । आप चाह कर के भी बचने का कोई यत्न कर ही नहीं पाते आखिर "सर्वश्रेष्ठ" जो ठहरे ! अब कैसे अपने को साधारण बतावें ? केवल यही वासना आत्मा को डुबोने का निश्चित साधन बन जाती है । यकीन जानो इस धन्धे विशेष से उपलब्ध कुछ भी नहीं होता फिर "परमात्मा" जैसा दुर्लभ पदार्थ विशेष तौर पर कैसे उपलब्ध हो सकता है निश्चित रूप से ? "दिन में रोजा रहत है रात

हनत है गाय । येहि खून बहि बन्दगी क्यों कर खुशी खुदाय ।" अर्थात केवल जुबान का स्वाद ही छुपा हुआ है इस महान धन्धे विशेष के पीछे भी निश्चित रूप से । यही हाल उपवास या व्रत रखने वाली दुर्लभ विशेष-2 आत्माओं का है निश्चित रूप से केवल तरह-2 के स्वादों की पूर्ति हेतू ही अथवा उपवास विशेष रखा जाता है । फिर जो अपने असली खसम "अकाल पुरख परमात्मा" अथवा "परम चेतन सत्ता" को भुला कर और-2 पराये पुरूषों को ही प्रसन्न करने में व्यस्त है भला उसे कैसे सुहागन कहा जा सकता है ? "सूहे वेस कामण" "कुलखणी" जो "प्रभ छोड पर पुरख धरे पिआर ।" ऐसी अपने दुर्लभ अविनाशी कुल को दाग लगाने वाली "कुलखणी" "आत्मा विशेष" केवल बाजार में "रंडी" विशेष कहलाने के योग्य ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । ऐसी दुर्लभ रंडियों ने छत्तीस खसम विशेष बना रखें हैं । दिन रात केवल इन्हीं पराये पुरूषों विशेषों को ही प्रसन्न करने में व्यस्त हैं महीने भर उपवास या व्रत रखते हुऐ । महीने में दिन तो तीस हैं फिर खसम छत्तीस बनाये बैठी भला कैसे सब की बारी विशेष आती होगी प्रसन्न होने की ? पांचाली के पाँच थे सब को दो-2 वर्ष बारी-2 से प्रसन्न करने का विशेष नियम बंधा था ! यहाँ तो छत्तीस हैं फिर कैसे चलता होगा धन्धा विशेष "रंडियों विशेष" का ? भई एक रोज में दो-2 को भुगताती हैं नियम से हर पाँच रोज बाद तभी कार्य सम्पन्न कर पाती हैं बेचारी "दुर्लभ रंडियाँ !"

भाई छत्तीस कैसे हुऐ हम ने तो कभी सुने नहीं ? तो प्यारी माई आज सुन ले कापी कलम ले कर के लिख ले ताकी तुझे भी याद रहे किस "भिखारी विशेष" से पाला पड़ा है निश्चित रूप से । इन रंडियों विशेष के चौबीस खसम तो "चौबीस अवतार" विशेष हैं जिन में घोड़ा-शेर-मछली-सुअर इत्यादि निकृष्ट भोगी जानवर विशेष शामिल हैं इन रंडियों विशेष के दुर्लभ खसमों में निश्चित रूप से । सब की मागें रहने खाने की अलग-2 ही हैं निश्चित रूप से । जैसे घोड़े को चने की दाल-गाजर इत्यादि चाहिये बेशक-बेचारा असल में घास का मोहताज ही है निश्चित रूप से जिन्दा रहने के वास्ते । वैसे तो सुअर को रहने के लिये कीचड़ तथा खाने को गंद चाहिये पर दिया है शुद्ध घी का चूरमा ! भाई धन हो "सुअर जी महाराज ।" सुना था कि हर कुत्ते के दिन बदलते हैं पर यहाँ तो सुअर के भी बदल गये दिखते हैं निश्चित रूप से काफी मोटा हाथ मारा है । अब जो औरत विशेष इन घोड़ा-सुअर-शेर इत्यादि विशेष-2 खसमों को खुश करने में व्यस्त है भला मनुष्य रूपी खसम की बारी कब आती होगी ? फिर घोड़े इत्यादि चार पैर वाले खसमों विशेषों के आगे दो पैर वाले बिना दुम के छोटे से खसम विशेष का क्या जो र! निश्चित रूप से ऐसी रंडियों विशेष के खसमों अथवा पतियों को तो अवश्य सन्यास ही ले लेना चाहिये रोज-2 शर्मिन्दा होने से तो यही अच्छा है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में ये सब धन्धे विशेष "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी

ताक़तों" के ही हैं निश्चित रूप से । पहले स्थिति को बिगाड़ो फिर शेर के रूप में सुधारों ताकी अनन्त काल तक जानवरों की पूजा होती रहे फिर डण्डा ले करके इसी पूजा का जुर्माना वसूल कर लो निश्चित रूप से। है न बढ़िया आइडिया विशेष आत्माओं को अनन्त काल तक के लिये डुबाने अथवा फँसाये रखने का "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताक़तों" का इन "शैतानी ताक़तों" के पास बहुत प्रकाश अथवा नाम की कमाई अर्थात ताक़त है अनन्त काल के "तप विशेष" की निश्चित रूप से ये "शैतानी ताक़तें" अपनी ताक़त विशेष को स्थिर रखने के लिये निरन्तर "परम चेतन सत्ता" के ध्यान में ही मग्न रहती हैं निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो कुछ बिगाड़ना तो दूर रहा आप में इन्हें देखने तक का हौसला विशेष ही नहीं है आपके दुर्लभ-2 झूठे परमात्माओं सहित निश्चित रूप से । आत्मा विशेष के छह मुख्य "देवी माँ" रूपी खसम हैं । पाँच "महाभूत" रूपी खसम हैं । बेचारे भूखे प्यासे रहते हैं तभी सवेरे पहले नहा धोकर इन्हें जल तर्पण किया जाता है । फिर इन्हें भोग लगाया जाता है । कुल हो गये पैंतीस अब बचा एक जो सब का बाप बना फिरता है हाथ में पूँछ पकड़ कर कोड़े विशेष के रूप में भाई ये पूँछ वाला सब माल विशेष तौर पर लड्डू सारे चुपके से "गप" कर जाता है निश्चित रूप से । बहुत भारी है भाई गाल फुलाकर चलता है थप-थप ! सब खसमों की पूजा विशेष में इसने "गुण्डागर्दी" से अपना हिस्सा विशेष बाँध रखा है निश्चित रूप से

इसके नाम का घंटा बजना बहुत जरूरी है निश्चित रूप से वरना पता नहीं कब तीर वाले अपने मालिक विशेष के कान भर देवे आप के खिलाफ और आप की लुटिया डूब जाये आप को साथ लिये हुऐ ही निश्चित रूप से । केवल इसे पूँछ वाले भारी से को प्रसन्न कर लो बस शेष सभी खसम अपने आप प्रसन्न हो ही जाते हैं अवश्य निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार यकीनी तौर पर । जीवन भर "ब्रह्मावर्त" में रहने वाली "जीविका" के लिये केवल जिन्दगी में एक या दो मुजरे करने वाली दुर्लभ विशेष को आप के "सभ्य समाज" में "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" द्वारा केवल स्थिति विशेष के कारण वेश्या अर्थात रंडी का खिताब उपलब्ध करवाया जाता है ! फिर ग्राहक की कौन सी कल्पना है निश्चित रूप से ? महीने के तीस दिनों में "छत्तीस खसमों" विशेष को प्रसन्न करने वाली सैंतीसवां इंतजार में है खसम विशेष कि कब मरे और मुझे आ कर के प्रसन्न करे "नित नये खसमों" विशेष की तलाश में दुर्लभ मनुष्य के जन्म को कुर्बान करने वाली "दुर्लभ रंडी" विशेष ऊँचे दर्जे की आप के इस "मर्यादित समाज" विशेष में "शैतानी ताकतों" द्वारा दुर्लभ सुहागिन विशेष के खिताब से सम्मानित की जाती है इसीलिये सभी उस रंडी विशेष के दर्शन रूपी अमृत विशेष पान कर के ही केवल अपने को मुक्त अथवा दुर्लभ भाग्यवान समझते हैं । है ना दुर्लभ विशेष वचन अमृत बांटने वाली सुहागिन रूपी रंडी विशेष निश्चित रूप से प्रत्येक काल

में ! अब क्या नतीजा निकलता है जो आत्मा "अकाल पुरख परमात्मा" अथवा "परम चेतन सत्ता" को भुला कर केवल "शैतानी अंशों" की पूजा-ध्यान-जप इत्यादि करे इन्हें प्रसन्न रखने हेतू अपनी दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म को मिटाये केवल "रंडी विशेष" कहलाने की ही अधिकारी है तथा जो कोई भी एक "रागमई प्रकाशित आवाज" को भुला कर स्वंय को परमात्मा स्थापित करे अपना ध्यान-पूजा इत्यादि करवाये केवल "कंजर विशेष" ही कहलाने का दुर्लभ अधिकारी विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

कुछ दुर्लभ रंडियो विशेष की तीस दिन में छत्तीस विशेष-2 खसमों से कुछ विशेष "तसल्ली" नहीं हो सकी इसलिये उन्होंने एक और हट्टा-कट्टा सा दाड़ी वाला विशेष खसम दुर्लभ परलोक विशेष के लिये निर्धारित कर रखा है । इन में भी अदला-बदली चलती रहती है "संतुष्ट" न कर पाने के कारण एवज रूप में विशेष रूप से निश्चित तौर पर । ऐसी दुर्लभ रंडियों विशेषों तथा कंजरों विशेषों से "सच्चे परमार्थी" को अवश्य सावधान रहना ही श्रेयस्कर है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में केवल स्वंय के "निज कल्याण" हेतू ही यकीनी तौर पर ! इस तरह के रोजे अथवा उपवास या व्रतों विशेष से "अकाल पुरख परमात्मा" की प्रसन्नता का कोई विषय ही नहीं है निश्चित रूप से । केवल "शैतानी ताकतों" का आत्मा को लुभाने तथा फँसाने का एक गहरा

भयानक महाजाल ही है निश्चित रूप से । नकली परमात्मा अथवा खसम विशेष या अवतार या प्रभु के बेटे इत्यादि के रूप में स्वंय को प्रस्तुत करना मोह जाल विशेष के रूप में केवल दुर्बल हुई आत्मा को इन्हीं मुल्कों में रोकने का एक विशेष मीठा सा दुर्लभ फंदा ही है निश्चित रूप से । "शैतानी ताकतों" विशेष का यकीनी तौर पर ! शारीरिक मर्यादा तथा इन्द्रिय बल को क्षीण करने से आगे इस धन्धे विशेष का कुछ भी अर्थ ही नहीं है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो !

"कलमे ते फिर गई सिआही" अर्थात कलमा यानी के शब्द विशेष (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) जैसे कागज पर लिखे हुऐ शब्द पर सिआही अथवा रंग विशेष गिर जाने से पढ़ना असंभव हो जाता है वैसे ही पूरी मनुष्य जाति ने उस अपने मूल अथवा आधार विशेष "परम चेतन सत्ता" यानी के कलमे अथवा शब्द विशेष को भुला दिया है निश्चित रूप से । कोई पत्थर पूज रहा है तो कोई इन्हीं के स्वरूप चाँद-सूरज को जल तर्पण कर रहा है अथवा बांध विशेष बनाने में ही व्यस्त है, वहाँ तक पहुँच जाने के लिये केवल कोई पीपल तुलसी इत्यादि वनस्पति को "प्रभु" साबित कर रहा है तो कोई जल-कुँऐं-समुद्रों में डूबा हुआ है कोई आग को पूजने में व्यस्त है तो कोई अवतारों को दुर्लभ परमात्मा बता रहा है कोई साँप-बिच्छू-शेर-सुअर-गाय इत्यादि निकृष्ट भोगी जूनों को परमात्मा साबित करने में स्वंय को श्रेष्ठ

बता रहा है कोई मूर्तियों-किताबों इत्यादि ग्रन्थों विशेष में परमात्मा को कैद करने का श्रेष्ठ धन्धा अपनाये बैठा है तो कोई पैगम्बरों विशेष में ही डूबा हुआ है तो कोई प्रभु अथवा पातशाहों विशेष के बेटों विशेष को ही परमात्मा स्थापित कर उनके ध्यान-पूजा में अपने "दुर्लभ मनुष्य के जन्म" विशेष को निरन्तर अन्धे भयानक कुँऐ में डुबोता चला जा रहा है निश्चित रूप से ! कोई हजूरों-पातशाहों-पैगम्बरों-महाराजों-महंतो-बाबों-संतो विशेष की तस्वीरों अथवा मूर्तियों में ही डूबा हुआ है निश्चित रूप से इन्हें प्रभु बेचारे का दुर्लभ पितामह ही स्थापित करते हुऐ इन्हें चाट रहा है । कलमें पर इससे बढ़िया और कौन सी स्याही अथवा रंग विशेष फेरोगे निश्चित रूप से ? अपने "दुर्लभ मनुष्य जन्म" को मिटा कर यकीनी तौर पर इन व्यर्थ के धन्धों विशेष में कोई किताबों ग्रन्थों विशेष-2 के अथवा प्रेतों (केवल बीत गयों के) विशेष-2 के जन्मदिन अथवा भण्डारे विशेष-2 मनाने में ही केवल प्रभु प्रसन्नता साबित कर रहा है तो कोई रंग तमाशा जलूस के रूप में निकालता हुआ बाजे ढोल पीट-2 कर ही केवल स्वंय को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने में लगा हुआ है । कोई "कीर्तन दरबार" में ही "प्रभु" को निश्चित रूप से कैद समझ रहा है तो कोई पहाड़ों विशेष में चक्कर लगा रहा है तो कोई नौ लाख जूनों से ठूंस-2 कर भरे हुऐ जलाशयों विशेष में डुबकी लगा कर ही स्वंय को पवित्र करने में लगा हुआ है कोई सत्संग सुनने अथवा मुर्दो विशेष दर्शनों में ही

मुक्ति गाँठ बाँध रहा है तो कोई कब्रों विशेष को रोशन करके अपने भाग्य को उज्जवल बनाने में लगा हुआ है कोई "शैतानी ताकतों" को पूज रहा है तो कोई "प्रभु" को शमशान भूमि में तलाश कर रहा है मुर्दे की मिट्टी से नहा कर कोई जानवरों को जिबह कर खून की होली खेलता है और अपने खाते में दुर्लभ कुर्बानी लिख लेता है सारा साल दुनिया की गर्दन काटता है जेब हल्की करता है तथा एक महीना रोजा रख कर केवल स्वादों के हेतू फिर पत्थर के टुकड़े को देखकर नाचता कूदता है कि मैं पवित्र हो गया और "ईद" विशेष मनाता है अपने दुर्लभ-2 पातशाहों सहित और समाज में स्वंय को दुर्लभ हलाल घोषित करता है कोई तीर्थो के दर्शन स्नान "प्रभु" को व्यस्त किऐ बैठा है तो कोई काले से पत्थर विशेष को चूम चाट कर स्वंय को "दुर्लभ महा पवित्र" घोषित कर रहा है काबा विशेष में कोई त्रिवेणी स्नान में पापों से मुक्त करने में स्वंय को व्यस्त किऐ बैठा है तो कोई अमृत सरोवर अथवा हेमकुण्ड में डुबकी लगा कर ही केवल स्वंय को "विशेष महात्मा" गुरू वाला स्थापित कर रहा है निश्चित रूप से कोई व्यास को सचखण्ड बता रहा है और वहाँ रहने वालों को भाग्यवान समझा जा रहा है तथा इन कब्रिस्तानों के महा प्रबन्धक को "परमात्मा का श्रेष्ठ बाप" स्थापित कर ध्यान पूजा की जा रही है कोई हरे रंग में प्रभु को बता रहा है तो कोई सफेद चोले पहन कर ही स्वंय को प्रभु का पिता श्री दुर्लभ स्थापित कर रहा

है निश्चित रूप से कोई किताबों अथवा ग्रन्थों विशेष को खोलने-बंद करने से ही केवल प्रभु को जगा अथवा सुला रहा है निश्चित रूप से कोई दुनिया में सब से छोटे दिन को सबसे बड़ा दिन घोषित करने में व्यस्त है बाप बेटी की मर्यादा को भंग करना ही केवल विकास का आधार प्रचारित किया जा रहा है कोई प्रभु को जेरूसलम में समझ रहा है तो कोई क्राइस्ट के निशान को चूम चाट कर पवित्र बनाने में स्वंय को व्यस्त किऐ बैठा है कोई मुर्दे सजाने में व्यस्त है कि प्रभु कियामत के रोज़ जिन्दा कर देंगे ! तो कोई सुन्नत से ही केवल प्रभु को प्रसन्न किऐ बैठा है ! तो कोई केवल लफ्ज़ विशेष को ही विशेष परमात्मा घोषित कर रहा है । ऐसी भयानक काले रंग की स्याही विशेष "शैतानी ताकतों" ने इस "दुर्लभ कलमे विशेष" पर फेर अथवा पोत दी है कि आप चाह कर के भी कैसे इस फिरी हुई स्याही विशेष से अपने को निकाल कर के "कलमे विशेष" को पढ़ने में समर्थ हो सकोगे अनन्त काल के बाद भी ? "शुद्ध रूहानी ज्ञान" की ऐसी गहरी कब्र बना दी है इन "शैतानी ताकतों" ने कि कहाँ तक खोदेगें कब तक व्यस्त रखोगे स्वंय को इस नीरस से आवश्यक कार्य विशेष में । महँगाई के इस जमाने में फिर समय किस के पास उपलब्ध है इस फालतू से आवश्यक कार्य विशेष के लिये । पूरी मनुष्य जाति अज्ञानता के भयानक अंधकार में स्वंय को पूरी तरह से डुबो चुकी है निश्चित रूप से । जिन्हें विकसित घोषित किया जा रहा है वे रूहानी ज्ञान

विशेष का केवल एक लफ्ज़ तक नहीं जानते निश्चित रूप से । अगर जानते तो क्या अपनी दुर्लभ मनुष्य के जन्म रूपी कीमती हस्ती को प्रयोगशालाओं में डुबोते, केवल एक पत्थर के टुकड़े चाँद पर रहने में स्वंय को समर्थ बनाने के लिये । आत्मा परमात्मा का "दुर्लभ कीमती अंश" है निश्चित रूप से । जो ताकत जड़ चेतन को केवल प्रत्यक्ष ही नहीं करती बल्कि निरन्तर उनमें भरपूर समायी भी रहती है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । फिर चेतन आत्मा अर्थात रूह की ताकत कम कैसे आंकी जा सकती है कभी भी सुपने में भी ? इस दुर्लभ आत्मा को अनन्त मण्डलों पर राज करने के लिये ही प्रस्तुत किया गया है । सृष्टि की प्रत्येक शह केवल रूह के लिये ही उपलब्ध की गई है । फिर इन दुर्लभ विशेष-2 इनायतों का उपभोग करने के लिये रूह को किसी प्रयोगशाला का मुँह देखने की भी आवश्यकता ही नहीं है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में इस दुर्लभ आत्मा में पूर्ण समर्था उपलब्ध है इन उपलब्धियों विशेष-2 का उपभोग करने की यकीनी तौर पर । आप दूरी को तय करने के लिये राकेट आदि बनाने में केवल स्वंय को डुबो रहे हो निश्चित रूप से जान लो कि आप में ऐसी भयानक गति विशेष निरन्तर उपलब्ध है "शब्द विशेष" की स्वाभाविक रूप से कि आप केवल अपने संकल्प मात्र से ही ग्रह की क्या कल्पना की जाये अनन्त मण्डलों के पार अपने स्वंय के निज घर विशेष में पहुँच सकते हो निश्चित रूप से बिना किसी

विघ्न बाधा के यकीनी तौर पर । प्रकाश की गति की तो कोई कल्पना ही नहीं है आप की स्वयं की समर्थ गति के सामने निश्चित रूप से । आप पाँचों महाभूतों से श्रेष्ठ तथा अभेद हो निश्चित रूप से "परम चेतन सत्ता" का अंश विशेष होने के कारण प्रत्येक काल में आपको सोचने में तो समय लग सकता है परन्तु स्वयं को प्रस्तुत करने में अनन्त मण्डलों में कहीं पर भी कुछ समय ही नहीं लगता आपको निश्चित रूप से । ऐसे समर्थ नाम (केवल रागमई प्रकाशित आवाज़) रूपी जहाज अथवा राकेट विशेष को आप सभी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से अपने साथ ही लिये फिरते हो यकीनी तौर पर । जिसे प्रयोग में लाने पर कोई ईंधन खर्च ही नहीं करना पड़ता निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । आप रहने के लिये विशेष-2 साधन अथवा आवरण बनाने में स्वयं की "कीमती दुर्लभ हस्ती" मनुष्य के जन्म को केवल डुबो रहे हो निश्चित रूप से । आप को मालूम ही नहीं कि आपको अर्थात रूह को कुछ भी साधन की आवश्यकता ही नहीं है यकीनी तौर पर "केवल शब्द विशेष" के आपकी सारी आवश्यकतायें केवल मुर्दे अर्थात शरीर यानी कि कब्र तक ही सीमित हैं । आप इसे कभी रिर्ज़व नहीं रख सकोगे निश्चित रूप से । ये निरन्तर घिसता ही रहेगा बिना रूके और आप इसे रोकने के चक्कर में अपनी कीमती हस्ती मनुष्य के जन्म को मिटाते रहोगे निश्चित रूप से । यही "शैतानी ताकतों" की गहरी मार करने वाली सूक्ष्म चाल विशेष

ही है निश्चित रूप से । आप अपनी मेहनत स्वंय को इस कब्र अथवा मुर्दे को जीतने अथवा ऊपर उठाने पर खर्च करो । एक बार इस कब्र को जीत लो फिर अपनी दुर्लभ हस्ती अथवा समर्था को देखो । आप को हैरानी होगी कि आप एक सचमुच "दुर्लभ करिश्मा" ही हो "प्रभु" का निश्चित रूप से फुरसत में बैठ कर बनाया हुआ । आपकी शुरू से ले कर अन्त तक की सभी आवश्यकताऐं केवल शरीर अथवा कब्र से जुड़ी हुई है निश्चित रूप से । आत्मा का इस कब्र से कुछ भी सम्बन्ध ही नहीं है । यह आत्मा केवल इस पिंजरे में कैद है निश्चित रूप से । जैसे परिन्दा विशेष लम्बी कैद में उड़ना भूल जाता है । वैसे ही आप अनन्त काल से तरह-2 के पिंजरों विशेष-2 में कैद रहने के कारण अपनी हस्ती दुर्लभ अथवा समर्था को भुला चुके हो यकीनी तौर पर । जैसे पंछी कैद पिंजरे से दूसरों को आजाद देखता है तो उड़ना चाहता है पर पिंजरे से स्वंय को मुक्त करवाने में केवल असमर्थ ही रहता है तथा पर फड़फड़ा कर मायूस हो जाता है । वैसे ही आप भी जब आकाश में तारों को देखते हो तो स्वाभाविक रूप से वहाँ तक पहुँचना चाहते हो पर पिंजरे में कैद पंछी की तरह से केवल पंजे ही सलाखों से रगड़ते हो और मायूस हो कर के खामोश हो जाते हो निश्चित रूप से । जैसे पंछी को आजाद होते ही अपनी हस्ती का पता चलता है उड़ने की दुर्लभ क्षमता का निश्चित रूप से, जब आत्मा भी इस शरीर रूपी पिंजरे अथवा कब्र विशेष से

स्वंय को आजाद करवा लेती है तो केवल तभी उसे अपनी दुर्लभ हस्ती विशेष का एहसास होता है निश्चित रूप से । फिर उसे किसी भी वस्तु विशेष की आवश्यकता ही नहीं रहती निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । यह आजादी नियम से भुगतान होने के पश्चात ही केवल "प्रभु" की "दया विशेष" से सम्भव होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । फिर उस आजाद आत्मा के लिये ये "अनन्त मण्डल" भी विचारणीय ही नहीं होते निश्चित रूप से । वह दुर्लभ आत्मा विशेष यहाँ आना तो दूर रहा केवल नाम तक भी यहाँ अर्थात मृत लोक का सुनना पसन्द ही नहीं करती । केवल "प्रभु रजा विशेष" में ही प्रत्यक्ष होती है केवल उसी "प्रभु" के "दरबारे खास" तक स्वंय को सीमित रखते हुऐ । जैसे कैदी लम्बी कैद से छूटने के बाद जेलखाने का नाम तक सुनना पसन्द नहीं करता वैसे ही वह दुर्लभ आत्मा विशेष भी इन "निकृष्ट भयानक पागलखानों" से केवल दूर रहना ही पसन्द करती है निश्चित रूप से । आविष्कार करने वाली "दुर्लभ आत्मायें" यदि अपनी जिन्दगी भर की मेहनत का फल केवल एक वाक्य विशेष को प्रस्तुत करने में अपने कीमती मनुष्य के पूरे दुर्लभ जन्म विशेष को खर्च करती हैं तो इस पूरी मेहनत का यदि सौवां हिस्सा भी केवल अपनी शरीर रूप प्रयोगशाला विशेष पर पूरी ईमानदारी से खर्च करें तो अनेक दुर्लभ-2 वाक्यों विशेषों से भरे हुऐ अनेक ग्रन्थों विशेषों को प्रस्तुत करने में अवश्य समर्थ हो सकती है

अर्थात उस दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये फिर इन व्यर्थ के कार्यो का विचार तक करने का भी कोई प्रयोजन ही नहीं रह जाता निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । "शैतानी ताकतें" इस सच्चाई को समझती हैं खूब अच्छी तरह से, इसीलिये ये ऐसी मेहनती दुर्लभ आत्माओं विशेषों की दुर्लभ ईमानदारी से की जाने वाली मेहनत विशेष को अधूरे कार्यो विशेष में खर्च करवा कर व्यर्थ कर देती हैं निश्चित रूप से प्रयोगशाला रूपी भट्टी विशेष में कीमती मनुष्य के दुर्लभ जन्म विशेष को ईधन के रूप में जला कर सदा के लिये नष्ट कर देती हैं तथा अपने मुल्कों में कुछ अधिकार दे कर सदा के लिये लूट लेती हैं दुर्लभ हीरा रूपी मनुष्य का जन्म इन दुर्लभ मेहनती आत्माओं विशेषों से निश्चित रूप से । क्योंकि ये दुर्लभ-2 मेहनती आत्मायें बहुत शीघ्र ही अपने को इस जेलखाने से मुक्त करवाने में अवश्य समर्थ हो सकती हैं निश्चित रूप से ! "शैतानी ताकतों" को एक आत्मा भी, इन कैदखानों से मुक्त हो कभी सुपने में भी मंजूर ही नहीं होता निश्चित रूप से । एक आत्मा को भी रोकने के लिये सभी "शैतानी ताकतें" मिल कर भरपूर लड़ाई लड़ती हैं निश्चित रूप से पूरी उपलब्ध ताकत अथवा समर्थो को प्रस्तुत रख कर दिन रात बिना रूके यकीनी तौर से । सभी दुर्लभ श्रेणी की विशेष-2 आत्माओं को जिस चालाकी से इन "शैतानी ताकतों" ने इन व्यर्थ के धन्धे में फँसा रखा है उन से "सच्चे मोमन" विशेष को अपने को अलग रखने

की बाहरी लड़ाई लड़नी है पूरी चतुराई से निश्चित रूप से । जब तक आप बाहर की लड़ाई को जीत नहीं लोगे अन्दर की विशेष "शैतानी ताकतों" की लड़ाई को लड़ना तो दूर रहा आप केवल इन "शैतानी ताकतों" की चालाकियों को समझने में भी केवल असमर्थ ही साबित होंगे निश्चित रूप से । "सच्चा मददगार" प्रत्येक काल में केवल "प्रभु" ही है निश्चित रूप से पूर्ण समर्थ निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध है यकीनी तौर पर केवल "आत्मिक कल्याण" हेतू मदद रूपी थाल परोसे सिर्फ आप का मुँह देख रहा है कि कब आप मांगो और "प्रभु" आपके मुँह में निवाला सजा कर रख देवे निश्चित रूप से ।

"बुल्ले नूं "शाह" अन्दरों मिलया-भुल्ली फिरे लुकायी"

बुल्ला नाम की फकीरी आत्मा विशेष का ब्यान है कि मुझे "प्रभु" यानी के सर्वश्रेष्ठ अथवा शाह विशेष केवल अपने ही शरीर के अन्तर में उपलब्ध हुआ है निश्चित रूप से । "भट नमाजा चिक्कड़ रोजे-कलमें ते फिर गई सिआही" का दुर्लभ ब्यान विशेष देने का कारण ये था कि मैं भी "प्रभु" की तलाश इन्हीं "धन्धों विशेष" में स्वंय को व्यस्त रखते हुऐ कर रहा था सारी उम्र केवल व्यर्थ खोता हुआ निश्चित रूप से । पर मेरी तलाश केवल अधूरी ही रही निश्चित रूप से अर्थात मेरा सुपना "प्रभु मिलन" का साकार न कर सके ये सभी दुर्लभ विशेष-2 कार्य यानी के किताबें-नमाज-रोजे इत्यादि । बुल्ला बहुत कमाई वाली दुर्लभ आत्मा विशेष थी

ईमानदार-मेहनती विशेष तौर पर । इस मेहनत का नतीजा ये निकला कि सिद्धियाँ प्रत्यक्ष हुई पर शान्ति नहीं अनुभव होती थी । अर्थात सिद्धि केवल कमाई उपलब्ध को हज्म करने वाला मीठा कीड़ा ही है निश्चित रूप से । कमाई घटने से शान्ति कैसे प्रत्यक्ष अनुभव हो सकती है ? इस समस्या विशेष का इलाज नहीं मिला, बहुत भटका बहुतों से पूछा पर सभी ठग श्रेणी के सफेद वस्त्र रूपी कफन ओड़ कर दुनिया को लूटने में ही केवल व्यस्त थे अर्थात सभी बाहरी वृति में ही डूब तथा डुबो रहे थे पूरी दुनिया को निश्चित रूप से अन्दर का धन्धा विशेष कोई नहीं जानता था । इन बाहरी वृति के "दलालों विशेषों" के लिये तो सिद्धि विशेष ही "परमात्मा" थी निश्चित रूप से । सब इन्हीं के चक्कर में डूब तथा डुबो रहे थे दुनिया को। सिद्धि अथवा "शैतानी ताकतें" केवल दो लफज मगर वस्तु एक ही है निश्चित रूप से। सभी जमातों अथवा मत धर्मो में यह ठग अथवा दलाल श्रेणी की दुर्लभ विशेष आत्मायें उपलब्ध हैं केवल आपको हज्म करने के लिये ही पूरी तरह से, जैसे इनका नाम कुछ भी हो सकता है मौलवी-पादरी-पातशाह-महाराज-हजूर-भाई-महंत-ब्राह्मण अथवा पंडित-पत्री विशेषज्ञ गो-साई-भगवन-महंत-संत-बाबे-पथिक कमेटियाँ-सभा सदस्य-लीडर इत्यादि ऐसे ही कई प्रकार के नामों विशेषों से इन "दुर्लभ लोभी स्वार्थी खूनी भेड़ियों" को जाना जाता है, जो इन विशेषों

की आड़ में छुपकर रहते हैं निश्चित रूप से । इन सभी आत्माओं का सभी व्यवहार केवल बाहरी वृति अर्थात शरीर तक ही सीमित है निश्चित रूप से वो भी बड़े भयानक ढंग विशेषों से यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो "शुद्ध आंतरिक रूहानी ज्ञान" का व्यावहारिक स्वरूप दुर्लभ ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । सिद्धियों की उपलब्धी विशेष करने वाली आत्मा विशेष पातशाह अर्थात परमात्मा का दुर्लभ बाप ही स्थापित करके पूजी जाती हैं निश्चित रूप से । इन्हीं श्रेणी के "लोभी स्वार्थी खूनी भेड़ियों" को अपना भरपूर खून विशेष दान करने के बाद भी शान्ति विशेष उपलब्ध न हो पाने के कारण बुल्ले ने खामोश रहना ही बेहतर समझा अन्दर बेचैनी रहती थी पर क्या करे ? कहाँ जाये किस से समस्या का हल जाने ? सब तरफ वासनाओं का बाजार गर्म था काफी समय बाद किसी जानकार ने एक किसान "इनायत शाह" का नाम बताया बुल्ले की सच्ची तड़प देख कर बुल्ला ऊँची जात से था और "इनायत शाह" नीची जात से कैसे वहाँ तक पहुँचे ? समाज के जूते ! उन दिनों जात-पात का बड़ा भयानक दौर चल रहा था । केवल नीची जात वाले को देखने भर से ही शुद्धि के लिये तुरन्त स्नान करना पड़ता था पूरी लम्बी विधि विशेष के अनुसार ! ये जात की बेड़ी काफी समय तक बुल्ले को बांधे अथवा रोके रही । जैसे-2 समय बीतता गया सच्ची प्यास अथवा तड़प बढ़ती ही गई "प्रभु मिलन" की । "सिद्धियों" अथवा "शैतानी

ताक़तों" ने लुभाने की भरपूर कोशिश की परन्तु सच्ची प्यास सिद्धियों रूपी रेगिस्तान विशेष में भला कैसे बुझ सकनी सम्भव हो सकती थी निश्चित रूप से । आखिर जब बुल्ले से प्यासा न रहा गया तब जात नाम की "शैतानी बेड़ी" अथवा बंधन विशेष को भी तोड़ कर "बुल्ला" भरी दुपहरी में "इनायत शाह" के पास पहुँचा । किसान अपने कार्य में व्यस्त था । बुल्ले ने सोचा फिर से खून दान करने से पहले इस बार जांच कर लेनी चाहिये । बुल्ले ने उपलब्ध ताकत अथवा सिद्धि विशेष के बल से आमों को पेड़ों से अलग कर दिया । आम धरती पर गिरने से आवाज उत्पन्न होने लगी जिससे किसान का ध्यान भंग हुआ । किसान ने ध्यान लगाया तो बात समझ आ गई कि कोई प्यासी आत्मा उपलब्ध हुई है । आत्मा की तड़प सच्ची है तथा बात भी लगभग बनी बनाई हुई सी ही है । अर्थात "प्रभु मिलन" की सच्ची हकदार है । अब उसे ज्ञान देना है । पहले यकीन हो तो तभी तो ज्ञान देने का लाभ हो सकता है निश्चित रूप से अतः वे अपने ध्यान में ही लगे रहे तथा अपने संकल्प से आमों को फिर पेड़ के संग जोड़ दिया ठीक वहीं जहाँ पर प्रत्येक आम का स्थान निश्चित था । बुल्ले ने देखा कि सब उल्टा हो गया, उसे पहले तो यकीन ही नहीं हुआ फिर उसने परखने के लिये फिर से ताकत का प्रयोग किया नतीजा फिर उल्टा निकला अब बुल्ला जो भी कार्य भंग करता तुरन्त बिगड़ा कार्य विशेष फिर से कोई ताकत विशेष दुरूस्त कर

देती । आखिर बुल्ले को यकीन हो गया कि जिस ताकत अथवा सिद्धि विशेष के बल पर समाज स्वंय को "परमात्मा" स्थापित कर रहा है उससे बढ़कर समर्था रखने वाली आत्मा विशेष साधारण जिन्दगी जीते हुऐ केवल अपने ध्यान में ही मग्न है । अवश्य मेरी विकट समस्या विशेष को बिना किसी लोभ अथवा स्वार्थ के हल करने में ये दुर्लभ आत्मा विशेष पूर्ण समर्थ है । ऐसा यकीन होने पर उसने उस दुर्लभ किसान विशेष को जवाब दिया पूछने पर कि मैं बुल्ला हूँ । क्यों आये हो ? "प्रभु " से मिलना चाहता हूँ उपाय बताओ शिष्य अथवा मोमन बनना चाहता हूँ । तब उस दुर्लभ किसान विशेष "हज़रत इनायत शाह" ने जवाब दिया कि "बुल्लेया रब दा की पाउणा ऐदरों पुटणा ते एदर लाउणा ।" बुल्ले ने "दुर्लभ गुरू संदेश" ग्रहण किया व्यवहारिक रूप से और अपने निजी व्यवहार में व्यस्त हो गया । शीघ्र ही "बुल्ले" की जन्मों-2 की प्यास "रागमई प्रकाशित आवाज" के प्रत्यक्ष होने पर अपने शरीर के अन्दर ही बुझने लगी तथा दुनिया का अपने समय का "दुर्लभ सच्चा मार्ग दर्शक" साबित हुआ निश्चित रूप से । इस दुर्लभ आत्मा विशेष बुल्ले के सभी दुर्लभ ब्यानों विशेषों में गहरे भेद छुपे हुऐ हैं । एक लफजों का बाहरी अर्थ है "शैतानी पक्ष" की आत्माओं के लिये-पढ़ो और केवल शोर मचाओ । दूसरा लफजों के बाहरी अर्थ के पीछे-दुर्लभ सच्ची आत्माओं के लिये दुर्लभ-2

पैगाम छुपे हुऐ हैं निश्चित रूप से "निज कल्याण" हेतू । चतुराई से सच्चे मोमन अथवा परमार्थी विशेष के लिये लफ्ज रूपी अमृत विशेष संजोया हुआ है यकीनी तौर पर "ठीक मार्ग दर्शन हेतू" धुर निर्देशित वाणी विशेष में ये दुर्लभ खूबी प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष उपलब्ध रहती है विशेष रूप से । संसारी तथा परमार्थी सच्चे दोनों के लिये अलग-2 से ब्यान अथवा मार्ग दर्शन नहीं किया जाता "प्रभु" के "दरबारे खास" से । क्योंकि प्रत्येक आत्मा "प्रभु" का निश्चित अंग है प्रत्येक काल में अतः प्रत्येक आत्मा का "प्रभु" पर पूरा-2 बराबर का अधिकार है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । अब आत्मा ने फैसला करना है कि वो "प्रभु" को ही केवल चाहती है या "प्रभु" से उपलब्ध अथवा प्रत्यक्ष हुई उपलब्धियों विशेष को । "प्रभु" की उपलब्धियों का कुछ भी अन्त ही नहीं है । जितनी आत्मायें "शैतानी पक्ष" की हैं ये भी "प्रभु" का अनन्त ध्यान करने वाली ही हैं पर इन्हें "प्रभु" से बढ़ कर उसकी उपलब्धियों का आकर्षण है निश्चित रूप से इसीलिये इन्हें स्वंय को "प्रभु" प्रस्तुत करने में ज्यादा संतुष्टि होती है । अतः इन मण्डलों से आगे जाना इन्हें मंजूर नहीं होता । ऐसा नहीं है कि इन्हें ये जानकारी उपलब्ध नहीं है । इसीलिये स्वंय को ऊपर मण्डलों तक सीमित अथवा स्थिर रखने के लिये निरन्तर कमाई करती रहती हैं ये आत्मायें विशेष "शैतानी पक्ष" में ऊँचे पदों पर आसीन हो कर सृष्टि के कार्यो में योगदान देती रहती हैं निश्चित रूप से । आगे कमाई न

करने वाली आत्मा विशेष ही केवल निचले मण्डलों में गिरती अथवा फिर से फँसती हैं । तीनों मण्डलों को पार कर लेने वाली आत्मा विशेष भी पारब्रहम में ही आनन्द में लीन रहती हैं उसे भी आगे "प्रभु" तक जाने की इच्छा ही नहीं रहती । वह दुर्लभ आत्मा विशेष भी जन्म-मरन से रहित "सौंहं" में मग्न रहती हैं सौ यानी के वह अर्थात परमात्मा अहम यानी के मैं अर्थात आत्मा । अर्थात जो "परमात्मा" है वो मैं हूँ तथा जो मैं हूँ वह "परमात्मा" है । पारब्रहम के "दुर्लभ प्रकाश" विशेष में ऐसी "दुर्लभ आत्मा" विशेष मग्न रहती है निश्चित रूप से, यहाँ पारब्रहम की आत्मायें विशेष भी अपने पक्ष की आत्माओं की मदद दुर्लभ करती ही रहती हैं निश्चित रूप से । "रचना प्रभु" की इस प्रकार से प्रत्यक्ष है कि केवल "सच्ची आत्मा" विशेष ही आगे को बढ़ पाती है निश्चित रूप से । पारब्रहम के आगे तो केवल एक ही सच्ची आत्मा विशेष दुर्लभ बढ़ पाती है जो केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" अर्थात "परम चेतन सत्ता" की ही दीवानी है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । केवल एक भी छोटी सी वासना विशेष रखने वाली आत्मा भी आगे बढ़ना तो एक तरफ रहा हिलने में भी केवल असमर्थ ही साबित होगी निश्चित रूप से अनन्त ताकतों विशेष के द्वारा (आपके दुर्लभ-2 नकली परमात्माओं सहित) घसीटने के बावजूद भी यकीनी तौर पर । अब विचार कर लो कि कैसा पाखण्ड विशेष चला रहे ये निकृष्ट नकली परमात्मा विशेष-2

अपना ध्यान-पूजा करवा कर पूरी दुर्लभ मनुष्य जाति को केवल अन्धे कुँऐ में ही ढकेलने का ही साधन विशेष साबित हो रहें है निश्चित रूप से । यही ऐसा "प्रभु" न करता तो आपके मत धर्मो के ठेकेदारों की ही कालोनियाँ विशेष-2 बनी होंती सब मण्डलों में निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । जिस ने आप को प्रस्तुत किया है उसे मालूम है किस आत्मा में क्या भरा हुआ है क्योंकि भरने वाला केवल "प्रभु" स्वंय ही है । फिर उस भरे का किस वक्त क्या इलाज है उसे भी उसने संजो कर पहले ही रख दिया है । इसीलिये कहा गया है कि अनन्त काल की लिखित हो चुकी है केवल प्रत्यक्ष होगी अपने-2 समय अनुसार निश्चित रूप से कुछ भी तबदीली पूर्व "प्रभु लिखित" में केवल असम्भव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । और आप मग्न हो कि कुछ कर दिखाओगे ! केवल "एक दुर्लभ आत्मा विशेष" ही "सच्ची" है सौ सच्चों विशेषों में निश्चित रूप से केवल उसी "दुर्लभ सच्ची आत्मा विशेष" के लिये ही ये "दुर्लभ पैगाम" विशेष है निश्चित रूप से ।

"हजरत इनायत शाह" प्याज की पंजीरी लगा रहे थे । छोटे-2 पौधों को फैला कर के दूर-2 बुआई कर रहे थे । इसी क्रिया विशेष में कामिल मुर्शद विशेष ने कामिल मोमन विशेष को "दुर्लभ सच्चा संदेश अथवा पैगाम" दिया । बुल्लया यदि "प्रभु" को मिलना चाहता है तो "ऐदरों पुटणा ते एदर लाउणा"

अर्थात मन जो है "शैतानी ताकतों" का अंश विशेष है ये तुझे बाहर लगायी रखता है सभी प्रकार के जरूरी-2 कार्य विशेषों में ताकी तू अन्दर प्रवेश न कर सके । जिस "दुर्लभ वस्तु" विशेष की तुझे तलाश है वो वस्तु विशेष तुझे केवल तेरे स्वंय के शरीर में ही अन्दर मिलेगी निश्चित रूप से । तू उसे बाहर तलाश करता है फिर तेरा काम कैसे बन सकता है अथवा तेरी तलाश कैसे पूरी हो सकती है ? यही "शैतानी ताकतों" की चालाकी है मन के द्वारा कि तू केवल बाहर ही रहे । अब तू इस शैतानी आवश्यक अंश "मन" को बाहर यानी के संसार से पुट अर्थात उखाड़ और अपने शरीर के अन्दर "शब्द विशेष" (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) के साथ जोड़ अथवा लगा तेरा आवश्यक कार्य विशेष अवश्य सिद्ध हो जायेगा अपने आप क्योंकि "प्रभु" प्रत्येक काल में पूर्ण समर्थ है निश्चित रूप से तथा तेरी मदद को भी प्रत्यक्ष उपलब्ध ही है यकीनी तौर पर ! इतना यकीन तुझे अवश्य करना ही पड़ेगा फिर ये केवल तेरी अपनी निजी लड़ाई विशेष ही है अपने ही "मन रूपी शैतान" विशेष से लड़ने वाली आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में इसे यहाँ अन्दर लगाये बिना तेरा कार्य सिद्ध हो सकता है अर्थात तुझे "शैतानी ताकत" को जीतना ही पड़ेगा निश्चित रूप से । इसीलिये कहा है कि "मन जीते जग जीत" अब सोचो उस "दुर्लभ किसान विशेष" ने कौन सी दृष्टि मारी कौन सा अमृत घोल कर पिला दिया या कौन सा नाम का दान विशेष ही दे दिया

कि बुल्ले की दुर्लभ विशेष बात बन गई ? केवल "शुद्ध रूहानी ज्ञान" ही प्रत्यक्ष उपलब्ध किया दुर्लभ किसान विशेष ने जो आपको लिख कर के दे दिया गया है । किसी से कुछ पूछने की भी जरूरत ही नहीं । चलना आपने है केवल अपनी निजी जिन्दगी विशेष में ही तथा चलाना अथवा मदद विशेष करनी है केवल "अकाल पुरख परमात्मा" ने ही निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । दूरी निश्चित है जितना चलोगे जिस भी दुर्लभ केवल मनुष्य के जन्म विशेष में उतनी दूरी अवश्य घट ही जायेगी निश्चित रूप से, "केवल मौत के आने से पहले तक" आगे जब भी फिर कभी भी आप मनुष्य के दुर्लभ जन्म विशेष मे आओगे आप को याद करवा दिया जायेगा चलने के वास्ते । अब आप ने सोचना है कि आपको धीरे-2 चलना पसन्द है या तेज-तेज चलना अथवा केवल रूके रहना ही पसन्द है या केवल तमाशा विशेष-2 देखना अच्छा लगता है । सभी के लिये इस संसार रूपी मेले विशेष में स्वंय को स्थिर रखने हेतू आवश्यक रूप से अवश्य कुछ न कुछ कीमत किसी न किसी रूप में प्रत्येक आत्मा को चुकानी ही पड़ती है । बिना कुछ भी कीमत विशेष दिये "शैतानी ताकतों" के पास आप को देने के लिये "मौत" भी "केवल दुर्लभ" ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । अब अंतर में कैसे प्रत्यक्ष होगा ये "शब्द विशेष" ? जब आत्मा विशेष पूरी तरह से नंगी होगी । "नगन फिरत रंग एक के ओह शोभा पाये ।" कैसी नंगी विशेष

होगी आत्मा विशेष ? जब ये "आत्मा विशेष" अपने ऊपर चढ़े हुऐ छत्तीस प्रकार के रंगीन मोटे से वस्त्र विशेष को उतारेगी पूरी तरह से । ये कौन-2 से रंग विशेष हैं इस रंगीन मोटे से वस्त्र विशेष के ? तो सुन "साहिबा प्यारी" लिख ले कलम से ताकी तुझे याद रहे । पच्चीस रंग इस वस्त्र पर "महत" विशेष के हैं । पाँच महाभूत+पाँच तन्मान्त्र+पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ+पाँच कर्मेन्द्रियाँ अर्थात अग्नि-जल-पृथ्वी-वायु और आकाश पाँच महाभूत+रूप-रस-गन्ध-स्पर्श और आवाज पाँच तन्मान्त्र+आँख-नाक-कान-जुबान और त्वचा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ+हाथ-पाँव-नाक-उपस्थ और गुदा पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन+ बुद्धि+चित+अंह और प्राण कुल पच्चीस हुऐ तथा तीन रंग इस मोटे से वस्त्र पर माया के चढ़े हुऐ हैं रज+सत तथा तम । अब पाँच विकार रूपी रंग भी चढ़े हुऐ हैं इस मोटे से वस्त्र विशेष पर काम+क्रोध+लोभ+मोह तथा अंहकार । तीन और विशेष रंग चढ़े हुऐ हैं इस दुर्लभ वस्त्र पर जिससे आत्मा का अपना प्रकाश जो बारह सूरज के लगभग है छुपा हुआ है वो है "स्थूल शरीर" जिसे इस वक्त लिये बैठे हो, एक इसके अन्दर और है वो है "सूक्ष्म शरीर" तथा इसके अन्दर एक और है वो है "कारण शरीर ।" इस तरह से कुल छत्तीस रंग वाला मोटा टाट रूपी कपड़ा चढ़ा हुआ है प्यारी सी अति सूक्ष्म आत्मा विशेष पर जो केवल "प्रभु" का प्यारा सा केवल अपना निजी अंग ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । इस वस्त्र को उतारना प्रत्येक

आत्मा का केवल अपना निजी आवश्यक व्यवसाय अथवा विषय ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । अगर कोई आत्मा विशेष नंगी होना चाहती है इस वस्त्र अथवा कैद से मुक्त होना चाहती है परन्तु स्वंय को कमजोर समझती है तो अवश्य "प्रभु" मदद दुर्लभ के लिये उपस्थित हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से। यदि कोई आत्मा विशेष अपने बल अथवा कमाई विशेष से आगे बढ़ना चाहती है तो "मैदाने जंग" प्रत्यक्ष ही है "पारब्रह्म" तक जाने की क्षमता बारह सूरज विशेष की प्रत्येक आत्मा में प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष उपलब्ध ही है निश्चित रूप से । आत्मा विशेष बड़े शौंक से लड़े और आगे बढ़े "गगन दमामा बाजिओ परिओ निसाने घाउ । खेत जो माडिओ सूरमा अब जझून को दाउ" तथा स्वंय को सूरमा साबित करे ! "नगन" अर्थात इस तरह से नंगी हो कर आत्मा "एक" यानी के "प्रभु" के "रंग" अर्थात "प्रकाश" विशेष में लीन हो कर के "फिरत" यानी के अनन्त मण्डलों को पार करती हुई अपने "निज के निश्चित मूल" विशेष में समाये तभी "ओह शोभा पाये" अर्थात ऐसी "दुर्लभ आत्मा विशेष" का जन्म-मरन सदा के लिये खत्म हो जाता है निश्चित रूप से तथा शोभा अर्थात मान जो इस "दुर्लभ आत्मा" विशेष को प्राप्त होता है वो है क्षमता "रागमई प्रकाशित आवाज" की चार विशेष सूर्यो जैसी (केवल समझाने हेतू सूर्यो लफज का प्रयोग किया जा रहा है असल को ब्यान करना केवल असंभव ही

है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में) उपलब्ध दी जाती है निश्चित रूप से सदा के लिये । जिसे प्राप्त कर "दुर्लभ आत्मा" विशेष "प्रभु" की सभी अलख-अगम-अगोचर जैसी महान-2 दुर्लभ अनन्त अविनाशी उपलब्धियों विशेषों में सदा के लिये गम्न करने योग्य हो जाती है निश्चित रूप से । इस विशेष क्षमता के अभाव में उन अविनाशी मण्डलों में कोई भी आत्मा के प्रवेश की कुछ भी कल्पना ही नहीं है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से सुपने में भी गाँठ बाँध लो ।

"भुल्ली फिरे लुकाई" अर्थात "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" ने पूरी मनुष्य जाति को भ्रम में डुबो रखा है । जितने विशेष-2 कार्य आप को बताये गये हैं इन का केवल एक ही मकसद है "शैतानी ताकतों" का कि आत्मा जिस विशेष आवश्यक कार्य को सिद्ध करने के लिये "दुर्लभ मनुष्य के जन्म" में आयी है उसे न कर पाये । मुक्त होने का रास्ता केवल इसी मनुष्य के जन्म में ही है "सब से छोटा" विशेष तौर पर । जिस तरह के कार्यो में मनुष्य जाति को लगा रखा है इन "शैतानी ताकतों" ने उन्हें अगर ध्यान से देखोगे तो ये "दुर्लभ प्लेनेट" आप को एक "भयानक पागल खाने" जैसा ही लगेगा जब आप स्वंय को अन्दर के विशेष संसार में प्रवेश करने योग्य बनाओगे । फिर तड़पोगे इस "भयानक पागलखाने" से छूटने के लिये । फिर आप को कुछ भी पसन्द ही नहीं आयेगा । हर कदम पर आत्मा की

परख होती है सब कुछ अपने आप प्रत्यक्ष होता है क्योंकि जिसने इस "जाल विशेष" को प्रत्यक्ष किया है वह "परम चेतन सत्ता" निरन्तर जड़ चेतन में भरपूर समायी हुई है उस एक के सिवा कहीं भी कुछ भी नहीं है निश्चित रूप से । बाहर से उसने सब कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया है कि सब कुछ अलग-2 तथा एक दूसरे से विलक्षण ही दिखायी देता है परन्तु मूल अथवा जड़ केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" के सिवाय और कुछ भी नहीं है निश्चित रूप से । कहीं भी पैर रख ले आत्मा केवल जाल अथवा फंदा ही है निश्चित रूप से । बड़ी सावधानी से एक-2 फंदे को काटना अथवा जीतना पड़ता है आत्मा को तभी धीरे-2 आगे बढ़ती है घिसट-2 कर । इसीलिये इसे अनन्त जन्मों का जिन्दगी भर का होम वर्क कहा गया है । कहीं भी "चालाकी" का कोई एक लफज भी कहना केवल समय तथा समर्था की केवल बरबादी ही है निश्चित रूप से । अब अपने मत-धर्मो-पातशाहों-हजूरों इत्यादि के कारनामों को सामने रख लो और फैसला कर लो असल क्या है और किया तथा बताया क्या जा रहा है ! आपकी मदद की जा रही है या "शैतानी ताकतों" को ही केवल प्रसन्न अथवा मजबूत किया जा रहा है निश्चित रूप से । इन आत्माओं विशेषों की प्रत्यक्षता का तो केवल एक ही अर्थ है कि "जितना जिये उतनी लानत-जितनी लानत उतना परमात्मा से केवल दूर ही दूर निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो ।" "सुनी पुकार" इस "घोर भयानक नर्क

रूपी भवसागर" से निकलने के लिये तड़प रही "प्रभु" की प्यारी-दुलारी आत्मा विशेष की "दातार" यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" ने और "पैगाम विशेष" भेजा "धुर" यानी के "प्रभु" के "दरबारे खास" से लफज रूपी अमृत में संजो कर "हे प्यारी आत्मा" तू मेरा निजी अंग विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । जैसे मछली को नीर-भूखे को अन्न-प्यासे को जल-लोभी को पदार्थ-कामी को काम प्यारा है वैसे ही मुझे भी केवल तू ही प्यारी है निश्चित रूप से । तेरा चीत मुझ में है तो फिर मैं तुझ से अलग कैसे रह सकता हूँ भला यकीनी तौर पर ? जब तक तू मेरे अंक में पूरी तरह से समा नहीं जायेगी मैं भी वैसे ही तड़पता रहूँगा जैसे तू मेरे वियोग में तड़प रही है इस घौर नरक में निश्चित रूप से । तुझे घबराने की जरूरत नहीं है मैं सदा तेरे अंग-संग हूँ प्रत्येक काल में निरन्तर निश्चित रूप से । तुझे लूटने वाले सभी लोभियों स्वार्थियों विशेषों का इन्तजाम मैंने कर दिया है निश्चित रूप से घौर-2 नर्कों विशेषों में अनन्त काल तक के लिये । अब तू "मेरी आवाज विशेष को पहचान" तथा इस विशेष "रागमई प्रकाशित आवाज" (जो केवल मेरा निज स्वरूप ही है) को पकड़ कर मेरे तक पहुँच जा शीघ्रता से । मैं केवल तुझे ही मिलने के लिये "बेताब" इंतजार कर रहा हूँ निश्चित रूप से ।

जब-2 "शैतानी ताकतें" मनुष्यता को अपने निजी धर्म विशेष से विमुख कर देती है "प्रभु" अपनी प्यारी दुलारी आत्माओं

विशेष को फिर से याद करवाने के लिये अपना निजी संदेश अथवा पैगाम भेजता है तथा अपराधी विशेषों को सजा देता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । इसीलिये कहा जाता है कि "प्रभु" के घर देर है अंधेर नहीं ! फिर देर भी आत्मा की अपनी ही कमी के कारण प्रत्यक्ष होती है । "सुतेया बांग न सुण सके रहया खुदा जगाये ।" "खुदा" तो बेचारा निरन्तर आत्मा को मुक्त करवाने के लिये "बेताब" इन्तजार करने में ही सूखता रहता है "निकट नित पास ।" आत्मा को तो ठीक ढंग से पुकारना भी नहीं आता । एक जानवर-परिन्दें को रखे गये नाम विशेष से पुकारो तो वह भी सुनता है फिर जड़-चेतन का मूल निरन्तर भरपूर समाया हुआ "प्रभु" क्या तेरी पुकार सुनने से विमुख है ? तेरे पुकारने भर की देरी है बस फिर देख कैसे दौड़ा चला आता है ! तुझे उसकी तड़प का अन्दाजा नहीं है । माँ से पूछ कर देखियो वो तुझे बतायेगी कि कैसे बिना तुझे देखे तड़पती है निश्चित रूप से । तू उस "प्रभु" का अपना निजी अंश विशेष ही है प्रत्येक काल में । तुझे पैदा करने वाला माँ जैसा ही है । जैसे माँ तुझे रोता हुआ नहीं देख सकती तड़पती है तुझे खुश करने हेतू । वैसे ही "प्रभु" भी "हे प्यारी आत्मा" तुझे केवल खुशहाल ही देखना पसन्द करता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में तेरे परेशान होने से "प्रभु" भी परेशान हो ही जाता है यकीनी तौर पर । क्या तू कभी भी अपने अंश विशेष को अभाव में रखना अथवा देखना पसन्द करेगा ?

हरगिज नहीं करेगा ! फिर "प्रभु" कैसे तेरे अभाव में रहने से संतुष्ट हो अथवा रह ही सकता है निश्चित रूप से जिस तरह से तू अपने प्रत्येक अंग की हिफाजत से पालना करता है ना इसी तरह से "प्रभु" भी इस सृष्टि के प्रत्येक छोटे से छोटे अंश को भी पूरी सुरक्षा से पोषित करता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जिस तरह से किसी दूसरे के द्वारा तेरे अपने अंश विशेष का जरा सा भी अहित होने पर तुझे बर्दाश्त नहीं होता ना उसी तरह से यदि कोई भी "प्रभु" की इस उत्कृष्ट सृष्टि का जरा सा भी हनन करे तो "प्रभु" को भी तड़प होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "अपना भला केवल दूसरे की सुरक्षा में ही निश्चित जान" कुछ भी करने से पहले अवश्य होने वाले अन्जाम विशेष पर विचार कर ले । केवल तुझे ही भुगतना पड़ेगा निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ! तेरे स्वंय के किये का फिर फल अथवा अंजाम कैसे बदला जायेगा ? कौन समर्थ है इस सृष्टि में ? केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" के-सभी विशेष-2 केवल असमर्थ ही हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ! फल उपलब्ध करवाने का निश्चित अधिकार केवल एक "प्रभु" के पास ही सुरक्षित है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । तेरा केवल कर्म करने तक ही अधिकार सीमित तथा सुरक्षित है केवल "मनुष्य के दुर्लभ जन्म विशेष" में केवल जीते जी ही निश्चित रूप से यकीनी तौर पर ।

"उम्र गवाई विच मसीती" अर्थात जिन्दगी भर मस्जिदों अथवा गुरूद्वारों-मन्दिरों-डेरों-गिरजाघरों इत्यादि धार्मिक विशेष-2 स्थानों के ही चक्कर काटता रहा अथवा महान-2 ड्यूटियों विशेष-2 को सम्पन्न करने में ही केवल अपनी "दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म" को मिटाता रहा । "अन्दर भरिया नाल पलीती" अर्थात अन्दर तो तेरे विषय विकारों की भयानक आग प्रचण्ड रूप से प्रत्यक्ष रोशन ही रही निश्चित रूप से । स्वंय की इस आग को बुझाने की बजाय दूसरों के घरों के ही केवल "जल रूपी विशेष अग्नि" से बुझाने अथवा राख करने में ही व्यस्त रहा जीवन भर निश्चित रूप से । "पड़ पंडित अवरा समझाये-घर जलते की खबर न पाये ।" अर्थात दुनिया को पढ़ाने में भी केवल स्वंय को ही डुबोता रहा पूरी तरह से यानी के स्वंय केवल विशेष रूप से अनपढ़ ही रहा निश्चित रूप से । खुद लुट रहा है पर अपनी हस्ती केवल दूसरों को लूटने में ही मिटा रहा है यकीनी तौर पर दुर्लभ विद्वान प्राणी ! "कदे नमाज तौहीद न कीती" अर्थात रोजे-नमाजें तो तू नियम से जिन्दगी भर निभाता रहा । इस वाक्य विशेष में सभी मत धर्मो की अपनायी हुई सभी महान-2 क्रियाऐं विशेष-2 आ जाती हैं निश्चित रूप से जैसे कि नानक-गोबिंद आदि के नामों पर जलूस निकालने ढोल-पीटने बाजे-बजाने तरह-2 के पैगम्बरों-अवतारों के जन्म दिन मनाने दिन रात केवल पढ़ते अथवा सुनते

ही रहना ग्रन्थ विशेष-2 इत्यादि विशेष-2 कार्यो महान में स्वंय को पहली श्रेणी का महान-2 दुर्लभ "करिश्मा" विशेष ही स्थापित करना दुनिया की नजर विशेष में स्वंय की दुर्लभ हस्ती विशेष को मिटाते हुऐ निश्चित रूप से । "हुन की करना ए शोर पुकार" अर्थात इन महान-2 क्रियाओं विशेष का नतीजा केवल मनुष्य के "दुर्लभ जन्म" रूपी अवसर विशेष को एक तरह से इस जुए विशेष में केवल हारना ही है निश्चित रूप से । क्योंकि इन सभी बाहर वृति की विशेष-2 क्रियाओं का नतीजा बिल्कुल उल्टा ही निकलता है निश्चित रूप से । इन सभी क्रियाओं विशेष का बहुत "भयानक जुर्माना" देना पड़ता है निश्चित रूप से अर्थात घौर-2 नर्को को भुगतने के लिये अवश्य मजबूर कर ही दिया जाता है यकीनी तौर पर आत्मा विशेषों को आवश्यक रूप से । "पुंन दान जो बीजदे सभ धरम राय (शैतानी ताकतें) के जाइ !" अर्थात पुण्य इत्यादि क्रियाओं का निश्चित परिणाम भी केवल तीनों "शैतानी मुल्क" ही हैं निश्चित रूप से । वो भी केवल यदि कुछ क्रियाऐं विशेष पूर्ण ईमानदारी तथा मेहनत विशेष से निभाई जायें तभी ये फल उपलब्ध हो सकता है पुण्य श्रेणी का पर रहेगी आत्मा विशेष केवल इस महान "पागलखाने" विशेष में ही "कैदी" बन कर के केवल श्रेणी "सी" से "बी" हो सकती है "अकथ प्रयासों" के बाद ही आत्मा विशेष कैदी की निश्चित रूप से । फिर इन क्रियाओं विशेष में "चालाकियों" विशेष-2 का जुर्माना भी केवल दुगना ही मिलता

है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर "घोर-2 नरकों" विशेषों को भुगतने के रूप में अवश्य आवश्यकता अनुसार अनन्त काल के बाद भी अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । इसे ही इस वाक्य में फकीर ने ब्यान किया है कि अब "शोर मचाने" से कुछ फायदा नहीं होने वाला यहाँ घोर नर्को विशेषों में तेरी चीखों-पुकार को सुनने अथवा देखने वाला कोई भी उपलब्ध ही नहीं होगा निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । यहाँ तुझे तेरी सभी विशेष-2 करतूतों का पूरा-2 "मुआवजा" विशेष मिलेगा निश्चित रूप से इंटरेस्ट सहित निश्चित रूप से । जब तक कि तू अपनी "इस दुर्लभ कमाई" विशेष को पूरी तरह से हजम करने में समर्थ नहीं हो जायेगा ना तब तक तू स्वंय को इन्हीं घोर-2 नर्को विशेष-2 को रोशन करता ही रहेगा अपनी दुर्लभ बारह सूर्य की रोशनी के द्वारा निश्चित रूप से । यहाँ पर तेरी कोई भी मदद करने को उपलब्ध ही नहीं होगा । करतूतों विशेष-2 में जो तेरी मदद करते थे ना महान-2 "करिश्मे" विशेष-2 वे सभी स्वंय भी केवल तेरी चीखों-पुकार को बढ़ाने विशेष में ही "दुर्लभ मददगार" साबित होंगे तेरे अंग-संग सहायी बनकर निश्चित रूप से । इसलिये विशेष-2 स्थानों अथवा क्रियाओं विशेषों में अपनी उपस्थिति को बहुत विशेष सावधानी से ही प्रस्तुत करना कल्याणकारी है केवल स्वंय के ही "निज कल्याण" हेतू निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । केवल दूर से ही

नमस्कार अधिक लाभकारी स्वास्थ्यवर्धक टानिक ही है निश्चित रूप से महान-2 क्रियाओं विशेष में यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में। अथवा "गैर हाजिरी" तो निश्चित रूप से स्वंय के हाजमें विशेष को ही अधिक मजबूत बनाना है प्रत्येक काल में कीचड़ में डूबो फिर नहाते फिरो अथवा न शामिल होओ न भुगतो यानी के ना गंद से (भरो) लिबड़ों न धोने की ही आवश्यकता पड़े निश्चित रूप से अगर बनना ही पड़े तो फिर मेंढक नहीं भवँरा बनो । अर्थात "मेंढक" वहीं तालाब में निरन्तर "कमल" विशेष के निकट ही रहता है पर खाता क्या है ? केवल काई यानी के गंद अर्थात कीड़े उसे कमल की विशेष अहमियत का एहसास ही नहीं होता । जिन्दगी भर कमल विशेष का ही संग करने के बावजूद उसकी वृति केवल निकृष्ट कीट में ही फँसी रहती है । उसे कमल की "दुर्लभ सुगन्धि विशेष" का कुछ भान ही नहीं होता । आजीवन मेढंक कमल की गंध (खुशबू) अथवा स्वाद विशेष से केवल बेखबर ही रहता है निश्चित रूप से निरन्तर संग विशेष करने के बावजूद भी अनजान ही बना रहता है उपलब्धी विशेष से, कमल की "दुर्लभ सगंत" विशेष का मेढंक पर मैली वृति विशेष होने के कारण कुछ भी प्रभाव ही नहीं पड़ता आंशिक रूप से भी केवल नहीं । "जैसे मेढंक तैसे ओइ नर फिरि-फिरि जोनी पावे ।" "भवँरा" दूर बांसों के जंगल विशेष में निवास करता है पर कमल की सुगंध का दीवाना है उसी के ध्यान में मग्न रहता है निश्चित

रूप से उसी दुर्लभ स्वाद विशेष की ही तलाश में भटकता है निरन्तर । आखिर उसकी "पुकार" विशेष सुनी जाती है "दातार" विशेष के "दरबारे खास" में वह भँवरा विशेष कमल विशेष तक अवश्य पहुँचाया जाता है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । फिर पेट भर कर रस मांडता है भवँरा विशेष । केवल घड़ी-दो घड़ी "पवित्र कमल विशेष" का "दुर्लभ संग" विशेष ही उस दुर्लभ भवँरे विशेष की पेट रूपी मैल विशेष को पूरी तरह से अवश्य काट देता है अथवा धो देता है निश्चित रूप से । अब रोज-2 का संग विशेष "दुर्लभ कमल" विशेष का "भवँरे विशेष" को पागल विशेष सा ही बना देता है निश्चित रूप से जैसे कि "तेजा कमला" फिर ये "पागलपन" विशेष उस दुर्लभ भवँरे विशेष की जान विशेष का ही दुश्मन बन जाता है । जिससे प्यार अथवा इश्क किया उसी के जालिम हाथों द्वारा कत्ल भी होना ही पड़ा निश्चित रूप से भवँरे विशेष को ! "ऐसी मरनी जो मरे बहुर ना मरना होए ।" मरने के दुर्लभ भेद विशेष को कोई नहीं समझ सका । "मरता-मरता जग मुआ मर भी न जाने कोय ।" अर्थात संसार की प्रत्येक शह निरन्तर मिटती अथवा घिसती ही चली जा रही है निश्चित रूप से बिना रूके पर मरने का भेद कौन बतावे ? चिकित्सक का अनपढ़ बेटा आप को हृदय की चीड़ फाड़ करना कैसे सिखा सकता है भला ? बेशक पूरे चिकित्सालय का प्रधान प्रबंधक हो सकता है विशेष तौर पर "दुर्लभ शक" सहित निश्चित रूप से प्रत्येक काल

में अगर चीड़-फाड़ विशेष का ही शौक़ रखते हो "तो फिर कम से कम तीस बरस तक" "विशेष झख" मारो प्रोफेसरों रोगियों की छत्र छाया विशेष में पिछली दुर्लभ-2 कुर्बानियाँ विशेषों सहित तभी इस "दुर्लभ कला" विशेष को जान अथवा सीख सकोगे निश्चित रूप से । केवल चिकित्सक के उत्तराधिकारी विशेष से ही आप को ये कला विशेष उपलब्ध होनी केवल असम्भव ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से। ऐसे विशेष-2 उत्तराधिकारियों विशेषों से तो केवल चीड़-फाड़, तख्त विशेष पर "कसाई दुर्लभ" का ही कार्य विशेष सम्पन्न करवाया जा सकता है पूरी तरह से यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । आप ही कहते फिरते हो कि अधूरा चिकित्सक केवल "कसाई विशेष" ही साबित होता है । प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "ऐसा कोई नहीं इह तन देवे फूंक । अंधा लोग न जानई रहओ कबीरा कूक !" अर्थात अपने ही हाथों केवल अपने ही शरीर विशेष के "खून से होली" खेलने वाली आत्मा विशेष केवल "दुर्लभ" ही है प्रत्येक काल में इस कब्रिस्तान विशेष में निश्चित रूप से दूसरों का "खून विशेष पीने वाले" अवश्य सर्वत्र सुलभ ही हैं प्रत्येक काल में इस शमशान भूमि विशेष में निश्चित रूप से । अज्ञानता के गहन अंधकार विशेष में पूरी मनुष्य जाति स्वंय को अंधे कुँऐं विशेष में ही पूरी तरह से डुबोती चली जा रही है निश्चित रूप से । "मुआ जिवंदा पेखु" अर्थात जो मृत से दिख रहे हैं ना अथवा जिन की तू अपनी सभी

"ताकतों दुर्लभ विशेषों" का दुरूपयोग करके "कब्र" विशेष ही बना चुका है जानकारी के लिये तू जान ले निश्चित रूप से सदा के लिये ये मुर्दे विशेष "अमर" हो चुके हैं । प्रत्येक आने वाले "काल" में भी ये मुर्दे विशेष ही यकीनी तौर पर केवल तेरा (प्यारे-2 मददगारों सहित) "काल विशेष" बन कर ही अब प्रत्यक्ष होंगे इन्हीं विशेष कब्रों से निकल कर निश्चित रूप से ! "प्रभु" के "दरबारे खास" से "अनन्त समर्था विशेष" को प्रत्यक्ष उपलब्ध करके निश्चित रूप से तेरे जैसे अनन्त "शैतानी ताकतों" के मददगारों विशेषों को अनन्त काल तक के लिये "धुँआ विशेष-2" बनाने के लिये तथा केवल "दुर्लभ आत्मा" विशेष की "पूर्ण सूरक्षा" विशेष हेतू ही प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । "जीवदे मर जान्ह" अर्थात जो तुझे बड़े-2 भारी-2 महान-2 नकली परमात्मा विशेष अथवा महारथी विशेष-2 बने हुऐ दिख रहे हैं ना बड़ी-2 सज-धज विशेष-2 लिये हुऐ मत धर्मो के प्रवर्तक, तू नहीं जानता मैं यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" इन्हें पहले ही हज्म कर चुका हूँ। "हे आत्मा विशेष !" तू तो केवल मेरा अर्थात "प्रभु" यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" का निमित अर्थात "नुमाइंदा विशेष" ही है जा बस इसलिये जैसा मैं यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" कहता हूँ तू केवल वैसा ही कर । शीघ्र ही शस्त्रों को धारण कर और "धर्म युद्ध" विशेष में अपने "युद्ध कौशल विशेष" को साबित कर । मेरी यानी के "अकाल पुरख

परमात्मा" की प्रसन्नता अब केवल तेरे "शस्त्र विशेष धारण" करने में ही है निरन्तर रूप से । सभी "शैतानी ताकतें" "मैदानें जंग" में मददगारों सहित आ डटी हैं । अब "पूरे बल अथवा समर्था विशेष" से इनका तू अवश्य ही पूरी तरह से नाश ही कर दे मानवता को सुरक्षित रखने हेतू केवल यकीनी तौर पर मेरी यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" की प्रसन्नता इसी में ही है तू शस्त्रों को धारण करे शीघ्र ही निश्चित रूप से । मेरी यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" की पूरी "समर्था विशेष" तेरे अन्दर प्रत्यक्ष उपलब्ध है निश्चित रूप से । "जिना मोहबत इक सिउ ते माणस परधान ।" अर्थात जिस "आत्मा विशेष" का प्यार अथवा शौक़ एक "अकाल पुरख परमात्मा" का है केवल वही आत्मा विशेष मनुष्य जन्म के दुर्लभ अर्थ विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध कर पाती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में तथा फिर यही "दुर्लभ" विशेष-2 आत्मायें ("प्रभु दरबारे खास की विशेष चमक") "प्रभु की विशेष दया अथवा समर्था" को लेकर के इस विशेष "धर्म युद्ध" में उतरती हैं केवल "एक आत्मा" विशेष को सुरक्षित मुक्त करवाने हेतू निश्चित रूप से । ये "धर्म युद्ध" निरन्तर चलता ही रहता है बिना रूके जब तक उस "दुर्बल आत्मा विशेष" का पूरा निपटारा नहीं हो जाता इन "शैतानी मुल्कों" से सदा के वास्ते यकीनी तौर पर इन को "शहीदी ताकतें" अथवा आत्मायें भी कहा जाता है जो "प्रभु" की बहुत "प्यारी तथा दुलारी" विशेष ही हैं निश्चित रूप से

। इन्हीं के "दुर्लभ योगदान" से यह "असंभव" जैसा कार्य संभव हो सकता है, जो आप के विशेष समक्ष धरा है दुर्लभ मनुष्य के जन्म के रूप में निश्चित रूप से यकीनी तौर पर !

"धर्मशाला विच धड़वाई रहंदे" अर्थात विशेष प्रकार के स्थानों पर जहाँ से धर्म मत इत्यादि का दुर्लभ-2 धन्धा विशेष प्रत्यक्ष किया जाता है उसे "धर्मशाला" कहा जाता है । विशेष-2 डेरे अथवा स्थान-गुरूद्वारे-गिरजाघर इत्यादि इस धर्मशाला लफ्ज को समर्थ बनाने में पूर्ण तौर पर सार्थक हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में धड़वाई कहते हैं लूटने वालों को अर्थात "डाकू" विशेष श्रेणी के "दुर्लभ सफेदपोश" इन विशेष-2 स्थानों पर निश्चित रूप से आपको केवल इन्हीं "शैतानी ताकतों" के नुमाइंदे ही उपलब्ध होंगे यकीनी तौर पर । "ठाकुर द्वारे ठग" अर्थात मन्दिरों इत्यादि स्थानों विशेषों में पूरे ठग या दलाल श्रेणी के ही महान "चमत्कार" विशेष उपलब्ध होंगे निश्चित रूप से । जो आपकी अन्दर की "गुप्त संपत्ति" विशेष को भी केवल अपने "दुर्लभ चक्षुओं" विशेषों से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध करवाने में पूरी तरह से (अपनी "दुर्लभ विशेष कला" में) निपुण हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "मसीतां विच कसबी वसनं" अर्थात मस्जिद इत्यादि दुर्लभ-2 स्थानों विशेषों में आपको कसबी यानी के मर्यादा से रहित रहने वाले विशेष "बदमाश" श्रेणी के ही "दुर्लभ-2 चमत्कार" (इस धरती विशेष के) विशेष ही उपलब्ध होंगे

निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर यानी के अपनी ही दुर्लभ आबरू विशेष खतरे में पड़ गई भाई बचानी मुश्किल हो गई ! चिकित्सक विशेष ही जब उस्तरा विशेष लिये बैठा है फिर कैसे सुराईदार दुर्लभ गर्दन विशेष बचेगी तेरी जरा सोच तो सही ? इन्हीं उस्तरे चलाने में निपुण "दुर्लभ चिकित्सक" रूपी विशेष कसबियों के कारण ही आपके मुल्क विशेष को चार सौ वर्ष से अधिक मुंडा गया निरन्तर। निरीह प्राणियों के "खून से होली" खेली गई । इन्होंने अंधे हुकमरानों विशेषों को कुर्रान के उल्टे अर्थ पढ़ा रखे थे । बुत पूजक हिन्दू को काफिर यानी के "प्रभु" का विशेष संगीन अपराधी ही घोषित करवा रखा था । फिर जो इन विशेष अपराधियों को सजा घोर देवे अर्थात कत्ल करें उन्हें अल्लाह के दरबार से मुरब्बे हासिल होंगे । यानी के बहिश्त मिलेगी हूरें मिलेंगी मद के दरिया उपलब्ध होंगे तथा खाने को मेवे दिये जायेंगे । बहिश्त यानी के स्वर्ग के भोगों का लोभ, केवल यहाँ पर अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिये ही प्रचारित किया गया था । अब जितने ज्यादा काफिरों का कत्ल यानी के सजा दोगे अल्लाह आप पर उतना ही अधिक प्रसन्न होगा तथा बहिश्त में आपको मरने के बाद उतना ही बड़ा तख्त हासिल होगा राज करने हेतू दिव्य-दिव्य भोगों सहित अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । ये "कसवी विशेष" तो ब्राह्मणों अर्थात ठगों के भी बाप साबित हुऐ "बहिश्त" नाम के "धन्धे विशेष" में निश्चित रूप से । अब

हालत ये हो गई कि हिन्दू को कत्ल किया जाने लगा बिना वजह किसी न किसी बहाने विशेष से निश्चित रूप से । अन्धे बहरे हुकमरानों से लिखित ले ली, कि काफिर विशेष को कोई भी अच्छी चीज रखने का अधिकार ही नहीं है निश्चित रूप से । चाहे बकरी हो या औरत-घर-पदार्थ इत्यादि सभी कुछ छीना जाने लगा और सरेआम कत्ल किया जाने लगा । कहीं कोई सुनवाई ही नहीं थी । फिर जितना एक हिन्दू विशेष ने दूसरे हिन्दूओं को कत्ल करवाने का योगदान दिया जालिम हुकूमत विशेष को, उतना मुसलमान में हौंसला ही नहीं था । बाबर कई हमलें कर हार चुका था केवल अपने ही "गद्दार वजीरों" के कारण यह मुल्क गुलाम बना । फिर कई शताब्दियों तक यहाँ पर "खून की होली" विशेष खेली गई निश्चित रूप से "मानवता" की कब्र बना दी गई थी । सब ओर केवल चीत्कार अथवा हाहाकार ही मचा हुआ था निश्चित रूप से । "शैतानी ताकतें" ही नाच रही थीं चारों तरफ धर्म कर्म खत्म हो चुका था । सभी "परमात्मा" को पुकार रहे थे । "प्रभु" पर सभी का यकीन खत्म होता जा रहा था । सभी उल्टे धन्धों विशेषों में ही डूबते जा रहे थे । किसी को कुछ समझ ही नहीं आ रहा था । फिर "प्रभु" ने सच्ची पुकार सुनी तथा अपनी विशेष ताकत को प्रत्यक्ष किया पाँच सौ साल पहले आज के हालात तो उस समय विशेष के हालात से भी कहीं बहुत अधिक बिगड़ चुके हैं निश्चित रूप से सभी लगभग पूरी धरती के ही मनुष्य

उस "परम चेतन सत्ता" को पूरी तरह से भुला चुके हैं । सभी अपना-2 ढोल पीटने में व्यस्त हैं । सभी अपने को ही श्रेष्ठ बता रहे हैं सभी के ढंग "हैरानी" उत्पन्न करने वाले हैं निश्चित रूप से जैसे एक विशेष बड़े से पागलखाने से, सभी पागल अपने-2 ढंग विशेष से स्वंय को ही केवल श्रेष्ठ स्थापित कर रहे हों । "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" सब ओर एक "महामारी" की तरह से फैली हुई हैं निश्चित रूप से सभी को "नीम पागल" सा ही बनाये हुऐ नाच नचा रही हैं निरन्तर "हर जर्रे विशेष" में यकीनी तौर पर । इन से बचने का किसी के पास कुछ उपाय ही नहीं है । केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" की "विशेष दया" ही बचने का निश्चित "उपाय विशेष" है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "प्रभु" ने पुकार को सुना है तथा उसी ताकत विशेष को फिर से उतारा जा रहा है जो कई शताब्दियों पहले उतारी गई थी पहले से कई गुना अधिक बढ़ कर समर्था विशेष लिये हुऐ निश्चित रूप से । जिस ढंग विशेषों को करने से आप "प्रभु" को प्रसन्न समझ रहे हो इसका तो कोई विचार ही नहीं है सुपने में भी । केवल आप के इन दुर्लभ-2 कार्यों विशेषों से "शैतानी ताकतों" की ही प्रसन्नता उपलब्ध हो रही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । "आंशिक रहन अलग" अर्थात इन महान-2 धन्धों विशेष तथा धर्म स्थानों विशेष-2 से "सच्चे आशिक" अथवा मोमन मुसलमान या शिष्य यानी के सिख विशेष परमार्थी का दूर-दूर तक कोई भी सम्बन्ध ही नहीं

है निश्चित रूप से क्योंकि "सच्चा मोमन" केवल एक अकाल पुरख "परमात्मा" का ही निरन्तर शौक़ विशेष रखने वाला ठीक ढंग से "आत्मा विशेष" है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "सच्चे आशिक" विशेष को अपने "प्रभु" के दुर्लभ आशियाने विशेष से निकलने की फुर्सत ही भला कब उपलब्ध होती है जो स्वंय को डुबोने के लिये आप के इन महान-2 दुर्लभ से कार्यो विशेषों में प्रत्यक्ष प्रस्तुत करे ! ये "दुर्लभ अंधा कुंआ विशेष" केवल आप की ही निजी "दुर्लभ संपत्ति" विशेष ही है निश्चित रूप से फिर सच्चा आशिक दूसरे की इस अमानत विशेष में कैसे दखल देवे ? किसी के अधिकार विशेष पर तीखी नजर विशेष रखना "सच्चे आशिक" के लिये कैसे कल्याणकारी हो सकती है कभी सुपने में भी ? इसीलिये "सच्चे आशिक" की आप सभी को दूर से ही आखिरी नमस्कार भली निश्चित रूप से प्रत्येक काल में केवल स्वंय के ही निज कल्याण हेतू यकीनी तौर पर !

"मिट्टी मुसलमान की पेड़े पई कुम्हिआर । घड़ भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार । जलि जलि रोवे बपुड़ी झड़ि-झड़ि पवहि अंगिआर । नानक जिन करते कारण कीआ सो जाणे करतार ।"

इस दुर्लभ प्रभु प्रेरणा में आत्मा की चतुराई ब्यान की गई है । मुस्लिम जगत में ये धारणा दृढ़ है कि यदि आग में जलने से प्राणी मरता है तो सीधा "दो जख" को प्राप्त होता है । ये धन्धा

भी मस्जिदों में रहने वाले मौलवियों अथवा कसबियों विशेषों का ही चलाया हुआ है निश्चित रूप से केवल मनुष्य जाति को अन्धे भयानक कुँऐ में ही पूरी तरह से डुबो देने के लिये यकीनी तौर पर । इसका कारण इस मुल्क की प्रचलित प्रथा के खिलाफ अपने को श्रेष्ठ स्थापित करने हेतू ही केवल निश्चित रूप से । यदि आपने मूँछ रखी है और दाड़ी कटवा दी है, तो मुसलमान ने मूँछ मुंडवा दी और दाड़ी रख ली । आप ने शिखा रखी और सिर मुंडवा दिया, तो उन्होंने शिखा कटवा दी आपने धोती पहनी, तो इसने लुंगी या सलवार पहन ली । आपने कफ रखे, तो इसने बिना कफ की कमीज बनाई । आपने सीधे हाथ धोये, तो इसने उल्टे हाथ धोये । आपने सीधा तवा रखा, तो इसने उल्टा रख लिया । आपने बायें से दायें को लिखा, तो इसने दायें से बायें को लिखा । आपने दायें से कापी किताब खोली, तो इसने बायें से खोली । आपने मंदर बनाये बुत पूजा के लिये, तो इसने बूत पूजक को "परमात्मा" का अपराधी विशेष काफिर ही घोषित करवा दिया तथा मन्दिर तोड़ कर वहाँ पर मस्जिद ही बनवा दी । आपने उपवास रखा, तो इसने रोजा रखना शुरू कर दिया बिना अन्न जल का आपने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, तो इसने हाथ खोल कर ऊपर उठाकर दुआ करनी शुरू कर दी । आपने घूंघट निकाला, तो इसने बुरका ही पहन लिया । आपने सूर्य को "प्रभु" माना तो इसने चाँद पर कब्जा विशेष कर "प्रभु" को ही कैद कर लिया । आपने गाय को

माँ कहा, तो इसने "सुअर" को बाप बना लिया । आपने बाप को हज्म किया तो इन्होंने माँ को हज्म करने का टैन्डर पास करवा लिया, अल्लाह के विशेष दरबार से । आपने झटका किया तो इसने हलाल शुरू कर दिया । आपने "गंगा-त्रिवेणी" को मुक्ति का अड्डा बनाया तो इसने "काबा के हज" को ही केवल पूर्ण मुक्ति घोषित कर दिया । आपने पगड़ी बांधी तो इसने टोपी पहन ली । आपने सफेद रंग अपनाया तो इसने छीन लिया और अपना लाल रंग जो गुलामी की निशानी था आपको जबरदस्ती पहना दिया, जो आपने आज तक अपना रखा है स्वंय की श्रेष्ठता समझ कर आपने एक औरत को जायज बताया तो इसने चार को जायज करार दे दिया बेशक घर में राशन का अभाव हो ! आपने मुर्दे को जला कर स्वर्ग में भेजा तो इसने कहा कि जलाने से "जहन्नुम" मिलता है सजा कर रखने से खुदा कयामत के रोज सभी मुर्दो को जिन्दा कर देगा और अपने पास बिठा लेगा "जन्नत" में तथा खूब आपकी खातिर अथवा मालिश विशेष-2 करेगा बढ़िया-2 दुर्लभ हूरों विशेषों से । ऐसे ही अनगिनत उल्टे धन्धे कसबियों विशेषों ने अपनी जमात विशेष में चलवा करके इन्सान को इन्सान से नफरत करना सिखा दिया तथा पूरी जमात को पापों से तौबा करने के बजाय केवल हज विशेष करने से ही मुक्ति दिलवा दी ताकी पाप होता रहे और अपना विशेष बाजार गर्म रहे निश्चित रूप से । जिसे अल्लाह की किताब कहा जाता है चूमता

चाटता है उसमें तीन चार पेज से अधिक का कुछ ज्ञान उपलब्ध नहीं है निश्चित रूप से खुद ही पढ़ कर देख लो । उसमें भी ज्यादातर इन्हीं कसबियों विशेषों ने ही अपना उल्लू सीधा कर रखा है निश्चित रूप से । "जकात" तथा "परहेजगारी" बस दो ही लफज कल्याणकारी हैं जो लगभग पूरी जमात विशेष को पूरी तरह से ही भूल चुके हैं निश्चित रूप से ! रास्ता बताने वाला कोई है नहीं, बस लकीर के फकीर हैं जान जाये बेशक पर अधूरी किताब न जाये निश्चित रूप से । मुर्दो के जिन्दा होने का इन्तजार किया जा रहा है स्वंय को मुर्दा बनाते हुऐ । केवल स्वर्गो के सुपने संजो रखे हैं जो मरने के बाद अपने आप उपलब्ध हो जायेंगे निश्चित रूप से । बहिश्त की भी बस दो चार बाते हैं केवल भोगों से सम्बन्धित, इसके सिवाय परमार्थ से पूरी तरह कोरे ही हैं लगभग सभी दुर्लभ विशेष-2 । कुछ फकीरों का ज्ञान था उसकी तो गहरी कब्र विशेष ही बन चुकी है निश्चित रूप से ! लगभग पूरी जमात काम-मांस तथा शराब इत्यादि बढ़िया-2 रोकेटों विशेषों में सवार होकर बहिश्तों की हवा विशेष यहीं पर अनुभव कर रही है । व्यवहारिक रूप से ट्रायल के रूप में केवल मौत के मुँह में आखिरी सांसे गिनते हुऐ निश्चित रूप से । लगभग यही धन्धा "ठग श्रेणी" के दुर्लभ प्राणियों विशेषों ने भी अपनी पूरी जमात विशेष को पूरी तरह से डुबोने के लिये चला रखा है। केवल "गंगा स्नान" से ही पूर्ण मुक्ति बांटी जा रही है । गया में सिर विशेष मूंडा जा

रहा है समस्त पापों सहित पूर्ण घोर मुक्ति के रूप में पहला पुत्र आवश्यक नरक विशेष कटवा देता है केवल पैदा हो कर ही स्वंय नरक भुगतते हुऐ ! केवल गाय की पूँछ पकड़वा कर ही घोर नरकों की भयानक आग वाली नदी पार करवा दी जाती है यजमान विशेष को यहीं से निश्चित रूप से । घोर-2 पापों को रोमों के सिरों पर इकट्ठा करवा दिया जाता है और फिर इन्हें काट कर बहा देते हैं गंगा में बस सब घोर-2 पापों विशेषों से छुटकारा मिल जाता है हर हफते निश्चित रूप से । बेचारी गंगा कैसे ढोती होगी सभी की घोर-2 पोटलियों विशेषों को ? माल पूऐ किसी के पेट विशेष को रोशन करते हैं और छुट्टी मिल जाती है आप के पितरों को सभी नरकों-निचली जूनों से - तथा वे सदा के वास्ते स्वर्गो को रोशन करने लगते हैं । "भोग पत्थर विशेष" को लगता है पेट ठग जी महाराज विशेष का फूलता जाता है निश्चित रूप से । प्रभु अथवा पत्थर सोया रहता है यही ठग जी महाराज सोये रह जाते है । पत्थरों को दूध से नहाने पर मन की सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं । ऋषियों के दुर्लभ ज्ञान-तप विशेष की तो कब्र विशेष ही बन चुकी है पूरी तरह से काफी गहरी अब इस कब्र विशेष को खोदने का किस के पास समय है ? "व्यवहारिक ज्ञान" पूरी तरह से लुप्त ही हो चुका है । देखा देखी सभी दूसरी जमातें भी पत्थर पूजा में ही पूरी तरह से डूब चुकी हैं निश्चित रूप से । यही हाल विशेष सिख जगत में भी हो रहा है पत्थर की जगह पर किताब

विशेष रख लो बस शेष सभी कार्य विशेष इसी जमात विशेष के ही धारण कर लिये हैं फिर से सिख जगत ने भी इन्हीं सब मुश्किलों से निकाल कर विशेष सिख जगत बनाया गया था । यह सिख जगत फिर से अपनी पुरानी चादर को पूरी तरह से लगभग ओड़ चुका है कफन के रूप में निश्चित रूप से । महंती प्रथा फिर से चल रही है ग्रन्थ विशेष की आड़ में "भयानक काण्ड" विशेष हो रहे हैं घर-2 में इसी महंती प्रथा विशेष के पीछे गुप्त रूप में निश्चित रूप से । केवल अंधा विशेष ही अंधो का दुर्लभ मार्ग दर्शन कर रहा है । नतीजा स्वंय ही लिख लो केवल अमृतसर,हेम-कुण्ड इत्यादि स्थानों विशेषों में दर्शन-स्नान से सभी घोर-2 पापों विशेषों से पूर्ण छुटकारा दिलवाया जा रहा है । "दलाल" पढ़ता है ग्रन्थों विशेषों को "पेज (पन्ने) पलट-2" कर "खुर्राट" भरता हुआ और आपके सभी दुर्लभ-2 कार्य विशेष पूर्ण समर्थ बना दिये जाते हैं निश्चित रूप से ! नानक के चरण नाम का एक "दुर्लभ पलेनेट" खोज लिया है "दलालों" विशेष ने सभी को पार्सल कर के भेजा जा रहा है बिना टिकट के केवल "दुर्लभ अरदास" विशेष कर के ही निश्चित रूप से । "ढोल" पीटता है खुद केवल सोया हुआ है निश्चित रूप से पर दूसरों को जगाने का दावा विशेष पेश करता है यकीनी तौर पर । नानक के नाम का बाजा बजता है तो गुरू जी बहुत प्रसन्न हो जाते हैं फिर विशेष खुशियों के पार्सल आपके घर पहुँचने से पहले पहुँचा दिये जाते हैं निश्चित

रूप से । सोने के पत्तर चढ़ा रहा है पत्थरों पर परन्तु स्वंय की आत्मा विशेष "अज्ञानता" के गहन काले स्याह अन्धकार में ही डूबी हुई है पूरी तरह से । जो दुर्लभ अपराध विशेष कोई नहीं कर सकता उसके लिये दाड़ी विशेष हाजिर है निश्चित रूप से । घूंघट क्या उतरा पूरा आवरण ही उतर गया तन दुर्लभ से यकीनी तौर पर । जीवन के बस तीन ही निशान मांस-मद तथा मन अथवा मनोरंजन रूपी दुर्लभ-2 कामनायें विशेष । शेष "दुर्लभ-2 बाराती" विशेष-2 समर्था के स्वंय ही एकत्र हो जाते हैं बिना कुछ भी विशेष यत्न के निश्चित रूप से । "दाड़ी" का दुर्लभ विशेष नाम गुर+मुख बताता है ढोल वाला बेचारा अवश्य थक जाता आवश्यक रूप से है पर "दाड़ी" विशेष नहीं थकती, बिना दुम वाले लंगूर विशेष की तरह से कूदते-फांदते हुऐ भाई "जल विशेष" जो छक रखा है निश्चित रूप से । किताब विशेष सोती है तो "प्रभु" जी बेचारे सो जाते हैं गहरी नींद भाई शोर मत करो कहीं "प्रभु" जी जाग ना जायें अथवा किताब विशेष न खुल जाये ! पता नहीं सृष्टि करामात से चलाते हैं "प्रभु जी सोये-2 ही" ? किताब विशेष को ठंडा-गर्म करने से "प्रभु जी" बहुत ठंडे अथवा गर्म होते हैं । "जल विशेष" को पीने से विशेष दुर्लभ "गुरू" वाले ही हो जाते हैं तथा गुरू जी अति प्रसन्न हो करके सभी घोर-2 पापों विशेषों से पूर्ण छुट्टी ही दिलवा देते हैं पूरी तरह से सदा के वास्ते अपने दुर्लभ चरण रूपी प्लैनेट विशेष में जगह विशेष उपलब्ध करवा देते हैं

निश्चित रूप से । इसी तरह के अनन्त धन्धे विशेष-2 "दलालों" विशेषों ने भी ठगों विशेषों की देखा-देखी फिर से पूरी जमात विशेष को भयानक अंधे कुँऐं विशेष में ढकेलने के वास्ते चला दिये हैं निश्चित रूप से । "शुद्ध रूहानी ज्ञान" की तो कब्र विशेष बना कर उसी पर नाचने कूदने में अपनी "दुर्लभ हस्ती" मनुष्य के जन्म को मिटा रहा है पूरा सिख जगत निश्चित रूप से । जो कुछ लिख कर के दिया गया है बिल्कुल इस से उल्टा ही कर रहा है दिन रात बिना रूके । यही हाल विशेष ईसाई जगत की जमात में उपलब्ध है निश्चित रूप से । काफी विकसित है इसलिये वस्त्र बहुत छोटा सा ही हो गया है । पता नहीं क्यों फिर भी गर्मी पीछा ही नहीं छोड़ती । स्त्री पुरूष दोनों मर्यादा लफज को भूल चुके हैं पूरी तरह से शायद इसीलिये कुछ चार पैरों वालों को भी अपने सभ्य समाज विशेष में प्रवेश दे ही दिया है आवश्यक रूप से ग्रीन कार्ड विशेष दे कर के ! मुर्दे सजा कर रखे जाते हैं जिन्दा करने के वास्ते शायद ! जिन्दा को बेशक प्रवेश न मिले परन्तु मुर्दो को ढाई गज जमीन ग्रीन कार्ड के साथ तुरन्त उपलब्ध हो जाती है । जगह कम पड़ेगी शायद इसीलिये पूरी धरती को कुचला जाता है साधन विशेष के बल पर अपना माल अथवा साधन विशेष कैसे बिकेगा ? जब दूसरे का घर विशेष जलेगा शायद इसीलिये प्रत्येक काल में माचिस विशेष जेब में रख कर चलते हैं आवश्यक रूप से । पता नहीं कब किसे "फूंकना" पड़ जाये । इस "फूंकने"

वाले "शुभ कार्य" विशेष में देरी नहीं होनी चाहिये निश्चित रूप से । सब पाप ईसा ले कर बेचारा सूली पर चढ़ गया अब कोई डर नहीं कोई देखने वाला नहीं है बस केवल लाठी विशेष पकड़ो और सब की हांक कर घर विशेष में ही ले आओ निश्चित रूप से । कल किस ने देखा है आज ही तुरन्त पूरी जिन्दगी भोग लो बिना आवरण के यकीनी तौर पर । अपना स्वार्थ विशेष पूर्ण सिद्ध होना चाहिये बेशक सारी दुनिया को "कब्रिस्तान" ही क्यों ना घोषित करना पड़े । साधन विशेष उपलब्ध होना चाहिये, चाहे माँ को ही ले जाओ अथवा चाहो तो बेटी हाजिर है । बाप बेटी के पेट से पैदा हो तो ऐसा हैरानी का कोई विषय ही नहीं है निश्चित रूप से । किताब विशेष को पवित्र कहा जाता है केवल एक ही "वर्ड" है बस । ये "वर्ड" विशेष भी क्या बला है कोई नहीं जानता । बिना मर्यादा के लफ्ज विशेष ही केवल दुर्लभ सभ्यता विशेष है ऐसा दावा पेश किया जाता है । ईसा "प्रभु" के बगल में बैठ कर आप के मरने का इन्तजार कर रहा है आपको फिर से जिन्दा कर देने हेतू । "प्रभु" बेटे विशेष पर बहुत प्रसन्न है इसलिये सब माल मत्ता बेटे के हवाले कर दिया है जैसे मर्जी बांटे ! शायद इसीलिये सब से छोटे दिन को सबसे बड़ा दिन घोषित किया जाता है तथा पार्सल आकाश से उतर कर आते हैं आप को समृद्ध बनाने हेतू । "मृत्यु" को जन्म दिन विशेष बताया जाता है । छोटी बीमारी से पेट नहीं भरता शायद इसी अभाव विशेष को दूर करने हेतू ही

"चाँद" पर "बड़ी सी महामारी" विशेष की दुर्लभ तलाश विशेष की जा रही है निश्चित रूप से । बिना पूँछ का विकसित प्राणी है शायद इसीलिये घास की बजाय मांस का व्यवहार अधिक पसंद करता है वो भी इन्सानी खून विशेष से लिबड़ा (भरा) हुआ निश्चित रूप से । अनीमिया का दुर्लभ विशेष रोगी है तभी पानी के बजाय रंगीन विशेष खून ही पीना पसंद करता है वो भी केवल विशेष मानव दुर्लभ का । शायद इसीलिये लेबर डिमान्ड बढ़ती ही जाती है प्रत्येक वर्ष निश्चित रूप से । खुद साक्षर बनने के बजाय दुनिया को साक्षर बनाना अधिक पसन्द करता है यकीनी तौर पर । "कब्रों" पर "फूलों दुर्लभों" को "कुर्बान" किया जाता है बेचारे "निरीह प्राणी !" कब्रों को डिक्टेशन विशेष-2 दी जाती है मुर्दो को प्रसन्न रखने का पूरा प्रयत्न किया जाता है शायद इसीलिये नियम से मुर्दो की मालिश विशेष की जाती है । "शैतानी" उपलब्धियों को "प्रभु" की दुर्लभ दया घोषित किया जाता है । शायद इसीलिये बड़े-2 पुरस्कारों को आयोजित किया जाता है निश्चित रूप से केवल डूब जाने के हेतू ही पूरी तरह से अपना पेट फूलना चाहिये दुनिया बेशक भूखी मरे अथवा पिचक जाये । मरने से डरता है शायद इसीलिये गले में फंदा विशेष बांध कर चलता है निश्चित रूप से । जब दुनिया का सूरज डूब जाता है तब इस की आँख खुलती है । शायद केवल रात में देखने वाले "दुर्लभ प्राणी" विशेष की ही बिरादरी दुर्लभ का निकट सम्बन्धी दिखता

है निश्चित रूप से । दिन के सभी कार्य विशेष रात में किये जाते हैं तथा रात के सभी कार्य विशेष केवल दिन में ही सब के समक्ष बिना आँखों विशेष के सम्पन्न किये जाते हैं निश्चित रूप से । विशेष खोजी प्राणी है शायद इसीलिये दूसरे अथवा विपक्ष के निजी सुरक्षित क्षेत्र का ही निरन्तर मुआयना विशेष ही करता रहता है यकीनी तौर पर । इनके यहाँ साधन विशेष पेड़ों विशेष पर लटके हुऐ मिलते हैं चाहे जितने तोड़ लो "ऊपर चढ़" कर केवल विशेष तौर पर "चड्डी उतारे ।" यदि आप को भी यह अभ्यास दुर्लभ उपलब्ध है पेड़ पर चढ़ने का तो अवश्य मौके का फायदा उठा लो फट से ग्रीन सिगनल मिल जायेगा ! शायद इसीलिये सभी इसी होड़ में लगे हैं बिना पुरूषार्थ विशेष के सम्पन्न होने हेतू निश्चित रूप से । तभी हवाई सेवा में बहुत रश (भीड़) है । सभी शीघ्र पहुँच जाना चाहते हैं । कहीं हम से पहले कोई दूसरा पहुँच कर मालामाल न हो जाये और हम टापते ही रह जायें विशेष तौर पर । शायद इसीलिये यहाँ भी विशेष-2 "जिम" खुल गये हैं खूब "अभ्यास" होता है इस "विशेष क्रिया" में प्रवीण होने के लिये दिन रात बिना रूके विशेष तौर पर ! इसी तरह मुर्दो को भी पढ़ाया जाता है क्योंकि जीवित तो पढ़ना पसन्द ही नहीं करता । समय का अभाव रहता है इसीलिये शायद सातवें में ही जन्म धारण कर लिया जाता है । रोज कोई न कोई "ताली पीटने" का साधन उपलब्ध करवाने के लिये "दलाल लोग" निरन्तर नई-2 दुर्लभ-2

खोजों में ही व्यस्त रहते हैं ताकी दुनिया मुंढती रहे और अपनी दाड़ी विशेष लम्बी होती रहे विशेष तरह से निश्चित रूप से । गला काटो और बस प्रार्थना कर दो जड़ विशेष के समक्ष, सब घोर-2 अपराधों विशेषों से पूर्ण छुट्टी मिल जायेगी निश्चित रूप से । आप में "कत्ल विशेष" का हौंसला होना चाहिये साधन जितने चाहो निरन्तर उपलब्ध रहते हैं यकीनी तौर पर । दूसरे की विशेष उपलब्धी को अपने नाम पर ट्रांसफर करने में काफी विकास किया है विशेष तौर पर । "विशेष माँस" देखते ही लार टपकने लगती है "खूनी भेड़िये" की तरह से । "विशेष मस्सों" के कारण जमीन पर नहीं बल्कि "कुर्सी विशेष" पर ही बैठना पसंद करता है । बिना खटखटाये सब कुछ दुर्लभ भी केवल खुला ही मिलता है निश्चित रूप से । बिना पुकारे विशेष रूप से सुनने का अधिकार विशेष लिये फिरता है सब कुछ हज्म कर जाने हेतू ही यकीनी तौर पर । "बेटा" सदा "बाप" के बगल में बैठता है शायद इसीलिये "बाप बेटी" भी इकट्ठे बैठने का विशेष अभ्यास दिन में भी करते ही रहते हैं निश्चित रूप से । एक के बाल की शक्ल किसी के बाप से मिलती हो तो आप को हैरान नहीं होना चाहिये । बाल की उपलब्धी बिना जन्मदाता के परेशानी का कोई विषय ही नहीं है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से । "नये प्रवेश" के लिये "निषेध" का पूरा इन्तजाम रहता है सर्वत्र सुविधा अनुसार काफी विकास किया है निश्चित तौर पर । सभी अन्दर की "दुर्लभ संपत्ति" विशेष

भी प्लेटों में सजा कर सर्वत्र सुविधा अनुसार उपलब्ध रहती है । हाथ की अगुलियों में "फंगस विशेष" प्रत्यक्ष उपलब्ध रहती है शायद तभी "कांटो विशेष" का प्रयोग किया जाता है, टांगों में "रिकेटस विशेष" है शायद इसीलिये तैरना अधिक पसन्द करता है । घर में "पैरा थीमा पोस्थीमा" की अधिकता होने से काफी भीड़-भाड़ होती है शायद इसीलिये "क्लव विशेष" में ही ज्यादातर रहने की विशेष रूचि रखता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "गंद विशेष" को छूने की बजाय चाटना अधिक पसन्द करता है । नीचे का "कार्य विशेष" ऊपर तथा ऊपर का कार्य विशेष नीचे करने में अधिक रूचिकर साबित होता है विकसित प्राणी विशेष तौर पर । इसी "अविष्कार दुर्लभ" के नियम अनुसार आगे का "कार्य विशेष" भी पीछे से सम्पन्न करने में ही अधिक प्रयन्नशील रहता है निश्चित रूप से । "स्त्री विशेष" को स्त्री तथा "पुरूष विशेष" को केवल पुरूष ही अधिक पसन्द आते हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से जीन्स की समरूपता के कारण शायद । प्रत्येक आवश्यक "पेशी" विशेष को "विकसित" करने का पूरा "पौष्टिक आहार" सदा उपलब्ध ही रहता है सर्वत्र यकीनी तौर पर । अपना "बाल" पालने के बजाय उल्लू अथवा कूकर-सूकर-घोड़ा इत्यादि जानवर पालने का अधिक शौंकीन है "दुर्लभ विकसित प्राणी ।" "पूर्ण मुक्ति" केवल "भोग विशेष" में ही स्थापित कर चुका है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "मिलना विशेष"

पहले तथा "सर्टिफिकेट" बाद में लेना अधिक पसन्द करता है निश्चित रूप से । "सर्टिफिकेट" भी जब चाहे गले में बांध लो जब चाहे "म्युनस्पिल" वालों को फोन कर करके उपलब्ध करवा लो, ले जाने के वास्ते सदा के लिये "छुट्टी" मिल जाती है इस "दुर्लभ महामारी विशेष" से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में, "मानव" के बजाय "जानवर विशेष" में अधिक रूचि रखी जाती है । इसी कारण चबाने की बजाय चाटने या चटवाने में अधिक रूचि रहती है ताकी "हाजमा विशेष" अधिक मजबूत बने । "हाजमे" विशेष के कमजोर रहने के कारण ही शायद "पीने" पर अधिक ध्यान दिया जाता है विशेष तौर पर । "सफेद रंग" के बजाय "लाल रंग" विशेष को तुरन्त हज्म करने में अधिक समर्थ है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर "विकसित प्राणी दुर्लभ ।" अपने "पत्थर तराशे" हुऐ विशेष को दूसरों के तराशे हुऐ से "सर्वश्रेष्ठ" स्थापित करता है पूर्व समर्था का "सदुपयोग विशेष" करते हुऐ निश्चित रूप से "पूरी दुनिया" में यकीनी तौर पर । इन्हीं दुर्लभ-2 खूबियों विशेष के कारण ही इसका रंग भी सफेद के बजाय "लाल अधिक" है । दूसरे को छोटा तथा अपने को बड़ा बताता है इन्हीं विशेष-2 विशेषताओं दुर्लभ के कारण । मेरूदण्ड में "सैल्यूलाइटस" विशेष होने के कारण "झुकने" के बजाय "तन" कर रहना अधिक आवश्यक है निश्चित रूप से केवल स्वंय के ही "आवश्यक स्वास्थ्य वर्धन" के लिये यकीनी तौर पर प्रत्येक काल

में । "नाम विशेष" की बजाय "काम विशेष" में ही केवल "निजी कल्याण" स्थापित करता रहता है निरन्तर दिन रात बिना रुके निश्चित रूप से । जिस दुर्लभ प्राणी विशेष में इसी तरह की मिलती जुलती और भी बहुत सी अनगिनत विशेषतायें हो तो केवल एक दुम की कमी अथवा अभाव के कारण उसे सर्वश्रेष्ठ विकसित होने के दुर्लभ अधिकार विशेष से भला कैसे वंचित रखा जा सकता है ! "प्रभु" की विशेष कृपा का ये दुर्लभ विकसित प्राणी अवश्य अधिकारी है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इसलिये "प्रभु" शीघ्र ही इस की यह दुम विशेष की कमी को भी अवश्य आवश्यक रूप से दूर कर ही देंगे निश्चित रूप से । आखिर "प्रभु दयाल" ही हैं । इन "विशेष दुर्लभों" पर यह "प्रभु" की दुर्लभ कृपा अवश्य प्रत्यक्ष होगी शीघ्र ही यकीनी तौर पर । "आकाश में-जल में-थल में-घोर-2 पार्कों" विशेषों में स्वतंत्र विचरने के साधन विशेष सभी और भी खूबियों सहित अवश्य उपलब्ध होंगे निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार गाँठ बाँध लो यकीनी तौर पर । फिर इन दुर्लभों विशेषों का "अनुसरण" करने वाला विशेष-2 प्राणी विशेष भी होने वाली महान-2 उपलब्धियों विशेषों से भला कैसे बेदखल किया जा सकता है निश्चित रूप से ! अर्थात इन "अनुसरण" करने वाले "दुर्लभों विशेषों" को भी "प्रभु" के "दरबारे खास" से ये "दुर्लभ-2 इनायतें" अवश्य उपलब्ध होंगी ही आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से । "प्रभु" के पास देर बेशक

हो पर अंधेर का तो कोई प्रश्न ही नहीं है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । फिर देर भी दुर्लभों की भीड़ के कारण ही है निश्चित रूप से "प्रभु के दरबारे खास" में । यदि आप को भी इन दुर्लभ-2 इनायतों विशेष का शौंक है तो फिर आप भी शीघ्र ही अपने अन्दर इन्ही तरह की और भी विकसित खूबियों को प्रत्यक्ष उपलब्ध करो ताकी "प्रभु" की आप पर भी इन दुर्लभों से बढ़कर "कृपा विशेष" प्रत्यक्ष उपलब्ध हो और आप को इन दुर्लभों से भी अधिक विकसित प्राणी घोषित किया जा सके "दुनिया विशेष" में निश्चित रूप से । जिन्हें यही सब बताने के लिये "प्रभु" से समर्था दी गई उनका क्या धन्धा है ? "मुर्दो विशेषों" को देखो बस "पूर्ण मुक्ति" आप के घर पहुँचने से पहले ही आप को गले विशेष का हार बनने हेतू बड़ी बेताबी से तड़पते हुऐ आप के आने का इन्तजार करती हुई मिलेगी निश्चित रूप से । "प्रभु" को तो निश्चित रूप से जन्मदिन का "केक विशेष" के रूप में बदलने का "आविष्कार दुर्लभ" ही कर लिया है निश्चित रूप से । तभी तो पहले विशेष महाराज-हजूर-पातशाह-बाबा-संत-महन्त विशेष-2 इत्यादि पहले स्वंय को "दुर्लभ जन्म" दे कर के स्थापित करते हैं फिर उपलब्ध "नपुंसकों विशेषों" को "प्रभु" को तबदील किये गये "केक विशेष" में से स्थापित स्लाईज़ काट कर "दुर्लभ दान विशेष" दिया जाता है जिससे अपनी तरह का दुर्लभ जन्म विशेष ही हो जाता है नपुंसको विशेषों का निश्चित रूप से तुरन्त ! अपने

जन्म होने में नौ महीने का समय विशेष लगाना पड़ा ये अलग विषय है। फिर जिन्दगी भर सभी ताली पीटते हैं नाचते कूदते हैं मुबारकें बांटते हैं स्वंय के अमर होने की ! "मुर्दा विशेषों" को देखने तथा "दुर्लभ-दान" विशेष रूपी "केक" को चाटने का यह दुर्लभ लाभ उपलब्ध होता है कि ये दुर्लभ-2 पातशाह विशेष-2 इत्यादि बड़े-2 हजूर महाराज विशेष-2 केवल आप के मरने का इन्तजार भर करते रहते हैं कि कब आप के प्राण निकलें और ये "दुर्लभ पातशाह विशेष" आप को भूत की तरह से प्रत्यक्ष हो कर कंधे पर बिठा लेंगे और ले कर दौड़ पड़ेंगे अपने ही बनाये हुऐ "विशेष-2 निकृष्ट सचखण्डों" में बिना किसी भी विघ्न बाधा के ये "परमात्मा के भी बाप" आप को वहाँ पर जबरदस्ती पहुँचा कर के ही दम लेंगे निश्चित रूप से । अगर आप की आवश्यकता कुछ अधिक बड़ी है तो फिर आप को इनके "सत्संग विशेष" सुनने पड़ेंगे ताकि आपको इनकी स्वनिर्मित "दुर्लभ निकृष्ट सचखण्ड" नाम की विशेष-2 कालोनियों में कुछ बड़ा सा प्लाट विशेष-2 सुविधाओं सहित उपलब्ध हो सके निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । यदि आप का परिवार कुछ अधिक बड़ा है तो फिर तो भाई आप को इन विशेष-2 महान-2 दुर्लभों यानी के "मुर्दा विशेषों" का "ध्यान" विशेष भी करना ही होगा "आयु पर्यन्त" निश्चित रूप से । फिर आप की सभी बड़ी-2 जरूरतें भी खींच-खांच कर अवश्य विशेष महाराज की दुर्लभ पूर्ण कर ही देंगे निश्चित रूप से

यकीनी तौर पर । आप का "चतुर दर्जी" भी तो कपड़ा थोड़ा होने के बावजूद पट्टा डालकर सुत्थण (सलवार) सी ही देता है निश्चित रूप से । दुनिया को (आप सहित) "झांसा विशेष" देने में समर्थ हो ही जाता है "कपड़ा थोड़ा" होने के बावजूद "चालाक टेलर मास्टर विशेष ।" किसी को भी सुत्थण में लगी "टाकी (टुकड़ा) विशेष" बाहर से तो दिखाई ही नहीं देती निश्चित रूप से । भाई फिर भला किसने कमीज उठा कर के कुछ विशेष देखना है क्या ? अगर कोई देखेगा भी तो उसे पता ही नहीं चलेगा क्योंकि विशेष "महाराज जी" ने जोड़ विशेष मिलता जुलता जो लगाया है कपड़े के रंग-डिजाईन के अनुसार निश्चित रूप से । भाई वाह महाराज जी पूरे "चतुर खिलाड़ी" हैं इस विशेष सिलाई के धन्धे विशेष में भाई इन महाराज जी विशेष का "पुश्तैनी धन्धा विशेष" है यह "टांका विशेष" लगाने का । पिछली कई पीढ़ियों से ये इसी टांका विशेष लगाने वाले धन्धे विशेष में ही पूरी तरह से कुल-परिवार-संबंधियों तथा मित्रों सहित पूरी तरह से पूर्ण ईमानदारी विशेष के साथ मशगूल हैं निश्चित रूप से । भाई अब तो काफी निपुण हो गये हैं ये दुर्लभ विशेष-2 महाराज जी अथवा पातशाह-बाबा-संत इत्यादि केवल दृष्टि मार कर के ही कपड़ा ही पूरा कर देते हैं निश्चित रूप से ताकी "जोड़" अथवा "टांका विशेष" लगाना ही नहीं पड़ता । भाई है ना कमाल की "चमत्कारिक उपलब्धी !" भाई पिछले जन्म में काफी तपते रहे हैं तभी तो इस बार "प्रभु"

की "विशेष दया" उपलब्ध हुई है केवल दृष्टि मार कर ही जहर को अमर कर दिया जाता है ताकि आपको कोई भी जीवाणु नाशक विशेष तौर से प्रभावित ही न कर सकें निश्चित रूप से । अर्थात आप के प्राण आसानी से उपलब्ध हो सकें "शैतानी ताकतों" को विशेष रूप आवश्यकता अनुसार यकीनी तौर पर । लफजों विशेष में "प्रभु" को कैद कर रखा है महाराज-बाबा-हजूर-पातशाह जी ने निश्चित रूप से । किस में भला समर्था है "प्रभु" बेचारे को इस "दुर्लभ कैद" विशेष से स्वतन्त्र करवाने की ? बाबा इत्यादि विशेषों से टक्कर लेने का हौसला किसमे है ? "प्रभु" बेचारे की सिसकियां दुर्लभ देखने सुनने वाला कोई भी उपलब्ध ही नहीं है निश्चित रूप से । बेचारा "प्रभु" भूखा प्यासा आजाद होने के लिये तड़प रहा है । बिना बाबा इत्यादि विशेषों से मोहर लगवाये अथवा इजाजत लिये आप कैसे समर्थ हो सकोगे "दीन प्रभु" से बात तक करने में भी ? "बेटा" यानी के "प्रभु" बेचारा बेशक राजी न हो परन्तु इस दीन से बेटे "प्रभु" का बाप विशेष दुर्लभ यानी के बाबा अथवा हजूर-पातशाह इत्यादि विशेषों का प्रसन्न होना निश्चित रूप से अवश्य आवश्यक ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर यदि केवल अपना निज कल्याण चाहते हो तो ! बाबा इत्यादि विशेष के माथे पर लकीर अथवा वट आप के कुल-वंश के डूबने का निश्चित सर्टिफिकेट है यकीनी तौर पर । बाबा अथवा हजूर महाराज जी इत्यदि विशेषों के दाँतों की

दुर्लभ चमक विशेष में आप की कई पीढ़ियों की "पूर्ण मुक्ति दुर्लभ" कैद है निश्चित रूप से । इन बाबा विशेषों इत्यादि के सिर ताज विशेष का बोझा ढोने में ही केवल असमर्थ है वरना इन्होंने तो अपने तख्त विशेषों के नीचे कई दुर्लभ-2 सलतनतें ही दबा कर छुपा रखी हैं ! जो चाहे निकाल कर आपके हवाले कर देवें ! इनके लिये इन फिजूल की सलतनतों का भला क्या अर्थ हो सकता है निश्चित रूप से ? ये अलग बात है कि बिना चबाये आपके दुर्लभ गुप्त "सुरक्षित आवश्यक भविष्य" विशेष को भी पूरी तरह से हज्म कर अथवा निगल जाने का इनका "दुर्लभ पुश्तैनी धन्धा" विशेष ही है निश्चित रूप से दुर्लभ-2 बाबा या हजूर-महाराजों-पातशाहों इत्यादि विशेषों का निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ! दुनिया को गहन अमावस रूपी दुर्लभ रोशनी का "दुर्लभ दान" विशेष उपलब्ध करवाने में इनकी कोई भी प्रतिस्पर्धा हो ही नहीं सकती निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर, जो आप का "दुर्लभ मार्ग दर्शन" विशेष करेगी "घोर-2 पापों" विशेषों तक आप को निर्विघ्न पहुँचाने हेतू ही निश्चित रूप से । "हरि सो हीरा छाड के करहु आन की आस । ते नर दो जख जाहिगे सत भाखे रविदास !" जो आत्मा एक "अकाल पुरख परमात्मा" को छोड़ और-2 पातशाहों-हजूरों-पातशाहों-बाबे विशेषों इत्यादि दुर्लभ-2 महंतो के पीछे अपनी "दुर्लभ हस्ती मनुष्य जन्म" को गंवा रही है निश्चित रूप से केवल डूबने का ही

प्रमाण पत्र विशेष अपने ही हाथों से लिख कर अपने ही गले विशेष में बांधने का दुर्लभ कार्य विशेष सम्पन्न करने में ही केवल पूरी तरह से व्यस्त हैं निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "भण्डारों विशेष" की "दुर्लभ कीचड़" में "दुर्लभ स्नान" विशेष का एक ही "दुर्लभ फल" विशेष है निश्चित रूप से "दोजख" की "दुर्लभ सैर" विशेष रूप से अनन्त काल तक के लिये सभी दुर्लभ-2 सुविधाओं सहित जो आपके इस "दुर्लभ कब्रिस्तान" विशेष में कभी सुपने में भी उपलब्ध होना केवल असंभव लफज विशेष को ही सार्थक बनाने में मदद करना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । जो स्वंय एक अक्षर विशेष पढ़ने में भी व्यवहारिक रूप से केवल असमर्थ ही रहे भला आप को डिग्री विशेष देने में कैसे समर्थ हो सकते हैं ? आप जिन को डिग्री अथवा चाबी विशेष समझ रहे हो "आत्मिक मौत" मरने का निश्चित रूप से प्रमाण पत्र ही है आत्मा विशेष के लिये प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । बचने का इकलौता केवल निश्चित साधन विशेष "परम चेतन सत्ता" को "जीते जी" ही केवल प्रत्यक्ष अनुभव कर लेना है निश्चित रूप से । आप प्रेतों (बीत गयों) विशेषों को गाँठ बाँध बैठे हो । "कब्रों" विशेषों को पूजने-ध्यान करने में ही केवल अपने दुर्लभ जन्म विशेष को पूरी तरह मिटा रहे हो । फिर नतीजा मुक्ति विशेष का उपलब्ध होना कैसे सम्भव हो सकता है ? "विष" को चाटने-पूजने-ध्यान इत्यादि

विशेष-2 कर्मकाण्ड करने से तो केवल आत्मिक मौत विशेष ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । चाबी केवल शब्द विशेष अर्थात "रागमई प्रकाशित आवाज" ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "सुरत सब्द भवसागर तरीऐ-नानक नाम बखाणे ।"

"सुरत" यानी के आत्मा "सब्द" यानी के केवल "रागमई प्रकाशित आवाज ।" भवसागर यानी के उपलब्ध "भयानक कुँआ" अनन्त घोर-2 नरकों तथा निचली निकृष्ट भोगी जूनों विशेष में ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ । "तरिऐ" अर्थात इस "भयानक अन्धे कुँऐं" विशेष से निकलने का निश्चित साधन अथवा बचने का उपाय विशेष । "नाम" यानी के केवल "प्रकाश दुर्लभ" जो जड़ चेतन में निरन्तर भरपूर समाया हुआ है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । अर्थात केवल यही "रागमई प्रकाशित आवाज" ही आत्मा को इन "भयानक-2 नर्कों" विशेषों से निकालने तथा स्वंय को "निज घर" विशेष तक पहुँचाने का "निश्चित उपाय" अथवा "साधन " विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । इस भेद विशेष का पता "साध" यानी के इन्द्रियों के व्यवहार से ऊपर उठने वाली "दुर्लभ आत्मा विशेष" से ही चलता है निश्चित रूप से, जो आप को पाँच सौ वर्ष पहले ही लिख कर के दे दिया गया था । "संग" का भाव है केवल प्रमाणित लिखित विशेष का व्यवहारिक स्वरूप

होना आत्मा विशेष के लिये निश्चित रूप से । ना कि "फेरे" विशेष ही ले लेने विशेषों दुर्लभों से जिन्दगी भर के लिये केवल स्वंय को डुबोने हेतू ही निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "अमल" विशेष आपने केवल अपनी निजी जिन्दगी विशेष में ही करना है या स्थान विशेषों पर स्वंय की "मौत की लड़ियाँ" विशेष-2 बांध कर । "भूखों" के लिये "अन्न के सतर" चला रहे हो या विशेष भूखों को और बड़ा सा गरीब बनाने में ही केवल मददगार विशेष साबित हो रहे हो ? आप के सभी बंदोबस्त विशेष-2 केवल अधूरे ही साबित हो रहे हैं अर्थात गरीब तो रोज थोड़ा सा और गरीब होता ही जा रहा है केवल बड़ा सा गरीब विशेष बनने के हेतू ही निश्चित रूप से । फिर भी आप अपने को औरों से श्रेष्ठ ही स्थापित कर रहे हो । केवल साधन सम्पन्न को और अधिक अन्न उपलब्ध करवाते हुऐ केवल भूखे को शीघ्र ही पूरी तरह से भूखा मारने के हेतू ही व्यस्त हो निश्चित रूप से। सृष्टि केवल कर्म विशेष पर ही आधारित है निश्चित रूप से, आप उसे बदलने में केवल असमर्थ ही साबित होओगे प्रत्येक काल में निश्चित रूप सेv। भूखी आत्मायें विशेष वहीं हैं जो उपलब्धी विशेष का केवल दुरूपयोग ही करती रहीं काल विशेष में निश्चित रूप से । आप भी "प्रभु" को भूलने का अपराध विशेष ही कमा रहे हो निश्चित रूप से प्रत्यक्ष उपलब्धियों विशेषों का दुरूपयोग करते हुऐ, अगले जन्मों में केवल स्वंय को ही भूखा रखने हेतू ही यकीनी तौर पर । आत्मा

अथवा मुर्दो विशेषों को किस दुर्लभ कल्पना विशेष से "परमात्मा " विशेष स्थापित करने में स्वंय को पूरी तरह से डुबो रहे हो निश्चित रूप से ? एक बड़ा सा दुर्लभ "कैदी" विशेष दूसरे "कैदी" को मुक्ति की डिग्री विशेष ही बांट रहा है निश्चित रूप से ! फिर सभी कैदी दुर्लभ भयानक कैदखाने में ही केवल उम्र कैद रूपी मुक्ति विशेष का "दुर्लभ जशन" "भण्डारे विशेष" के रूप में सम्पन्न करने अथवा मनाने में ही व्यस्त हैं बुरी तरह से निश्चित रूप से । "सच्चे सबद सची पत होई" अर्थात केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" ही सृष्टि का आधार सब को प्रत्यक्ष कर निरन्तर धारण करने वाला प्रत्येक काल का निश्चित रूप से "सत" यानी के सच्चा है यकीनी तौर पर । आप मुर्दे यानी के लफज विशेषों को अथवा प्रेतों मुर्दो को ही सच्चा विशेष स्थापित करने में ही केवल स्वंय को व्यस्त किये हुऐ हो । इन से आप को झूठा मान या सत्कार तो अवश्य उपलब्ध हो सकेगा "सच्ची ताकतों" से पर "सची पत" प्राप्त करने में "प्रभु" को प्रत्येक काल में केवल असमर्थ ही साबित होओगे निश्चित रूप से । इसीलिये "शब्द" तथा "पत" के साथ सच्चा लफज विशेष का प्रयोग हुआ है क्योंकि आप केवल झूठे विशेष को ही सच्चा स्थापित करते हुऐ स्वंय को श्रेष्ठ स्थापित करोगे । इस भ्रम से "सच्ची परमार्थी आत्मा" अथवा मोमन विशेष को सावधान किया गया है विशेष तौर पर निश्चित रूप से । "बिन नावे मुक्त न पावे कोई ।" नाम अर्थात केवल

प्रकाश आत्मा के मुक्त होने का इस "प्रकाश दुर्लभ" विशेष के सिवाय और कोई भी साधन ही नहीं है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर। "बिन सतगुरू को नाम न पाये "प्रभ" ऐसी बणत बनायी है ।" अर्थात "प्रभु" यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" ने अपने एक निज दुर्लभ गुप्त विशेष "रागमई प्रकाशित आवाज" को प्रत्यक्ष किया है कुल आलम विशेष को प्रत्यक्ष करने हेतू ही निश्चित रूप से । उसी शब्द विशेष अर्थात "रागमई प्रकाशित आवाज" को ही "गुरू लफज" विशेष से ब्यान किया गया है भेद विशेष के रूप में । जो प्रत्येक काल में सृष्टि का प्रत्यक्ष रहने वाला निश्चित रूप से केवल पूर्ण "सत" ही है जो केवल "प्रभु" शौंक दुर्लभ से ही प्रत्यक्ष होता है यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । बिना "प्रभु" की दुर्लभ रजा अथवा "दया विशेष" के ये सतगुरू नाम का दुर्लभ नाम अथवा प्रकाश विशेष कभी सुपने में भी उपलब्ध होना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो । अब इन लफजों के दोहरे अर्थ होने के कारण बहुत से अधूरे श्रेणी विशेष के हजूरों-पातशाहों-महाराजों-बाबों विशेषों इत्यादि ने संसार को केवल डूबने के लिये सदा के वास्ते इसी भयानक अंधे कुँऐं में, "अनर्थ" विशेष प्रचारित कर दिये हैं तथा स्वंय को "निकृष्ट केवल झूठा परमात्मा" विशेष ही स्थापित किया हुआ है निश्चित रूप से । "प्रभु" ने बणत यानी के ढंग इस "खेल विशेष" का कुछ इस तरह से बनाया हुआ है

कि आत्मा के डूबने के लिये नौ घर विशेष रखे हैं तथा बचने का केवल एक ही घर विशेष उपलब्ध किया है जहाँ पर कि स्वंय को छुपा कर के ही रखा हुआ है निश्चित रूप से । आप में कुछ कला हो सकती है पर "प्रभु" सब के दुर्लभ विशेष पिता के भी पिता श्री "सर्वकला सम्पूर्ण" यानी के सभी चालाकों के भी "दुर्लभ सरदार विशेष महाचतुर" ही हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो ।

जहाज विशेष में बहुत बड़ा मोरा अर्थात छेद विशेष सा हो चुका है । बहुत तेजी से जहाज विशेष में पानी विशेष भरता चला जा रहा है । इससे पहले कि जहाज विशेष पूरी तरह से समुंद्र के गर्भ विशेष में समा अथवा डूब जाये सदा के लिये सभी यात्रियों विशेषों को ताकीद की जाती है कि तुरन्त जहाज विशेष को छोड़ देवें । केवल स्वंय की ही निजी जान विशेष की सुरक्षा हेतू ही निश्चित रूप से । यह है आज की "ताजा खबर" विशेष केवल आत्मा के "निज कल्याण" हेतू ही निश्चित रूप से "मिट्टी" अर्थात कर्म विशेष । मुसलमान यानी के आत्मा दुर्लभ विशेष । कुम्हार यानी के केवल "अकाल पुरख परमात्मा" "दुर्लभ खास" "घड़ि भांडे" अर्थात उपलब्ध दुर्लभ-2 शरीर विशेष । "इटा किया जलदी करे पुकार" यानी के जब कुम्हार मिट्टी से बर्तन बनाता है तरह-2 के तब बनाकर बर्तनों को पक्का करने के लिये भट्टी

विशेष पर चढ़ाता है । इसी तरह से "प्रभु" नाम का कुम्हार विशेष भी जब बर्तन रूपी शरीर विशेष बनाता है प्रत्येक आत्मा विशेष के लिये तो उसका आधार भी बर्तन बनाने के आधार रूपी मिट्टी की तरह से केवल "जीवात्मा" का केवल अपना कमाया हुआ कर्म विशेष ही होता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । ऐसा नहीं है कि "प्रभु" केवल अपनी मर्जी से ही एक आत्मा को कीड़े का शरीर और एक आत्मा को मानव का दुर्लभ शरीर (जो मुक्ति का केवल निश्चित साधन ही है।) विशेष उपलब्ध करता है । यह शरीर विशेष केवल आत्मा विशेष की अपनी निजी वासना रूपी "पुकार" विशेष ही है निश्चित रूप से जो केवल आत्मा विशेष की वासनाओं विशेषों को सदा के वास्ते मिटा अथवा "जला" देने का "दुर्लभ साधन" विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "जलि-जलि रोवे बपुड़ी झड़-झड़ पवह अंगिआर" अर्थात जैसे बर्तन को पकाने के लिये आग का सेक दिया जाता है तब मिट्टी रोवे अर्थात तिड़कती है तथा उसमें से कच्ची मिट्टी की खोट रूपी चिंगारियाँ प्रत्यक्ष होती हैं तथा इन खोट विशेष के निकल जाने से शेष बर्तन पवित्र अथवा मजबूत बन जाता है, उसी तरह से आत्मा विशेष भी जब इन भोगी शरीरों को उपलब्ध करवा कर केवल अपनी वासनाओं की पूर्ति हेतू ही निश्चित रूप से "घोर-2 नर्कों" विशेषों में "जलि जलि रोवे" अर्थात भुगतान देते हुये बहुत 2 रोती चिल्लाती है तौबा करती है अपने द्वारा किये गये

पापों विशेषों से निश्चित रूप से सदा के वास्ते, "नर्कों की भयानक-2 आगों" विशेषों में बार-2 इसे पवित्र करने के लिये ही केवल अनन्त काल तक के लिये जलने के वास्ते अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है आत्मा विशेष को निश्चित रूप से । ये मिसाल उस समय ब्यान की गई जब जुल्म की मुस्लिम हुकूमत विशेष राज कर रही थी पूरे मुल्क में "कसाबियों" ने पढ़ा रखा था जुल्म की मुस्लिम सरकार को, कि मुर्दा सजा कर रख दो सब पापों से छुट्टी मिल गई निश्चित रूप से । यदि जलाओगे तो सीधा जहन्नुम में ही जाओगे । यानी के बेशक पाप कमाते रहो केवल जल कर नहीं मरना "प्रभु" कयामत के रोज सभी मुर्दों को जिन्दा कर देगा और अपने बगल में जगह दे देगा निश्चित रूप से सभी दिव्य-2 रोगों सहित निश्चित रूप से । इसका नतीजा ये निकला कि पूरे देश भर में इन्सानी खून की नदियाँ विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध करवायी जाती रही यकीनी तौर पर स्वंय को केवल पूर्ण मुक्त विशेष समझते हुऐ ही, "सिर्फ मुसलमान" बन कर ही निश्चित रूप से । एक ही मिसाल से शेष सभी कुछ स्पष्ट हो जाता है, वो है "नौ रोजे का मेला" विशेष । जिस अकबर को आप न्याय प्रिय बादशाह स्थापित करने में लगे हो उसकी असलियत यह नौ रोजे का मेला विशेष है निश्चित रूप से । यह मेला विशेष अकबर ने अपनी औरत की हवस विशेष को पूरा करने हेतू ही केवल इस ढंग से प्रस्तुत किया था कि इस मेले विशेष में केवल औरत ही

खरीद फरोक्त करने के हेतू ही स्वंय को प्रस्तुत कर सकती है । मर्दो का प्रवेश इस मेले विशेष में पूरी तरह से वर्जित ही था निश्चित रूप से बहुत सख्ती विशेष के साथ बहुत सख्त बन्दोबस्त अथवा पहरा विशेष रहता था फौज विशेष का सुरक्षा हेतू "गुप्त" रूप से । अकबर स्वंय इस मेले में बुरका ओड़ कर औरत के वेश में भ्रमण करता था । अपनी "मदद विशेष" के लिये अपने हरम की खास-2 औरतें उस के संग रहती थीं, पूरी सावधानी के साथ उसे सुरक्षित रखने हेतू निश्चित रूप से । अकबर की नजर में जो स्त्री विशेष चढ़ जाती थी उसे वह साथ वाली औरतों विशेष को विशेष इशारे से समझा देता था । फिर वहाँ से निकल कर अकबर सीधा अपने हरम विशेष में पहुँच कर उस औरत विशेष का इंतजार करता था । साथ वाली औरतें प्रत्येक जायज अथवा नाजायज साधनों विशेषों से उस स्त्री विशेष को हरम तक पहुँचाने में दृढ़ संकल्प के साथ कार्यरत रहती थीं निश्चित रूप से । इस तरह से न जाने कितनी पवित्र स्त्रियों विशेषों की दुर्लभ अस्मत विशेष लूटी अकबर ने अपने "राज काल" विशेष में निरन्तर । बहुतों लुटी हुई स्त्रियों विशेषों ने तो केवल "आत्महत्या" के मार्ग विशेष को ही स्वंय के लिये कल्याणकारी जानकर "आत्मघात" विशेष ही कर लिया था निश्चित रूप से । एक राजपूत स्त्री विशेष इस गुप्त भेद विशेष (अकबर की हवस रूपी असलियत) को लुटने के बाद आत्मघात करने से पहले अपनी सखी विशेष को बता गई

थी । सखी विशेष ने इस मेले विशेष को बंद करने की ठानी । राजपूत सखी शस्त्र विद्या में प्रवीण थी । उसने जहर से बुझी हुई कटार विशेष को अन्दर के वस्त्रों में छुपा कर मेले में स्वंय को उपस्थित किया । सुन्दर तो थी ही अकबर की नजर में चढ़ी तथा हरम में पहुँचा दी गई । वहाँ हरम में सखी विशेष ने अकबर को पटक दिया तथा उसकी की जान लेने पर उतारू हो गई । तब अकबर गिड़गिड़ाया कि जान बख़्शे । राजा के अभाव में मुल्क में अभाव प्रत्यक्ष हो जाने के डर विशेष से सखी ने अकबर की जान बख़्श दी पर मेले को बंद कर देने का तुरन्त फरमान विशेष जारी करवा लिया । एक "वासना के पुतले" विशेष "अकबर मुसलमान" से आप कौन सा न्याय उपलब्ध करवाने के हेतू मीठी सी कल्पना विशेष धरे बैठे हो ? आज बड़े-2 तख्तों विशेषों पर बिना ताज के बड़े-2 सभा सदस्य लीडर विशेष-2 महान-हजूर-पातशाह-दाता-महाराज-बाबे विशेष-2 महंत संत गण इत्यादि के पीछे केवल दुर्लभ-2 शैतान विशेष ही शोभायमान हैं छुपे "धर्मात्मा" विशेष अकबर जैसे अनन्त वासनाओं विशेषों के महान बाप के भी बाप पुतले विशेष निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । अकबर जैसे वासनाओं के पुतलों को रोशन रखने के लिये ही केवल नकली किस्से विशेष दरबार में विशेष-2 दरबारी खास प्रस्तुत करते थे, अलग-2 वेशों विशेष में तथा बढ़िया-2 न्याय विशेष रोज के रोजनामचे विशेष में दर्ज करवा कर गाँव-2 ढोंडी

पिटवा दी जाती थी अकबर को लोकप्रिय बनाने के हेतू ही तथा उसकी निकृष्ट करतूतों पर पर्दा विशेष डालने के लिये ही निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । गुलाम मुल्क को सिर ऊपर कर चलने का भी अधिकार नहीं था फिर जानने की हिम्मत कौन धरे, वो भी केवल अपना सिर कलम करवाने हेतू ही निश्चित रूप से सभी खामोश रह कर केवल जी रहे थे सिसक-सिसक कर मरने के लिये ही यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । सभी को काफिर घोषित कर रखा था तथा काफिर के मुँह को पीक दान विशेष बना रखा था । इन्हीं हालातों के कारण इन्हीं दीन-हीनों को तराश कर "खालसे" विशेष का सिरजन किया गया । केवल दूसरों की "रक्षा हेतू" ही स्वंय को पूरी तरह कुर्बान विशेष करने वाला निश्चित रूप से । ये अलग बात है कि आज स्वंय ही वासनाओं के अथाह समुद्र विशेष में स्वंय को ही डुबो चुका है खालसा विशेष निश्चित रूप से (गुरू गोबिंद सिंह जी ने अपनी प्रत्येक प्यारी से प्यारी वस्तु को भी कुर्बान किया केवल धर्म की आन की खातिर निश्चित रूप से।) "नानक" ने माला अपनाई लेकिन उसी माला की रक्षा हेतू हर गोबिंद नें शस्त्र धारण किये उसी उपलब्ध ताकत "शब्द विशेष" (केवल रागमई प्रकाशित आवाज) के बल विशेष पर मजलूमों की रक्षा हेतू निश्चित रूप से । अपने जिगर के टुकड़े विशेष भी पूरी तरह से कुर्बान कर "कुर्बान" होने का ढंग विशेष सिखाया पूरी मनुष्य जाति को "प्रभु" के "दरबारे खास" तक पहुँचने के

लिये गोबिंद सिंह जी ने दुर्लभ मार्ग दर्शन हेतू निश्चित रूप से । अपने दुर्लभ इतिहास विशेष को "जिगर के खून" विशेष से लिखा स्वंय के ही हाथों दसों "दुर्लभ आत्माओं विशेष" ने दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से । किसी धरती के टुकड़े के लिये ये खून विशेष नहीं बहाया गया मूर्ख प्राणी विशेष । "अनन्त ब्रह्मण्डों" पर राज करने का निश्चित दुर्लभ "मार्ग दर्शन" किया है इन "दुर्लभ आत्माओं विशेष" ने "दुर्लभ काल विशेष" में केवल "सच्चे परमार्थी अथवा मोमन विशेष" के लिये यकीनी तौर पर "प्रभु" की "विशेष दया" को उपलब्ध कर के निश्चित रूप से । इसीलिये कहा है कि "राज करेगा खालसा-आकी रहे न कोय।" अर्थात अनन्त ब्रह्मण्डों विशेषों पर राज करती है दुर्लभ सच्ची परमार्थी अथवा मोमन रूपी आत्मा विशेष जो "खालिस" यानी के "पवित्र" हो चुकी है निश्चित रूप से "पवित्रता के महासागर" "अकाल पुरख परमात्मा" के प्रत्यक्ष दर्शन विशेष स्नान करके केवल जीते जी ही सभी "आकी" यानी के विशेष दुश्मन रूपी "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" को पूरी तरह से जीत चुकी है "प्रभु" की दया विशेष रूपी समर्था विशेष से निश्चित रूप से । केवल यही "विशेष खालिस हो चुकी आत्मा" ही "प्रभु" के "दरबारे खास" की "प्यारी-दुलारी दुर्लभ आत्मा विशेष" ही "अनन्त ब्राह्मण्डों" विशेषों पर राज करने के योग्य बनती है अनन्त काल तक के लिये बिना किसी दुश्मन अथवा शैतानी ताकतों रूपी विघ्न

बाधा के निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो, पत्थर के टुकड़े विशेष अथवा शमशान भूमि पर राज करने का इस दुर्लभ "प्रभु" "प्रेरणा" विशेष में कोई भी भाव ही नहीं है । दुर्लभ पवित्र आत्मा के लिये तो अनन्त ब्रह्मण्डों का राज भी कुछ अर्थ ही नही रखता प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । यह "दुर्लभ पवित्र आत्मा विशेष" तो केवल "अकाल पुरख परमात्मा" की ही दीवानी है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "प्रभु" से अलग रहना ऐसी "दुर्लभ आत्मा विशेष" के लिये केवल तड़प-2 कर "आत्मिक मौत" मरना ही है निश्चित रूप से । यदि कभी प्रत्यक्ष भी होगी तो केवल "प्रभु" की "रजा विशेष" की खातिर निश्चित रूप से कब्रिस्तान अथवा कब्रों पर तो केवल मुर्दे विशेष ही राज करना पसन्द करते हैं । पूर्ण मुक्त "दुर्लभ विशेष आत्माओं" का कब्रिस्तानों पर राज करने का कोई प्रयोजन सुपने में भी नहीं है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । ये अलग बात है कि ऐसे अनन्त कब्रिस्तान अथवा सृष्टियाँ विशेष "दुर्लभ आत्मा विशेषों" के पैरों में ठोकरें खाती फिरती हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । जिस पत्थर के टुकड़े पर राज करने का सुपना संजोये बैठे हो कल्पना में ये केवल आत्मा के पूरी तरह से डूबने का निश्चित सामान विशेष ही है निश्चित रूप से जो "आकी" यानी के "दुश्मन रूपी शैतानी ताकतों" का लिख कर दिया हुआ उत्कृष्ट मीठा सा जहर बुझा हुआ फरमान ही है "भेंट विशेष के रूप" में

जो आपने अपने ही हाथों अपने को पूरी तरह से नष्ट कर देने के लिये ही केवल अपने ही गले विशेष में बांध रखा है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो ।

"नानक जिन करते कारण कीआ सो जाणै करतार ।"

अर्थात करतार यानी के करने वाला इस खेल अथवा तमाशे विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध कर जो अनन्त ब्रह्मण्डों को प्रत्यक्ष धारण किये खामोशी से अपनी धुन विशेष में मग्न है प्रत्येक जर्रे पर भरपूर नजर विशेष रखते हुऐ लबालब समाया हुआ है निश्चित रूप से "निरन्तर" प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "करते" यानी के प्रत्येक आत्मा की प्रत्येक करतूत विशेष को किये गये "कारण" विशेष सहित प्रत्यक्ष साक्षी के रूप में "जाणै" अर्थात जानता है निश्चित रूप से । प्रत्येक आगे आने वाले समय विशेष का भी "यकीनी तौर पर" जिसका पूर्ण "बन्दोबस्त विशेष" दुर्लभ करतार विशेष ने लिख कर के रख दिया है निश्चित रूप से । फिर भला तेरी चालाकी कैसे चल जायेगी ? बरसात की केवल एक रात- केवल एक स्ट्रीट लैम्प उस एक लैम्प विशेष के आगे दम तोड़ती हुई असंख्य जूनें विशेष । तेरे सभी महान-2 वैज्ञानिक पूरी शमशान भूमि के मिल कर के भी उन दम तोड़ती हुई जूनों विशेषों की केवल गिनती करने में भी असमर्थ ही साबित होंगे प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर भला उन जीव विशेषों के और जन्मों का लेखा जोखा विशेष किस कल्पना विशेष से बता पाने

में समर्थ हो सकते हैं? फिर पूरे कब्रिस्तान में कितने स्ट्रीट लैम्प हैं तेरे ही बताये हुऐ, तू उनकी गिनती भी नहीं जानता निश्चित रूप से। फिर कितनी बरसातें बीत चुकी इन्हें कैसे जानेगा ? उस "दुर्लभ करतार विशेष" के पास बीत गई अनन्त बरसातों में (आने वाली सहित) प्रत्येक स्ट्रीट लैम्प पर दम तोड़ने वाली प्रत्येक जून विशेष में उपलब्ध आत्मा विशेष के पिछले तथा आगे के सभी जन्मों का प्रत्येक काल विशेष में की गई अथवा की जाने वाली करतूतों विशेषों का पूरा-2 लेखा जोखा विशेष-2 पूर्ण विशेष-2 बन्दोबस्त सहित प्रत्यक्ष उपलब्ध रहता ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले और तू बिना दुम का दो पैर का विशेष चला है परमात्मा अथवा पातशाह सच्चा बनने ! ऐसी दुर्लभ करतूतें विशेष-2 कमाते हुऐ तुझे दुर्लभ शर्म विशेष भी नहीं लगती निश्चित रूप से ! अर्थात आत्मा विशेष अपनी करतूत अथवा कर्म विशेष को प्रत्येक काल में छुपाने में केवल असमर्थ ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । "आत्मा विशेष" को अपने "पापों विशेष" का पूरा-2 "भुगतान विशेष" देने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा "अनन्त काल" के बाद भी यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । जब "घोर-2 नर्कों" विशेष में भयानक आग विशेषों में जलायी जायेगी तब तड़प-2 कर चिल्लाते हुऐ अपने द्वारा किये गये पापों विशेषों को ब्यान करेगी निश्चित रूप से । "मुसलमान" रूपी चतुर आत्मा विशेष, यहाँ तो तू अपने को जलने

से बचा लेगा झूठे तौर पर ही सही परन्तु वहाँ "प्रभु" के "दरबारे खास" में अपने पापों विशेषों को छुपाने में तू कैसे समर्थ हो सकेगा ? निश्चित रूप से तेरे कमाये हुऐ पाप रूपी कर्म विशेष चीख-2 कर न्याय विशेष मांगेंगे यकीनी तौर पर । फिर कैसे तू स्वंय को इन "भयानक-2 नर्कों" विशेष की "घोर-2 यातनाओं" से भरी हुई "भयानक-2 आगों" विशेषों में जलने से खुद को बचा पाने समर्थ हो सकेगा ? अर्थात अनन्त काल तक के लिये तुझे अवश्य घोर-2 दुख सहने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा मददगारों सहित विशेष-2 दुर्लभ-2 निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले चतुर मुसलमान विशेष यकीनी तौर पर । इसी "वचन विशेष" को बदलने का हौसला दिखाया गुरू पुत्र ने केवल स्वार्थ विशेष की खातिर स्वंय के प्रभाव को बनाये रखने के लिये जालिम हुकूमत मुसलमान के दरबार विशेष में । "सच" विशेष को ब्यान करने से बचने के लिये "प्रभु" प्रेरित वचन विशेष को ही बदल दिया गुरू पुत्र राम राय ने । "मिट्टी मुसलमान" के स्थान पर "मिट्टी बेईमान" की कह कर ब्यान कर दिया । लिखित में गल्ती हो गई है ब्यान दे दिया केवल अपने स्वार्थ को बनाये रखने के लिये ही "मुसलमान के जुल्म" विशेष पर पर्दा विशेष डाल दिया । नतीजा, गुरू हर राय ने पुत्र राम राय का पूर्ण त्याग ही कर दिया सब कुछ अधिकार विशेष ताकतों को देने के बावजूद पुत्र

कहना तो एक तरफ रहा अपना चेहरा तक दिखाने से बेदखल कर दिया निश्चित रूप से सदा के वास्ते । शेष जीवन "शैतानी ताकतों" के हाथों का खिलौना विशेष बना रहा गुरू पुत्र विशेष, बेशक "डून वैली" का बेताज बादशाह बन कर आखिर जीते जी जलाया गया फिर आगे का ब्यान दिया जाये ? यही हौसला विशेष दिखाया है एक महान आसमानी ताकतों के नुमाईदें पैगम्बरों विशेषों ने विशेष-2 मददगारों सहित । "धुर निर्देशित" वाक्य विशेषों अथवा वाणी दुर्लभ को बदल कर केवल अपने निजी स्वार्थों को बनाये रखने हेतू दुनिया की आँखों में मिट्टी विशेष डालने के लिये ही निश्चित रूप से "चढ़ावे के अन्न" जहर विशेष को "जायज" विशेष करार दे कर तथा ताली विशेष पीटते हुऐ घुंघरू विशेष को बांधने से इन्कार कर के । "प्रभु" के "नियमों विशेष" की अवहेलना उपलब्ध ताकतों विशेष का दुरूपयोग विशेष करते हुऐ अवश्य दुनिया की आँखों में धूल झोंकी जा सकती है परन्तु "नाही राम इआणा" अर्थात "महाचतुरों" तुम लोग कैसे उस प्रत्येक जर्रे में समायी हुई "नियमावली" विशेष को धोखा देने में सफल हो सकोगे अपने सभी दुर्लभ-2 चमत्कारों विशेषों ताकतों सहित ? तेरे साथ तेरे महान-2 मददगार "चमत्कारों" दुर्लभों विशेषों सहित केवल राम राय विशेष का ही इतिहास दोहराने में केवल समर्थ हो सकेंगे अनन्त काल के बाद भी निश्चित रूप से यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । इंटरेस्ट के रूप

में दुर्लभ वासनाओं विशेषों का निश्चित प्रतिफल विशेष समझ लो, सर्प-सूकर-वेश्या तथा प्रेत इत्यादि घोर-2 जूनें "प्रभु दरबारे खास" से "दुर्लभ भेंट" के रूप में थाली विशेष में सजा कर दुर्लभ विशेषों के "दुर्लभ-2 खातों" विशेष में तकसीम कर दी गई है निश्चित रूप से। "धुर निर्देशित" "दुर्लभ वाणी विशेष" में शक की गुंजाईश नहीं हुआ करती बशर्ते उस में मिलावट न की गई हो निश्चित रूप से शाहजहां-मुल्क बादशाह। मेरे जैसा बादशाह हो-जान सहित प्रजा की प्रत्येक वस्तु विशेष का स्वामी भी हो-फिर बादशाह प्रजा विशेष से भीख मांगे और फिर प्रजा विशेष से भीख भी न मिले यह कदापि हरगिज नहीं हो सकता निश्चित रूप से उसने इस दुर्लभ वाणी विशेष पर शक किया। समय बदला बेटे ने बाप को ही कैद कर लिया तथा स्वंय को बादशाह घोषित कर दिया। कत्ल करने का बहाना विशेष खोजने लगा बेटा बाप को निश्चित रूप से। सलाहकारों ने दुर्लभ सलाह विशेष दी कि अन्न जल बंद कर दो कुछ करने की जरूरत ही नहीं है माइक अथवा प्रचार पर ही कब्जा विशेष कर लो बस समस्या हल हो जायेगी। उल्टे ब्यान देने लगो। इधर बदनामी उधर निश्चित मौत विशेष। बस लाल किला विशेष रूप से फतह हो ही जायेगा यकीनी तौर पर भूल गये अंहकार विशेष में, कि "दुर्लभ महामारी विशेष" तो हर जर्रे विशेष में भी भरपूर समाई हुई ही है निश्चित रूप से उस "महामारी दुर्लभ विशेष" का क्या इलाज विशेष करोगे जो रोम-

2 से फूट पड़ रही है निरन्तर दुर्लभ रोग विशेष के रूप में । उस दुर्लभ विशेष को कैसे प्रत्यक्ष करने में समर्थ हो सकोगे कभी सुपने में भी दुर्लभ-2 कारस्तानियों तथा मददगारों विशेषों सहित । अर्थात केवल असमर्थ ही साबित होंगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल विशेष में भी यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । शाहजहाँ ने अपने महान पुत्र को पत्र लिखा कि तेरे जैसे मुसलमान जालिम पुत्र से तो काफिर ही अच्छा है जो अपने मरे हुओं को भी जल देता है तू अपने जिन्दा बाप को भी जल नहीं देता । लानत है तुझ जैसे मुसलमान जालिम पुत्र पर फिर महान जालिम पुत्र ने बाप से सदा के लिये छुटकारा प्राप्त करने हेतू मुकदमा झूठा तैयार करवा कर शाहजहाँ को दिल्ली अदालत में बुलवाया । रास्ते मे पहले ही ढोंडी पिटवा दी कि जो अपराधी शाहजहाँ को अन्न-जल देगा उसकी संपत्ति सिर सहित जब्त कर ली जायेगी तुरन्त निश्चित रूप से । शाहजहाँ भूखा प्यासा तड़प रहा था तथा अपनी ही प्रजा से भीख मांग रहा था अन्न जल की जिन्दा रहने हेतू । परन्तु अन्न जल देना तो एक तरफ रहा किसी ने उसके पास तक आना भी ठीक ही नहीं समझा स्वंय के हित के लिये निश्चित रूप से । भला किसे जान प्यारी नहीं है ? दया भी दिखाये और जान भी गंवाये, ये सौदा किसी भी प्रजावासी को मंजूर ही नहीं था निश्चित रूप से । नतीजा प्रत्यक्ष हुआ बादशाह शाहजहाँ भीख मांगता रहा अन्न जल की अपनी ही प्रजा से । परन्तु किसी भी

प्रजावासी विशेष ने उसे अपने बादशाह शाहजहाँ को भीख नहीं दी अन्न जल की निश्चित रूप से । इस दुर्लभ भीख विशेष के अभाव में शाहजहाँ नाम के मुल्क के बादशाह ने दिल्ली पहुँचने से पहले ही रास्ते में भूखे प्यासे तड़प-2 कर दम तोड़ दिया पर मरने से पहले "धुर निर्देशित दुर्लभ वाणी विशेष" पर मुहर लगा गया कि दुर्लभ वाणी विशेष सच्ची है "नदरी उपठी जे करे सुलताना घाह कराइदा । दर मंगन भिख न पाइंदा ।" मैने "प्रभु प्रेरित दुर्लभ वाणी विशेष" पर शक करने का झूठा अपराध कमाया । यकीन कर लेता तो अपनी हिफाजत का बन्दोबस्त करता । पर क्या बेटे पर शक करता ? कर्म की गति कभी नहीं बदलती । अनेक दुर्लभ-2 प्रयत्नों के बावजूद भी किये हुऐ का फल बदला नहीं जा सकता निश्चित रूप से । अनन्त कल्पों के बाद भी पूरा-2 फल विशेष भुगतने के लिये प्रत्येक "आत्मा विशेष" को मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में ।

"मोकोउ कुशल बतावह कोई । कुसल कुसल करते जग बिनसे कुसल भी कैसे होई ।" अर्थात "जड़" अथवा प्रत्येक उपलब्धी निरन्तर केवल विलय में ही तबदील होती चली आ रही है बिना रूके निश्चित रूप से । इसे रोकने के आप के सभी अकथ महान-2 प्रयत्न केवल अधूरे ही साबित हो रहे हैं निश्चित रूप से । आपके सभी उपाय दुर्लभ स्वंय भी केवल "अकुशल" लफज

विशेष को ही समर्थ बनाने में मददगार दुर्लभ साबित हो रहे हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । फिर उन आत्माओं विशेष का कुसल अथवा आत्मिक कल्याण होना कैसे सम्भंव होगा जो निरन्तर निन्दा रूपी विशेष मीठी सी अग्नि में केवल स्वंय को ही निरन्तर भस्म करने में ही बिना रूके केवल निजी रूप से पूर्ण व्यस्त हैं निश्चित रूप से ! निन्दा का आधार ईर्ष्या है निश्चित रूप से । ईर्ष्या दूसरे की उपलब्धी विशेष को देख कर के प्रत्यक्ष जन्म विशेष धारण करती है केवल "नर्को घोर" का सदा के वास्ते बन्दी विशेष बनाने के लिये ही यकीनी तौर पर निन्दा करने वाली आत्मा विशेष को दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जो वस्तु विशेष आपके पास उपलब्ध नहीं हो सकी वह दूसरे के पास कैसे प्रत्यक्ष हो गयी ? जरूर कुछ छल किया होगा वरना मेरी कई पीढ़ियाँ विशेष-2 जिम्मेदारियों को निभाने में पूर्ण व्यस्त रही हैं, हमें ये वस्तु विशेष क्यों नहीं उपलब्ध हुई ? अवश्य कुछ गड़बड़ घोटाला है । अब अगले की चीड़ फाड़ की जाती है कुछ मसाला ढूंढने के लिये ताकी उसे जिन्दा ही जलाया जा सके ! ये अलग बात है कि इस दुर्लभ चीड़-फाड़ से अगले की जन्मों-2 की "मवाद विशेष" खुरच-2 कर साफ करवा दी जाती है निंदको द्वारा । जिससे उस अगले विशेष का "कल्याण दुर्लभ निजी" हो ही जाता है आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निंदक निरन्तर अगले

का अहित करने में ही लगातार व्यस्त रहता है उपलब्ध साधनों विशेषों सहित जब तक अगले की उपलब्धी विशेष को छीन अथवा छिनवा नहीं लेता निश्चित रूप से निरन्तर ईर्ष्या की भयानक आग विशेष में जलना ही केवल उस के खानदान का "निजी व्यवसाय" दुर्लभ ही बन जाता है यकीनी तौर पर । यह दुर्लभ व्यवसाय विशेष निंदक अपने मददगारों दुर्लभों सहित तब तक अपनाये रहता है जब तक कि पूरी तरह से स्वंय को नष्ट नहीं कर लेता स्वंय की भी उपलब्धियों तथा दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित निश्चित रूप से, दिन रात केवल इसी दुर्लभ धन्धे विशेष में ही व्यस्त रहता है । "जूते विशेष" अथवा "मोत" अगले के गले में बांध दो और "माला विशेष" के लिये हमारी यानी के निंदक विशेष की सुराईदार गर्दन विशेष जो मौजूद है । माला जरा लम्बी तथा विशेष खुशबूदार होनी चाहिये निश्चित रूप से गर्दन को भी माला विशेष के अनुसार लम्बा कर लेने की "दुर्लभ सिद्धि विशेष" हमारे खानदान विशेष में बहुत पहले से ही प्रत्यक्ष है "खानदानी संपत्ति निजी विशेष" के रूप में यकीनी तौर पर । अर्थात उपलब्धी विशेष को केवल स्वंय की ही निजी जायदाद समझना अथवा इकलौता अधिकारी विशेष घोषित करना । शेष सभी को अपने पैरों की जूती अथवा गुलाम विशेष ही केवल स्थापित करना निश्चित रूप से । ईर्ष्या की आग विशेष में निन्दक पूरी तरह से अन्धा हो कर के ही केवल कार्य करता है यकीनी तौर पर । इसकी गुरू घर की

उपलब्धी विशेष पूरी तरह से प्रत्यक्ष प्रमाण है । नानक के जरिये जब "शब्द विशेष" प्रत्यक्ष हुआ तो अपनी बिरादरी विशेष में ही ईर्ष्या की आग से जलने पर मजबूर होने लगे "ईर्ष्यालू" विशेष-2 निश्चित रूप से । नानक के बाद जब भाई लहणा को प्रत्यक्ष हुआ "शब्द विशेष" तो नानक के पुत्र ही बागी हो गये कि ये घसियारा घर का कैसे अधिकारी हो गया इस "दात दुर्लभ" विशेष का ? नानक के पेट से तो हम ने जन्म लिया है हम ही इस वस्तु विशेष के निश्चित अधिकारी हैं यकीनी तौर पर । घसियारे बेचारे को गाँव छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा निश्चित रूप से । यही "दात विशेष" जब फिर भाई अमरदास को प्रत्यक्ष अनुभव हुई तब घसियारे यानी के गुरू अंगद देव के पुत्रों ने ही नानक के पुत्रों वाला ईर्ष्या का दुर्लभ व्यवसाय विशेष अपनाया चढ़ावा खोंसने लगे तथा जान ही लेने पर उतारू हो गये अंगद पुत्र । मजबूरन "मजदूर अमरू" को भी स्थान विशेष छोड़ने के लिये मजबूर होना ही पड़ा जान की सलामती के कारण निश्चित रूप से । अब गुरू अमर दास के बाद जब ये "ताकत विशेष" जमाई "रामदास" के प्रत्यक्ष अनुभव हुई तो बेटी भानी ने ही लोभ किया तथा ये दुर्लभ महामारी विशेष सदा अब उसी के घर में ही शोभायमान रहे निश्चित रूप से, सेवा के बदले गुरू पिता से वरदान उपलब्ध करवा लिया । अब गुरू पिता ने भी सच्चाई ब्यान कर ही दी कि ये "दुर्लभ महामारी विशेष" रहेगी तो तेरे ही घर में पर "महामारी विशेष" भी

फैलाती ही रहेगी तेरे ही "दुर्लभ घर" विशेष में निश्चित रूप से । अब ईर्ष्यालू विशेष-2 अमरू को पागल विशेष घोषित करते रहे जैसे नानक को कुमार्गी घोषित किया गया था जिन्दगी भर विशेष तौर पर निश्चित रूप से । कारण केवल "सच्चाई विशेष" को ब्यान करने की खातिर ही ये महान-2 "उपलब्धियों" विशेषों को भी गले से लगाना ही पड़ा "दुर्लभ आत्मा विशेषों" को निश्चित रूप से । अब जब गुरू रामदास के बाद ये "शब्द विशेष" छोटे पुत्र अर्जुन देव को प्रत्यक्ष हुआ तो बड़े पुत्रों ने ही युद्ध का बिगुल बजा दिया बहुत समझाने पर भी जब नहीं माने तो "गुरू रामदास" को आखिरी समय शान्ति से शरीर छोड़ने के लिये घर को ही छोड़ना पड़ा निश्चित रूप से । बड़ा भाई पृथ्वी पिता के शरीर छोड़ने के बाद गद्धी बिछा कर गुरू बन कर बैठता था चढ़ावा कबूल करता और सेवक अरदास करता मददगार खूब साधन जुटाते दौड़-2 कर ! "सिद्धियाँ" विशेष भरपूर कार्य करती, बहुतों के कार्य सिद्ध करने का झूठा दावा पेश किया जाता तथा संगत दोनों हाथों से लूटी जाती रही बरसों । जिसको "दात विशेष" मिली हुई थी अर्थात छोटा भाई अर्जुन देव, वो खामोशी से ध्यान मग्न रहता एकांत में छुप कर । "जान की सलामती" की खातिर किसी से कुछ न कहता बेचारा "अर्जुन देव दुर्लभ !" सातवीं आठवीं तथा नौवीं पातशाही का दावा नानक की गद्दी का अन्त तक बड़ा भाई पृथ्वी उसका पुत्र मिहरवान तथा पौत्रा हरी मीणा करते रहे । गद्दियाँ

चलती रही दुर्लभ-2 आदि से विशेष होती रही कार्य सिद्ध करते रहे तथा संगत गुमराह होती रही बरसों। यह धन्धा विशेष किया एक ही पेट से जन्म लेने वाले पृथ्वी ने जिन्दगी भर ईर्ष्या की खातिर । मुस्लिम हुकूमत को अपना बड़ा होने पर ही "गद्दी विशेष" का अधिकारी घोषित कर मदद मांगी, छोटे भाई अर्जुन देव को "कत्ल" करने हेतू ताकी गद्दी विशेष पर पृथ्वी का हक पक्का बन जाये सदा के वास्ते निश्चित रूप से । फिर जब अर्जुन देव की पत्नी माता गंगा देवी का पांव भारी हुआ तब रोज गर्भ को गिराने के लिये नई-2 साजिशें विशेष रचने लगा बड़ा भाई अर्जुन का पृथ्वी कि किसी भी तरह से गर्भ गिर जाये ताकि अर्जुन के औलाद न हो तथा सारी सामग्री विशेष-2 का पृथ्वी परिवार इकलौता अधिकारी विशेष ही बन जाये के लिये निश्चित रूप से । अर्जुन की मौत की मिन्नतें मांगी जाने लगी तथा खत्म करने के लिये तरह-2 के सिद्धियों विशेषों का प्रयोग किया जाने लगा निश्चित रूप से अर्जुन देव को मारने के लिये यकीनी तौर पर । जब कुछ बस न चल सका तो अर्जुन देव गर्भवती पत्नी को ले कर घर से दूर चले गये । फिर जब बालक कुछ बड़ा हुआ तो घर वापिस लौटे । फिर पृथ्वी ने बालक छोटे से को ही खत्म कर देने के लिये तरह-2 के हथकण्डे विशेष-2 अपनाने का "दुर्लभ व्यवसाय" अपनाया निरन्तर यकीनी तौर पर । फिर एक बार रसोईये को अपनी तरफ मिला कर नीच पृथ्वी ने बच्चे हरगोबिंद

को विशेष जहर हलाहल दे ही दिया खाने में मिला कर निश्चित रूप से । जिसे खाकर बच्चा हरगोबिंद बेसुध हो गया काफी समय बाद बालक हरगोबिंद की चेतनता लौटी । यही हाल मारने विशेष का बंटवारे के बाद भी जीवन भर चलाता रहा नीच पृथ्वी निश्चित रूप से । यही हाल कई गुना बढ़ कर हरगोबिंद के समय में प्रत्यक्ष हुआ, उनके अपने ही पौत्र धीर मल्ल के द्वारा निश्चित रूप से, पौत्रा धीर मल्ल अपने ही सगे बाबा गुरू हर गोबिंद को कत्ल करवाने के लिये अथवा सदा के वास्ते बन्दी बनाने के हेतू ही मुखबरी करता रहता "मुस्लिम जालिम हुकूमत" की यकीनी तौर पर । गुरू हरगोबिंद द्वारा शस्त्र विशेष धारण करने के कारण ही ये "दुर्लभ व्यवसाय" (खून की होली खेलने वाला) पृथ्वी के पुत्र-पौत्र तथा धीर मल्ल इत्यादि दुर्लभ-2 मददगारों सहित गद्दी के अधिकारी विशेष के खिलाफ अपनाये रहे अन्दर ही अन्दर "अधिकारी विशेष" को कमजोर बनाने हेतू उसकी जड़ों विशेषों को कुतरते ही रहे जीवन भर चूहे विशेष की तरह से दिन रात बिना रूके "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की मदद से निश्चित रूप से । यही दुर्लभ धन्धा विशेष चला हरराय के समय में एक ही पेट से जन्म लेने वाला धीर मल्ल छोटे भाई हरराय के खून का प्यासा रहा जिन्दगी भर निश्चित रूप से । हर राय को खामोश रहने की ताकीद थी खामोशी विशेष का भरपूर फायदा उठाया गया विरोधियों द्वारा गुरू हर राय के बाद ये दात छोटे पुत्र हर

कृष्ण को प्रत्यक्ष हुई बड़े पुत्र राम राय को "दुर्लभ वाणी विशेष" का केवल एक अक्षर विशेष बदलने के कारण "मुसलमान" की जगह "बेईमान" ब्यान करने के एवज में बेदखल होना पड़ा । जो राम राय ने केवल अपने निजी लोभ को प्रत्यक्ष उपलब्ध रखने की खातिर ही किया निश्चित रूप से, "स्वार्थी संगी विशेषों" की सलाह पर यकीनी तौर पर । ये भी एक ही पेट से दुर्लभ जन्म विशेष लेने वाला रामराय जिन्दगी भर "मुस्लिम जालिम हुकूमत" से मिल कर अपने ही सगे छोटे से भाई पाँच साल के "गुरू हर किशन" के "खून का प्यासा" बना रहा "निरन्तर" प्रत्येक कीमत पर समस्त उपलब्ध अधिकारों विशेषों पर अपना ही केवल एकाधिकार स्थापित करने हेतू ही निश्चित रूप से अपने को गद्दी का इकलौता विशेष अधिकारी घोषित करता रहा केवल बड़ा होने के ही खातिर निश्चित रूप से जिन्दगी भर "नीच रामराय" "शैतानी ताकतें" अथवा सिद्धियाँ विशेष भरपूर प्रत्यक्ष कार्य करती थीं, राम राय के साथ निश्चित रूप से जिन्हें आप सभी परमात्मा समझ कर पूजते हो निश्चित रूप से । जिन्दगी भर रामराय "डून वैली" का बेताज बादशाह बन कर कार्य करता रहा नानक की गद्दी का स्वंय को असली हकदार घोषित करता हुआ अपने विशेष दुर्लभ-2 मददगारों सहित संगत से इसके मसंद दसवंद एकत्र करते रहे तथा रामराय अपने को गुरू स्थापित करता रहा दोनों हाथों से संगत को लूटते हुए । बरसों संगत इस "भ्रम विशेष" में "गुमराह"

होती रही, क्योंकि इनमें "सिद्धियाँ" विशेष प्रत्यक्ष कार्य करती थीं जो "प्रभु" की ताकत समझी जाती हैं । "गुरू हर किशन" के शरीर छोड़ने पर उन की माता श्री को ससुर श्रेणी का "लोभी दुर्लभ विशेष" गुरू हरगोबिंद का पुत्र "सूरजमल" सताता रहा (जिस ने गुरू पिता से फकीरी मांगी थी!) कि गुरू गद्दी मेरे पौत्र के नाम लिख दो ! फिर जब "तेग बहादुर" को प्रत्यक्ष हुई "शब्द विशेष" की उपलब्धी, उस समय बाईस गद्दियाँ विशेष-2 केवल परिवार वालों की ही प्रत्यक्ष प्रचलित थीं बाबा बकाले में केवल संगत को गुमराह करने के लिये निश्चित रूप से विशेष "शैतानी ताकतों" द्वारा यकीनी तौर पर । यहाँ भी नीच धीरमल्ल के मसंद विशेष ने "गुरू तेग बहादुर" को जान से मारने के लिये उन पर गोली चलाई अपनी बन्दूक से । "गुरू तेग बहादुर" का एक तरफ को हो जाने के कारण गोली केवल बाजू को छीलती हुई निकल गई । ऐसी "खून की होली" विशेष रूप से खेली जाती रही बरसों केवल निजी परिवार में ईर्ष्या विशेष की खातिर लोभ में निश्चित रूप से । संगत "बरसों गुमराह" होती रही स्वंय को लुटाते हुऐ निश्चित रूप से । आप का क्या धंधा है कि केवल अपने "लोभ" की खातिर ही इन्हीं "खूनी लोभी भेड़ियों" के "स्थानों विशेषों" पर जा कर आप माथा रगड़ते हो चूमते चाटते हो इन्हीं "शैतानी ताकतों" को निश्चित रूप से ! जो निकृष्ट लोभी खूनी भेड़िये जिन्दगी भर आप के गुरूओं विशेषों के खून के प्यासे रहे उन्हीं से आप मिन्नतें मांगते

हो अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने हेतू ही केवल निश्चित रूप से । लानत है ऐसे सिर विशेष अथवा गर्दन पर जो इन "शैतानी ताकतों" के नुमाइंदों विशेषों के आगे झुकती हैं । ऐसे झुकने से तो भूखा मरना ही बेहतर है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "बिंग कसाईया दा सहणा" अर्थात ये कसाई कौन लोग थे ? केवल घर परिवार के, जो ये प्रचार करते थे अपने लोभों की खातिर कि ये गुरू नहीं हो सकता इसने तो घर परिवार के सभी पुरूषों को ही कत्ल करवा दिया बेघर रहना पड़ रहा है औरतें बेवा हो गई बच्चे यतीम कर दिये जालिम ने जो अपने पुत्रों की रक्षा करने में असमर्थ रहा, वह आप को सुरक्षा देने में भला कैसे समर्थ हो सकता है ? इसके पास कोई ताकत ही नहीं है ये अपने को झूठा ही गुरू घोषित करता है वगैरह-वगैरह इसी तरह के प्रचार को इस लफज में संजो कर ब्यान किया गया है कि "मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदां दा कहणा !" इसी तरह की विशेष-2 "खून की होली" खेलते ही रहे "ईर्ष्यालू लोग" दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित दिन रात आयु पर्यन्त निश्चित रूप से केवल सामने वाले "दुर्लभ विशेष" की "उपलब्धी विशेष" को हथियाने की खातिर ही यकीनी तौर पर । "गुरू गद्दी" को समाप्त करने का एक मुख्य कारण इस बरसों से खेली जा रही "खून की होली" को सदा के लिये खत्म करना भी रहा है निश्चित रूप से । दूसरा यह "जबरदस्ती" नहीं केवल "पुरूषार्थ" तथा "प्रभु" की "दुर्लभ दया

विशेष" का ही विषय है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इसी कारण विशेष को मध्य नजर रखते हुऐ "अकाल पुरख परमात्मा" की "आत्मिक प्रेरणा" दुर्लभ को प्रत्यक्ष किया गया तथा उसे ग्रन्थ में संजो कर मनुष्य जाति के कल्याण हेतू प्रत्यक्ष स्थापित किया गया "गुरू श्रेणी" में, केवल दुर्लभ मार्ग दर्शन हेतू ही विशेष रूप से निश्चित उपाय विशेष के रूप में । इसकी लिखित विशेष की तुलना "चेतन" से करना केवल दुर्लभ-2 महामूर्खो का ही निजी व्यवसाय है यकीनी तौर पर । इस की स्थापना से चेतन मार्ग दर्शक विशेष की अहमियत घट थोड़ा ही जाती है । बल्कि इस "दुर्लभ प्रभु प्रेरणा" की उपलब्ध लिखित विशेष से तो उस "दुर्लभ मार्ग दर्शक" की अहमियत और मजबूत बनती है निश्चित रूप से । बशर्ते वह दुर्लभ मार्ग दर्शक इस "दुर्लभ प्रभु प्रेरणा" के ठीक तथा निश्चित दायरे में ही कार्य करे पूर्ण ईमानदारी विशेष के साथ निश्चित रूप से । सृष्टि में जो कुछ भी प्रत्यक्ष उपलब्ध है उसकी सच्चाई विशेष को इस "दुर्लभ प्रभु प्रेरणा" में केवल एक लफज अथवा इशारे के रूप में संजो कर रख दिया गया है गुप्त रूप से । जो केवल आप के "निजी पुरूषार्थ" तथा "दुर्लभ प्रभु" की "दुर्लभ दया विशेष" से ही प्रत्यक्ष अनुभव होगा निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । पर आप को "महामारी" विशेष जो लगी हुई है बाहर धक्के विशेष-2 खाने की कई पीढ़ियों से निश्चित रूप से, जो कोई भी

मार्ग दर्शक विशेष-2 ब्यान दुर्लभ करेगा कहीं पर भी किसी भी रूप अथवा अवस्था विशेष में ही ब्यान करेगा निश्चित रूप से प्रत्येक काल में पर इस "महामारी" विशेष का क्या इलाज है कि आपको दूसरे के पढ़ने तथा सुनने का दुर्लभ भयानक शौंक विशेष है कई पुश्तों से निश्चित रूप से। स्वंय के पास समय ही नहीं है उस "दुर्लभ प्रभु प्रेरणा" पर विचार करने का फिर व्यवहार की कौन सी कल्पना धरी जाये ? केवल गर्दन हिला कर सड़क पर से ही पूर्ण मुक्ति गाँठ बाँध कर धर ले आते हैं "दुर्लभ प्राणी विशेष" निश्चित रूप से । यह दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा "प्रभु" की केवल पढ़ने अथवा रटने के लिये नहीं बल्कि मनन के लिये ही प्रत्यक्ष उपलब्ध की गई है । केवल पढ़ने से आपका कल्याण होना कैसे सम्भंव हो सकता है ? कभी सुपने में भी केवल असम्भव लफज विशेष को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इस लिखित के अनुसार अपना व्यवहारिक जीवन बनाओ तथा इसे साक्षी बना कर अपने संसारिक धन्धे विशेष निबटाओ निश्चित रूप से तभी कोई आप पर विचार करेगा यकीनी तौर पर । कुछ क्रिया विशेष शुरू में केवल इसलिये दी गई थी कि आप का ध्यान मत धर्मो के ठेकेदारों के चुंगल से निकाला जाये । जिन कवि रूपी लिखारियों की लिखित विशेष का आप अक्षरश: अम्ल करने में लगे हो उनमें चालीस से अस्सी प्रतिशत केवल कल्पना ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । उसी का साईड

ईफैक्ट अब सामने आ गया है कि एक तरफ से तो लाभ हुआ परन्तु दूसरी तरफ फँस गये । "शैतानी ताकतों" ने इस दुर्लभ लिखित विशेष को ही "परमात्मा" साबित करने में अपना दुर्लभ योगदान विशेष आपको "दुर्लभ भेंट" विशेष के रूप में दे दिया बिना कुछ भी आप की दुर्लभ हस्ती विशेषों को छोड़े यानी के मनुष्य जन्म विशेष को उल्टे धन्धों विशेषों में लगा दिया निश्चित रूप से । एक कीचड़ विशेष से निकाला गया पर दूसरी बड़ी सी दुर्लभ कीचड़ विशेष में ही डूबने का सामान बांध लिया आत्माओं विशेषों ने निश्चित रूप से अर्थात रहे तो केवल कीचड़ विशेष में ही ना कि मुक्त हो गये "कीचड़ दुर्लभ" विशेष से ? "दुर्लभ लिखित विशेष" का "अमल" विशेष इस जेलखाने से सदा के लिये छुट्टी ही है निश्चित रूप से परन्तु दुर्लभ लिखित विशेष का केवल भार विशेष ढोना केवल डूबने का निश्चित प्रमाण पत्र ही है जो आत्मा विशेष अपने ही हाथों से लिख कर केवल अपने ही गले विशेष में बांधने का दुर्लभ "कर्म विशेष" कमाती है जिन्दगी भर यकीनी तौर पर पूरी सजधज विशेष-2 के साथ निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो प्रत्येक काल में ! इस "दुर्लभ लिखित विशेष" को "सुखमनी किटी" के रूप में बदलने का जो "दुर्लभ घोर अपराध" दुर्लभ आत्मायें विशेष कमाने में व्यस्त हैं वे केवल अपने लिये "घोर-2 नरकों" विशेषों अनन्त काल तक को भोगने के लिये ही केवल सामान विशेष इकट्ठा कर रही हैं निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो !

जिसकी ये उत्कृष्ट उपलब्धी है वो आप के इस "विशेष व्यवसाय दुर्लभ" से बेखबर नहीं है । ये दुर्लभ लिखित विशेष दूसरों को पढ़ाने के लिये नहीं बल्कि स्वंय के निजी अभ्यास हेतू ही केवल प्रत्यक्ष की गई है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में "अकाल पुरख परमात्मा" द्वारा आत्मिक प्रेरणा के रूप में जब घड़ा भर जाता है अपने आप ही बहने अथवा डूबने लगता है नियमानुसार निश्चित रूप से । लेकिन भरने में समय अवश्य लगता ही है यकीनी तौर पर । "सच्चे परमार्थी" अथवा मोमन रूपी सिख विशेष को ऐसे सभी निकृष्ट व्यवसायों से सदा दूर ही रहना वांछनीय है निश्चित रूप से केवल स्वंय के ही "निजी कल्याण" हेतू प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो ।

जिन "कुरीतियों" विशेषों से आप को बचाने के लिये "दस दुर्लभ आत्माओं विशेष" को प्रत्यक्ष किया गया था, आज आप ने फिर से इन निकृष्ट क्रियाओं विशेषों को अपना कर इन "दुर्लभ आत्माओं" विशेषों के "दुर्लभ मार्ग दर्शन रूपी ज्ञान विशेष" की पूरी तरह से "कब्र विशेष" ही बना दी है तथा उसी "कब्र विशेष" पर नाचने कूदने-ढोल पीटने-बाजे बजाने में ही पूरी तरह से स्वंय को व्यस्त रख कर केवल अपनी "दुर्लभ मनुष्य के जन्म रूपी हस्ती" को ही पूरी तरह से डुबोते चले जा रहे हो निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । जिन "मनुष्य विशेषों" से आप को बचाया गया था आज आप ने फिर से उन्हें ही दुर्लभ हजूर-महाराज-बाबा-

पातशाह इत्यादि विशेष-2 उपलब्धियों से सम्मानित कर के परमात्मा का भी दुर्लभ बाप विशेष ही स्थापित करके अपना लिया है केवल स्वंय को ही पूरी तरह से डुबाने हेतू निश्चित रूप से । दुनिया को दुर्लभ-2 इनायतों विशेषों का दुर्लभ-2 दान विशेष देने वाले ये दुर्लभ-2 पातशाह विशेष "खूनी लोभी भेड़िये" केवल आप की ही गुप्त जेबों विशेष को टटोलने में ही केवल व्यस्त हैं अथवा माहिर हैं निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । एक बार इन दुर्लभ-2 पातशाहों विशेषों के चुंगल विशेष में फँस गये चूहे विशेष की तरह से तो फिर कई पीढ़ियाँ आप की केवल इन्हीं को दुर्लभ-2 "खून विशेष" का "दान दुर्लभ विशेष" देने में ही केवल पूरी तरह से डूब जायेंगी निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । दुनिया में आप अपने खून का दान विशेष दोगे तो आप को कुछ ना कुछ अवश्य उपलब्ध होगा जो आप के लिये निश्चित रूप से "पौष्टिक आहार" ही साबित होगा यकीनी तौर पर । परन्तु इन दुर्लभ-2 पातशाहों रूपी खूनी लोभी भेड़ियों विशेषों को अपने कीमती खून दुर्लभ विशेष का दान जीवन भर देने के बावजूद केवल आप को (कुल-परिवार सहित) जिन्दगी भर लाल-2 खून के आँसू रोने का ही "प्रमाण पत्र" विशेष उपलब्ध होगा निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । जिस "दुर्लभ प्रमाण पत्र" विशेष को पढ़ना तो दूर रहा देखने सुनने वाला भी आप को कोई सुपने में भी उपलब्ध ही नहीं होगा निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । इन्हीं दुर्लभ कारणों विशेष के

कारण ही समाज के इस गलित कुष्ठ के अंग विशेष को काट दिया गया था शेष शरीर को कायम रखने हेतू ही निश्चित रूप से । जिसे आपने फिर से विकसित कर लिया है निश्चित रूप से केवल अपने ही हाथों स्वंय को जहर पिलाने हेतू ही यकीनी तौर पर । जब ये "दुर्लभ लिखित विशेष" प्रस्तुत की गई तब प्रत्यक्ष करने वाली "दुर्लभ आत्माओं" विशेषों ने क्या अपने पद विशेष से त्याग पत्र दे दिया था ? वे स्वंय भी इसी दुर्लभ पद विशेष पर सुशोभित थीं अर्थात दुर्लभ मार्ग दर्शक विशेष की अहमियत दुर्लभ लिखित विशेष के प्रत्यक्ष होने से कोई कम या खत्म नहीं हो जाती बल्कि रहत मर्यादा विशेष में रहने पर और अधिक सुदृढ़ होती है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । आपके भाग्य अच्छे थे इसीलिये ऐसी "दुर्लभ आत्माओं विशेष" का आप को "दुर्लभ मार्ग दर्शन रूपी योगदान विशेष" उपलब्ध हुआ जो ये लिख कर के दे गई स्वंय को नीचा-कमीना-गुलामों का गुलाम-दासों के दासों का भी दास अथवा जो हम को परमेश्वर गुरू इत्यादि मानेगा पूजा करेगा उन सभी दुर्लभों विशेष के लिये "घोर-2 नरकों" के दरवाजे हमेशा खुले ही रहेगें निश्चित रूप से । आज क्या हो रहा है ? जिस को भी परमात्मा ने यही बातें बताने के लिये अपनी "दया विशेष" उपलब्ध करवाई वो इस ताकत विशेष का दुरूपयोग केवल स्वंय को ही "परमात्मा का दुर्लभ बाप" विशेष स्थापित करने में ही केवल खर्च कर रहा है अपना ही ध्यान पूजा

करवाते हुऐ दुनिया को अन्धे कुँऐं में पूरी तरह से डुबोने का निश्चित साधन विशेष साबित करते हुऐ स्वंय को प्रस्तुत विशेष करने में ही केवल व्यस्त हैं पूरी तरह से निश्चित रूप से । ऐसे दुर्लभ-2 पातशाहों रूपी झूठे नकली परमात्माओं विशेषों से "सच्चे मोमन" अथवा सिख विशेष को पूरी तरह से सावधान रहना ही वांच्छनीय है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले केवल स्वंय के ही "निज कल्याण" हेतू । यदि आप कहो कि आपने कुछ दुर्लभों को अर्थात बिना दुम विशेष वालों को मार्ग दर्शक विशेष बना लिया है "सभा विशेष" के रूप में अपना कर तो निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो कि केवल "अन्धा घोर" ही "अन्धों" का दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष तौर पर कर रहा है केवल "अन्धे कुँऐं" विशेष में ही पूरी तरह से डूब जाने के लिये सदा के वास्ते निश्चित रूप से । जिन कुरीतियों विशेषों पर आपने इन को सुशोभित कर रखा है ये "दुर्लभ कुर्सियाँ" बिना ताज विशेष के दुर्लभ सिंहासन खास ही हैं निश्चित रूप से जो आप से दुर्लभ लाखों-करोड़ों का दान विशेष ही मांगती है यकीनी तौर पर । फिर किस के बाप के पास फालतू के लाखों हैं जो इन दुर्लभ कुर्सियों विशेषों को सुशोभित करने के लिये "दुर्लभ दान विशेष" भी करे और फिर अपनी "दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म" विशेष को केवल आप की "दुर्लभ सेवा विशेष" करने के लिये ही खर्च अथवा नष्ट भी करे ! क्या आपके चेहरे पर "लाल विशेष" लटक रहे हैं जो

आपको इतनी मंहगी तथा दुर्लभ सर्विस विशेष उपलब्ध करवाई जाये ? ऐसा दुर्लभ मूर्ख विशेष आप को ढूंढने से भी उपलब्ध होना केवल असम्भव लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । अर्थात जो करोड़ों खर्च कर के केवल आप की चाकरी करे ऐसी महामूर्ख हस्ती मिलनी केवल दुर्लभ ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो ! यानी के लगभग सभी समाज सेवी-परोपकारी इत्यादि श्रेणी सफेदपोश केवल लोभी स्वार्थी दुर्लभ खूनी भेड़ियों विशेषों का ही छुपने का विशेष उज्जवल सफेद वस्त्र विशेष ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले "सच्चे मोमन अथवा शिष्य विशेषों ।" जिस की आड़ विशेष में तेरी जैसी निरीह भेड़ों विशेषों का शिकार विशेष किया जाता है इन "सफेदपोश लोभी स्वार्थी खूनी भेड़ियों" के द्वारा निश्चित रूप से । इसलिये "हे प्यारी आत्मा विशेष" यदि अपनी कुशल चाहती है तो केवल अपनी निजी निन्दा विशेष ही करवाना पसन्द कर निश्चित रूप से अवगुण रहित हो कर यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । "निंदउ निंदउ मोकउ लोग निंदउ" अर्थात सच्चे मोमन अथवा परमार्थी को दूसरे की निन्दा करनी ही नहीं बल्कि स्वंय की निंदा विशेष करवानी ही पसंद आती है प्रत्येक काल में केवल स्वंय के ही "निज कल्याण" हेतू निश्चित रूप से । "निंदा जन कउ खरी पिआरी" अर्थात "जन " यानी के "सच्चा मोमन", "खरी" अर्थात पवित्र हो जाता है अपनी निन्दा

विशेष करवाने से इसलिये उसे "पिआरी" यानी के इस स्वंय की निंदा करवाने रूपी कार्य विशेष से बहुत पिआर रहता है प्रत्येक काल में । "निंदा बाप" यानी के निन्दा करवाने रूपी कार्य विशेष से "आत्मा विशेष" की सुरक्षा होती है निश्चित रूप से जैसे बाप द्वारा बच्चे की सुरक्षा होती है प्रत्येक काल विशेष में यकीनी तौर पर । "निंदा महतारी" यानी के महतारी जैसे आप के घर की सफाई करती है उसी तरह से निन्दक भी आपका "दुर्लभ सफाई कर्मचारी विशेष" ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "निंदा होई ता बैकुण्ठ जाईये" अर्थात "हे प्यारी आत्मा विशेष इस निन्दा करवाने रूपी कउड़ी सी दवाई विशेष को तू पूरी तरह से अवश्य हज्म ही कर ले क्योंकि तेरा "निज घर" जाने का "विशेष आवश्यक प्रमाण पत्र" उपलब्ध करवा दिया है "प्रभु के दरबारे खास" से दुर्लभ-2 "निदंको विशेषों" में निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । "नाम पदारथ मनह बसाईये" अर्थात तू "घर निज" कैसे जायेगी ? जब मन "नाम" अर्थात केवल प्रकाश के साथ चिपक जायेगा भूत की तरह से चिपकेगा कब ? जब ये शैतानी ताकतों का अंश मन विशेष साफ यानी के पवित्र हो जायेगा निश्चित रूप से और ये दुर्लभ सफाई विशेष तेरे मन की तेरे दुर्लभ-2 सफाई कर्मचारियों विशेषों ने बहुत थोड़े से ही समय में तुझे उपलब्ध करवा दी है निश्चित रूप से । इसलिये तू इनका दुर्लभ एहसान विशेष ही मान प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "रिदे सुध जउ

निंदा होई" अर्थात "सावधान" विशेष रूप से तेरी निंदा विशेष केवल तेरे "शुद्ध हृदय" विशेष के कारण ही होनी चाहिये यानी के तेरे में अवगुण ना हो और तेरा "प्रचार विशेष" ऐसा हो कि तू अवगुणों का "दुर्लभ भण्डार विशेष-2" ही है निश्चित रूप से तभी तेरा कार्य विशेष सिद्ध होगा यकीनी तौर पर प्रत्येक काल विशेष में। यदि अवगुण विशेष होगा तेरे में और ब्यान किया जायेगा तो केवल निंदा करने वाले को ही लाभ विशेष होगा निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो। "प्रभु" की "रजा विशेष" में स्वंय के तेरे रहने पर यदि किसी के पेट में वट (मरोड़) विशेष पड़ते हैं तो निश्चित रूप से तेरा "निज घर" विशेष अथवा बैकुंठ जाना ही पक्का साबित हो रहा है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में गाँठ बाँध ले। "हमरे कपरे निंदक धोई" अर्थात जैसे धोबी गंदे या मैले वस्त्रों को धो-रगड़ कर साफ कर देता है ना वैसे ही ये तेरे "दुर्लभ-2 सफाई कर्मचारी" विशेष भी तेरी अनन्त जन्मों की पाप रूपी पोटलियों विशेषों को केवल अपने सिरों पर उठा कर तेरे को बैकुण्ठ अर्थात "निज घर विशेष" तक जाने के लिये तुझे हल्का कर देते हैं ताकी तू आसानी से अपने "दुर्लभ सफर विशेष" को बिना बोझा कर्मो विशेष का ढोये ही तय करती चली जाये अथवा पहुँच जाये निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले। ऐसे "दुर्लभ धोवी" तुझे भला कहाँ मिलेंगे जो तेरी जन्मों-2 की कर्मो रूपी मैल विशेष को बिना कुछ भी दाम तुझ से लिये साफ कर देवें। तुझे अर्थात आत्मा विशेष

को निर्मल पाक-पवित्र बनाने का मुफ्त का साधन विशेष ही हैं ये "दुर्लभ-2 सफाई कर्मचारी विशेष" निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । इन्हें कभी भूले से भी नाराज अथवा निराश मत करियो वर्ना सारा मामला बीच में ही अटक जायेगा । अर्थात इन्हें व्यस्त रखने का निरन्तर कुछ न कुछ बंदोबस्त अवश्य आवश्यक रूप से करती ही रहियो प्यारी आत्मा विशेष केवल अपने "निज कल्याण" हेतू ही निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । चूहे को यदि कुतरने को कुछ न मिले तो वह पहनने के वस्त्र आवश्यक ही कुतरने लगता है उसी तरह से इन दुर्लभ सफाई कर्मचारियों रूपी चूहों विशेषों को भी कुतरने अथवा सफाई करने का कुछ न कुछ "मसाला विशेष" अवश्य मिलता अथवा उपलब्ध रहना ही चाहिये वरना इस "मसाले विशेष" के अभाव में ये चूहे विशेष तेरे गुण रूपी आवश्यक पहनने के वस्त्रों को ही कुतरने लगेंगे अथवा ब्यान करने लगेंगे तुझे नुकसान पहुँचाने हेतू ही निश्चित रूप से । इसलिये स्वंय को इस नुकसान विशेष से बचाने के लिये ही केवल इन दुर्लभ चूहों विशेषों के आगे कुछ न कुछ चारा विशेष धरे ही रखियो इन्हें व्यस्त रखने हेतू ही निश्चित रूप से । तेरे कुल विशेष का उद्धार अब इसी में निहित है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले प्यारी आत्मा विशेष प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । "निंदा करे सु हमारा मीत" अर्थात "सच्चे मोमन" विशेष का कल्याणकारी मित्र अथवा प्यारा तो

केवल वही है जो उसकी सफाई विशेष करने में मददगार साबित होवे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । जो कोई भी तेरी सफाई विशेष में बाधा विशेष प्रस्तुत करे वो कैसे तेरा मीत अथवा प्यारा हो सकता है प्यारी आत्मा विशेष ? ऐसी बाधा विशेष को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भी उपलब्ध करवाने वाले से सदा सावधान ही रहियो प्रत्येक काल में खास तौर पर यकीन के साथ निश्चित रूप से । "निंदक माह हमारा चीत" अर्थात तेरा मन इन "दुर्लभ-2 सफाई कर्मचारियों" विशेषों के प्रति सदा ईमानदार होना चाहिये यानी के इन की "खुराक विशेष" समय पर उपलब्ध करवाती रहिओ "सच्चे मोमन रूपी आत्मा परमार्थी विशेष ।" "सफाई विशेष" के लिये इन चूहों विशेषों को कुछ न कुछ कर्म विशेष उपलब्ध करवाते ही रहना अवश्य आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में इन्हें व्यस्त रखने हेतू ही पूरी तरह से निश्चित रूप से । "निदंक सो जो निंदा हौरे" अर्थात सच्चा ईमानदार निंदक अथवा सफाई कर्मचारी तो केवल वही कहलाने का अधिकारी है जो बिना किसी के कहे अपने आप इस "दुर्लभ सफाई अभियान" विशेष को सफल बनाने में ही केवल पूरी तरह से व्यस्त रहता है यानी के सफाई करने के लिये अपने दुर्लभ कार्य विशेष में बिना किसी के कुछ भी कहे निरन्तर जुटा ही रहता है दिन रात ढूंढ-ढूंढ कर पूरी तरह से सभी प्रकार के दुर्लभ-2 पापों विशेषों को भी धो रगड़ कर पूरी तरह से साफ-पवित्र बना

ही देता है "आत्मा विशेष" को यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । "हमरा जीवन निंदक लौरे" अर्थात जब "आत्मा विशेष" की पूरी तरह से सभी प्रकार के कर्मो विशेषों से छुट्टी नहीं होती, आत्मा आगे के जीवन की कल्पना करने में भी केवल असम्भव लफ्ज को ही समर्थ बनाने में सफल है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "आत्मा विशेष" प्रत्येक छोटे से छोटा हिसाब विशेष भी पूरी तरह से चुकाने के बाद केवल अगला कदम विशेष बढ़ाने का हौसला रख सकती है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस "दुर्लभ सफाई विशेष" से ही "आत्मा विशेष" को अगला दुर्लभ जीवन विशेष उपलब्ध होता है निश्चित रूप से । अर्थात केवल "पवित्र आत्मा विशेष" ही अदृश्य सूक्ष्म संसार विशेष में प्रवेश करने योग्य साबित होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "निंदा हमारी प्रेम पिआर" अर्थात निंदा यानी के सफाई विशेष पर प्रत्येक "सच्चे परमार्थी" विशेष को पूरी तरह से लगातार ध्यान देना ही चाहिये प्रत्येक काल में अवश्य आवश्यक रूप से । ऐसे जैसे प्यासे का जल से प्यार है निश्चित रूप से । "निंदा हमारा करै उधार" अर्थात सफाई विशेष "आत्मा विशेष" को इस भयानक कैदखाने से सदा के लिये मुक्त करवाने का आवश्यक साधन विशेष ही साबित होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । "जन कबीर कउ निंदा सार" जन यानी के सच्चे मोमन अथवा परमार्थी विशेष के लिये सफाई विशेष "प्रभु के दरबारे खास" से निज घर पहुँचने

का "आत्मा विशेष" को निश्चित रूप से "दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष" ही है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । "निंदक डूबा हम उतरे पार" अर्थात ये "दुर्लभ सफाई कर्मचारी" अथवा निंदक विशेष दुनिया की सफाई विशेष करते-2 अर्थात पाप रूपी कर्मों विशेषों का बोझा ढोते-2 ही इस "भयानक अन्धे कुँएं" विशेष में ही सदा के लिये डूब जाते हैं । दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित निश्चित रूप से तथा "आत्मा विशेष" जिसकी निंदा अथवा सफाई विशेष ही हो जाती है फिर भला उस "दुर्लभ आत्मा विशेष" का इस भयावले अन्धे महासागर में गोता लगाने का क्या प्रयोजन शेष बचता है ? अर्थात वो "दुर्लभ आत्मा विशेष" इस भयानक भवसागर से पार यानी के अपने "निज घर" विशेष में ही पहुँच जाती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इसलिये "हे प्यारी आत्मा विशेष" यदि अपना "निज कल्याण" चाहती है तो अपने मन को इन निंदा रूपी "महा दलदल" में डूबने से सदा उपराम रख तथा "अनदिन जपह गुरू गुर नाम" अर्थात दिन रात इन "मन अथवा शैतानी ताकतों" के अंश विशेष को सभी गुरूओं दुर्लभों के "सर्वश्रेष्ठ गुरू" प्रत्येक काल में निश्चित रूप से नाम यानी के "केवल प्रकाश" अथवा "रागमई प्रकाशित आवाज" के साथ जोड़ या जप । "जप" का भाव आत्मिक समर्था का इस "रागमई प्रकाशित आवाज" को देखना तथा सुनना ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो । यह "दुर्लभ

समर्था विशेष" जप की "आत्मा विशेष" को केवल "प्रभु" की "दुर्लभ दया विशेष" के प्रत्यक्ष होने पर ही उपलब्ध होती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में तब जब "जीवात्मा" अपने को सभी पापों से उपराम अथवा तौबा कर लेती है निश्चित रूप से । केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" की "रजा विशेष" में ही रहना तथा "कुर्बान" होना पसन्द करती है पवित्रता से निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । (इस वचन में ऐसा कोई भी भाव ही नहीं है कि आप "दलालों विशेषों" से "नाम" का निकृष्ट दान विशेष लेंगे तभी जप विशेष होगा । "सावधान" "परमात्मा" ने ऐसा कोई भी "दलाल विशेष" निर्धारित नहीं किया है कि पहले आप उस दलाल विशेष से मुहर लगवाओ फिर मैं यानी के "प्रभु" आप से बात अथवा सुरक्षा करूँगा निश्चित रूप से ऐसे लोभी, भेड़ की सफेद खाल विशेष में छुप हुऐ खूनी भेड़ियों से लगातार सावधान रखें स्वंय को केवल स्वंय के ही "निज कल्याण" हेतू यकीनी तौर पर ।) "ताते सिद्ध भये सगल काम" अर्थात तभी तेरे सभी जन्म मरन रूपी बंधन विशेष कटेंगे । यानी के तुझे अपनी मंजिल विशेष- (निज घर पहुँचने की) तक पहुँचने की समर्था विशेष उपलब्ध हो सकेगी "प्रभु के दरबारे खास" से निश्चित रूप से तथा तेरा असम्भव जैसा "दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष" भी "सम्भव सिद्ध" हो सकेगा यकीनी तौर पर निश्चित रूप से ।

इस दुर्गम पथ विशेष पर केवल वही "आत्मा विशेष" पाँव धरने का हौंसला विशेष रखे जो निरन्तर "मौत से खिलवाड़" करना विशेष रूप से पसन्द करती है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । जिस आत्मा को केवल "मौत" नाम का लफ्ज विशेष सुनने से ही कंपकंपी छूटती है उसके लिये ये "मार्ग विशेष" नहीं है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । ऐसी कमजोर आत्मा विशेष को दूर से ही आखिरी नमस्कार है निश्चित रूप से यकीन के साथ "ओन्ही मंदै पैर न रखिओ करि सुकृत धरम कमाइआ" अपना अथवा दूसरे का समय व्यर्थ करना बुद्धि का विषय नहीं हो सकता प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "जित मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द" केवल सिर हथेली पर धरे ही मौत से लगातार खेलने वाला दुर्लभ आत्मा विशेष ही आगे आये प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जिस "दुर्लभ आत्मा विशेष" को "मौत से खेलने" में आनन्द प्राप्त होता है निजी शौंक के रूप में विशेष तौर पर निश्चित रूप से अवश्य आगे बढ़े । "शैतानी ताकतें" कोई तमाशा नहीं है जो आप शक्लें विशेष देखोगे और आप को मुक्ति का दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष ही लिख कर के दे देंगी निश्चित रूप से । यह तो अपने ही "खून विशेष" से निरन्तर होली खेलने का "दुर्लभ शौंक अथवा निजी व्यवसाय" विशेष ही है "दुर्लभ आत्मा विशेष" का निश्चित रूप से प्रत्येक

काल में विशेष रूप से । "मरने (केवल जीते जी) ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द!"

आप ऐसी आत्माओं विशेषों से दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष तौर पर प्राप्त कर रहे हैं जो स्वंय के मरने का केवल एक लफज विशेष भी नहीं जानती कल्पना में भी निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । इन आत्माओं विशेषों को तो केवल दुनिया को लूटना-खसोटना तथा मारना ही आनन्द देता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । ये "खूनी लोभी स्वार्थी दरिन्दे" सन्त अथवा महन्त इत्यादि लफजों विशेषों के पीछे सफेद-2 चोलों विशेषों में छुपे हुऐ बैठे हैं निश्चित रूप से । सामने इन्होंने "ग्रन्थ विशेष" को स्थापित कर रखा है केवल अपनी "खूनी हवस विशेष" को स्थापित कर रखा है केवल अपनी "खूनी हवस विशेष" को पूरा करने के लिये ही यकीनी तौर पर दुनिया की आँखो में मिट्टी डालने हेतू ही निश्चित रूप से । इस "ग्रन्थ विशेष" की आड़ में जो नंगा काम अथवा कामनाओं विशेष का "घोर भयानक खेल" विशेष सरेआम खेला जा रहा है उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । कलम में इन "लोभी खूनी भेड़ियों" द्वारा दुनिया की लूटी जा रही कीमती "अस्मत विशेष" को ब्यान अथवा प्रत्यक्ष करने की क्षमता नहीं है । इन "खूनी लोभी स्वार्थी भेड़ियों" को मालूम नहीं कि जिन्होंने इस "ग्रन्थ विशेष" को प्रत्यक्ष किया है उनकी "नजर विशेष" इन दुरूपयोग

करने वाले "खूनी दरिन्दों विशेषों" पर भरपूर है । दाड़ी अथवा सफेद वस्त्रों विशेषों इत्यादि की आड़ विशेष में तू दुनिया को तो धोखा झूठा नकली विशेष दे सकता है पर जो जड़ चेतन में भरपूर समाया हुआ है निरन्तर प्रत्येक काल में उस "प्रभु" विशेष को तू कैसे मूर्ख बनाने में समर्थ हो सकेगा कभी सुपने में भी "मूर्ख प्राणी विशेष" ? केवल असम्भव लफज को ही सार्थक बनायेगा तू "लोभी स्वार्थी खूनी दरिन्दों" विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । तुझे मालूम नहीं इन कार्यो विशेषों से तू केवल अपने लिये दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित केवल अनन्त काल तक के लिये "घोर-2 नर्को विशेष" में तड़पने का सामान विशेष प्रचुर मात्रा में एकत्र कर चुका है । जब "भयानक-2 नर्को विशेषों" की तड़पाने वाली आगों विशेषों में तुझे जलाया जायेगा ना तब तुझे सब कुछ याद करवा दिया जायेगा कि कैसे "दुनिया का खून" विशेष पिया जाता है किसी की "मजबूरी विशेष" का फायदा विशेष उठाते हुऐ निश्चित रूप से । कितने दिन काट लेगा यहाँ झूठ के ? "मौत की भयानक काली स्याह अमावस घोर" केवल तेरे आने भर का ही इन्तजार कर रही है घोर-2 नर्को विशेष में जो फिर कभी खत्म होने वाली नहीं है "शैतान की आंत" की तरह से निश्चित रूप से तू जान ले अभी से । "जो निंदा करे" अर्थात जो कोई भी "आत्मा विशेष" दुरूपयोग करती है "प्रभु" की दुर्लभ उपलब्धी विशेष की अर्थात "सतिगुर पूरे की" यानी के

गुरू अर्थात शब्द विशेष केवल "रागमई प्रकाशित आवाज" जो सृष्टि का प्रत्येक काल में रहने वाला "सत" विशेष ही है निश्चित रूप से । सतिगुर अर्थात केवल "अकाल पुरख परमात्मा" की "आत्मिक प्रेरणा" (विशेष दुर्लभ) को जो कि ग्रन्थ विशेष के रूप में प्रत्यक्ष है का दुरूपयोग विशेष करने वालों का अन्जाम भी विशेष ही है निश्चित रूप से ! (इस ग्रन्थ विशेष का भाव "परमात्मा या परम चेतन सत्ता विशेष" कभी सुपने में भी नहीं सावधान ! इस दुर्लभ "प्रभु" प्रेरणा विशेष को केवल चेतन आत्मा के निजी कल्याण के लिये ही प्रत्यक्ष किया गया है केवल "दुर्लभ मार्ग दर्शन" हेतू ही निश्चित रूप से । जड़ की चेतन विशेष से तुलना केवल मूर्खता का प्रमाण पत्र विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर।) क्या अन्जाम विशेष है ? "अउखा जग में होइआ" जग अर्थात तीनों मुल्क जो "शैतानी ताकतों" के अधीन हैं विशेष रूप से खेल विशेष के अहम अंग के रूप में यकीनी तौर पर । "अउखा" यानी के घोर-2 अभावों विशेषों को भुगतने के लिये आत्मा विशेषों को मजबूर किया जाना निश्चित रूप से । आत्मा विशेष को जो इस दुर्लभ "प्रभु प्रेरणा" विशेष का दुरूपयोग करती है अपने लोभ अथवा स्वार्थी विशेषों को पूरा करने के लिये उसे इन मुल्कों में निकृष्ट भोगी पिंजरों को रोशन करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है "मुआवजे" दुर्लभ की वजह से खास तौर पर "शैतानी ताकतों" की इस दुर्लभ भेंट

विशेष को अवश्य स्वीकार करना ही पड़ता है दुरूपयोग करने वाली आत्मा विशेष को आवश्यक रूप से अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । "नरक घोर दुख खूह है-उत्थे पकड़ ओह टोइआ" अर्थात नर्क घौर भयानक अन्धा कुँआ है जहाँ दुर्लभ प्रभु प्रेरणा का दुरूपयोग करने वाली आत्मा विशेषों को पकड़-2 कर मारा-घसीटा तथा जलाया जाता है अनन्त काल तक के लिये अनन्त भयानक-2 दुखों विशेषों को भुगतने हेतू निश्चित रूप से । "कूक पुकार कोई न सुणे ओखा होये होये रोया" अर्थात ऐसा दुरूपयोग करने वाली आत्माओं तथा खूनी दरिंदो विशेषों का घौर-2 नर्को विशेषों में तड़पना तथा चीखों पुकार को देखने सुनने वाला कोई भी नहीं होता निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । वहाँ इन "लोभी खूनी स्वार्थी भेड़ियों" विशेषों को बहुत-2 खून के आँसू रोना पड़ता है अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से यकीनी तौर पर-मजलूम दुनिया का खून पीने के एवज रूप में । वहाँ पर इन "लोभी खूनी स्वार्थी भेड़ियों" को काटा जाता है छोटे-2 टुकड़ों मे बदलने हेतू-गर्म-2 सलाखों से दागा जाता है-नोचा जाता है गर्म-2 जमूरों से-उबाला जाता है-जलाया जाता है इत्यादि-बहुत-2 मार तथा भयानक-2 यातनाऐं विशेष-2 सहनी पड़ती हैं तरह-2 के तरीकों विशेषों से निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो "खूनी लोभी स्वार्थी भेड़ियों ।" "हरि वेखे सुणे नित सभ किछ तिदू किछ गुफा न होईआ" अर्थात "अकाल पुरख परमात्मा" की "नजर विशेष"

प्रत्येक जड़ चेतन पर भरपूर समाई हुई है निश्चित रूप से निरन्तर, उस दुर्लभ "नजर विशेष" से कुछ भी छुपा नहीं है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । तेरी समस्त "सफेद पोश चालाकियाँ" दाड़ी चोलों विशेषों रहित विशेष-2 उस "नजर विशेष" को धोखा देने में केवल असमर्थ ही साबित होंगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । "जैसा बीजे सो लूणे जेहा पुरब किने वोइआ" अर्थात जैसा भी कर्म विशेष रूपी बीज "मनुष्य के दुर्लभ जन्म" में "आत्मा विशेष" बीजती है उस "आत्मा विशेष" को अपने बीजे गये कर्म रूपी बीज विशेष का फल विशेष विद इंटरेस्ट अनन्त काल के बाद भी पूरा-2 भुगतने अथवा हज्म करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार इन शैतानी मुल्कों विशेषों में यकीनी तौर पर । कोई भी आत्मा विशेष अनन्त प्रयत्नों विशेषों के बावजूद अपने बीजे हुऐ इस कर्म विशेष के "फल विशेष" को बदलने में केवल असमर्थ ही साबित होती हैं दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । अर्थात "खूनी लोभी स्वार्थी दरिन्दे" तूने "खूनी बीज विशेष" तो बीज लिये हैं अब केवल तुझे विद इंटरेस्ट अपने इस "दुर्लभ-2 भयानक-2 फल विशेषों" को पूरी तरह से हज्म विशेष करने के लिये अवश्य तैयार हो जाना चाहिये । यह दुर्लभ नतीजा विशेष तेरे अपने ही हाथों विशेष द्वारा निकाला जा चुका है यकीनी तौर पर बस तेरे आने भर का "इन्तजार विशेष"

हो रहा है पूरी "सज-धज" के साथ विशेष रूप से "शैतानी ताकतों" द्वारा निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । जैसे केवल एक छोटा सा बीज विशेष बीजने पर पूरा पेड़ बरसों तक फल विशेष उपलब्ध करवाता रहता है उसी तरह से केवल एक विशेष छोटा सा पाप रूपी बीज बीजने पर भी अनन्त काल तक पाप बीजने वाली आत्मा विशेष को "घोर-2 नरकों विशेषों" में भयानक-2 दुख रूपी फल विशेष उपलब्ध करवाता ही रहता है केवल एक छोटा सा पाप रूपी कर्म विशेष अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो "लोभी स्वार्थी खूनी दरिन्दों" विशेष रूप से। अब जो आत्मा विशेष बरसों तक "मजलूम दुनिया" का खून विशेष पीती है उन को उपलब्ध होने वाले दुखों विशेषों को कैसे ब्यान किया जाये ? आप की समस्त झूठी अरदासें विशेष-2 ग्रन्थ विशेष का नकली पठन इत्यादि व्यवसाय विशेष केवल स्वंय को घोर-2 नरकों विशेषों में प्रवेश दिलवाने का दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो "लोभी स्वार्थी खूनी दरिन्दों" विशेष रूप से । ये खिलवाड़ विशेष इस "दुर्लभ प्रभु प्रेरणा" विशेष का आपके लिये बहुत महंगा साबित हो चुका है केवल प्रत्यक्ष होना बाकी है निश्चित रूप से । इस स्वंय को लुटवाने का कारण विशेष भी आप की अपनी कमी विशेष ही है अर्थात आप बिना कुछ भी परमार्थ किये सुख चाहते हो वो भी "दुर्लभ मुक्ति" खास । इस दुर्लभ पुरूषार्थ विशेष का क्या ढंग

विशेष अपना रखा है आपने ? एक या अनेक मंगल या शनिवार इत्यादि विशेष-2 दिनों को स्थान विशेषों पर नाक रगड़ लो अरदासें कर लो झूठी विशेष तौर पर बस "मुक्ति" विशेष गाँठ बाँध कर घर ले आते हो अथवा दुर्लभ-2 मांगें विशेष पूरी कर दी जाती हैं या सभी दुख-रोग हवा हो जाते हैं ! आप सच जान लो अपनी पूरी जिन्दगी विशेष के सभी दिन, किसी सिद्धि विशेष से मंगल या शनिवार इत्यादि दिनों विशेषों के रूप में तबदील कर लो फिर प्रत्येक दिन इन स्थानों विशेषों पर कर्मकाण्ड विशेष-2 कर अथवा करवा लो, मन्त्र विशेष-2 पढ़ लो या अखण्ड पाठ कर अथवा करवा लो झूठी अरदासों सहित, आपको बिना स्वंय के पुरूषार्थ किये केवल एक छोटी सी जंग लगी हुई पिन भी उपलब्ध नहीं हो सकेगी इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" से इन मुल्कों में विशेष रूप से गाँठ बाँध लो प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर भी आप तेल अथवा बिना तेल की बोतलें विशेष लिये हुऐ इन लाईनों विशेषों को लम्बा करने में ही दुर्लभ मदद रूपी योगदान विशेष देते हुऐ आवश्यक रूप से केवल व्यस्त हो दिन रात निश्चित रूप से । सृष्टि केवल कर्म पर आधारित है और कर्म केवल आत्मा को केवल मनुष्य के दुर्लभ जन्म विशेष में ही कमाना पड़ता है बिना कर्म विशेष के कमाये कभी भी किसी को कुछ भी इन "शैतानी ताकतों" से उपलब्ध होना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो यकीनी तौर

पर । कर्म आसमान से उतर कर आपके खाते विशेष में कैसे अथवा कौन दर्ज कर सकता है ? आप मीठी कल्पना के झूठे संसार विशेष से अपने को निकालो तथा सुखी होने के लिये पुरूषार्थ विशेष करो । तभी "प्रभु" की "दया विशेष" से कुछ उपलब्ध करवा पाने में आप समर्थ हो सकोगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में इन "शैतानी मुल्कों विशेष" में यकीनी तौर पर । सभी प्रकार के दुख विशेष केवल आप के स्वंय के द्वारा ही कमाये हुऐ हैं प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । यदि सुख चाहते हो तो दुख को बीजना बंद करो । जिसका आधार पाप विशेष ही है । समस्त पापों की जड़ केवल लोभ विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में लोभी विशेष कभी सुख विशेष को उपलब्ध नहीं कर सकता निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । लोभी तो केवल अनन्त काल तक दुखी होने का ही सामान विशेष एकत्र करने में निजी तौर पर व्यस्त है यकीनी तौर से । केवल "जीते जी ही" इस उपलब्ध "कब्र विशेष" को पूरी तरह से "प्रभु की दया विशेष" से जीतने वाला "दुर्लभ आत्मा विशेष" ही केवल "पूर्ण परम आनन्द" के महासागर यानी के "अकाल पुरख परमात्मा" में डुबकी विशेष लगाने के योग्य बना पाता है स्वंय को सदा के लिये सुखी होने के वास्ते निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो । सभी प्रकार के धन्धे विशेष-2 दुर्लभ-2 स्थानों डेरों विशेषों पर "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का ही केवल न दिखाई देने वाला

"भयानक महाजाल" विशेष ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध ले । आत्मा को फँसाने का एक मीठा सा फंदा विशेष यकीनी तौर पर । "कब्र" विशेष को जीतना इतना आसान नहीं है सभी "शैतानी ताकतें" पूरी "समर्था विशेष" से तुझे रोकने के लिये तेरे इसी कब्र अथवा शरीर विशेष में प्रत्यक्ष उपलब्ध हैं निश्चित रूप से । "काइआ अन्दर ब्रहमा-विशन-महेस सभ ओपत जित संसारा अर्थात जिन "ताकतों विशेषों" को सामने रख कर संसार विशेष को प्रत्यक्ष किया गया है ये सभी ताकतें विशेष-2 "शैतानी ताकतों" के नुमाइंदे मात्र ही हैं निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो । जिन्हें तू परमात्मा समझ कर पूज रहा है यही तेरी "आत्मिक मौत" का "दुर्लभ कारण" विशेष ही है निश्चित रूप से । "सचै आपणा खेल रचाइआ आवागउण पसारा" अर्थात "सचे" यानी के "परम चेतन सत्ता" विशेष ने बड़ी चालाकी से इस "दुर्लभ खेल" विशेष को प्रत्यक्ष किया है । नकली परमात्माओं को पूजने का फल आत्मा विशेष के लिये केवल "आवागउण" यानी के जन्म-मरन ही है इन तीनों "शैतानी मुल्कों" विशेष में निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो ! "काइआ अन्दर सब कुछ वसै खंड मंडल पाताल" अर्थात अनन्त ब्रह्मण्डों का दुर्लभ "अश्क विशेष" भी तेरे इसी शरीर में उपलब्ध है खास तौर पर । "काइआ अन्दर जगजीवन दाता वसै सभना करै प्रतिपाला" अर्थात वो महा चालाक "परम चेतन सत्ता" भी तेरे इसी शरीर में खास स्थान पर छुप कर बैठी है जो "जग" यानी

के संसार को जीवन "दाता" यानी के दुर्लभ विशेष प्राण दान दे रही है निश्चित रूप से । तेरे द्वारा पूजे जा रहे सभी नकली-2 परमात्मा विशेष भी केवल इसी "परम चेतन सत्ता" से ही जिन्दगी विशेष उधार में मांग कर जी रहे हैं निरन्तर तथा यह "परम चेतन सत्ता" ही केवल इन नकली परमात्माओं विशेषों का भी निरन्तर "प्रतिपाला" यानी के पालन विशेष कर रही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो ।

"मरता मरता जग मुआ मर भी न जाने कोई" अर्थात सारा संसार निरन्तर केवल मर ही रहा है पर जीते जी मरने का भेद दुर्लभ ही है । वही जानता है जो स्वंय जीते जी मरता है निश्चित रूप से । "ऐसी मरनी जो मरे बहुर ना मरना होय" अर्थात ऐसी जीते जी मरने वाली "दुर्लभ आत्मा विशेष" फिर बार-2 जन्म-मरन के इस भयानक महासागर रूपी संसार विशेष में दुख घोर उठाने के लिये फिर से उपलब्ध ही नहीं होती निश्चित रूप से सदा के लिये यकीनी तौर पर अवश्य आवश्यक रूप से "पूर्ण मुक्त" ही हो जाती है ।

"नच नच टपह बहुत दुख पावह" अर्थात अपने कीमती दुर्लभ मनुष्य के जन्म को इस "जीते जी मरने" वाले आवश्यक कार्य विशेष पर खर्च करने के बजाय गाने-बजाने-नाचने कूदने वाले इत्यादि निकृष्ट के धन्धों विशेषों पर खर्च करने वाली आत्मा

विशेष को बहुत-2 दुख उठाने पड़ते है इस "प्रमाद विशेष" के बदले अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । "नचिऐ टपिऐ भगत न होई" अर्थात गाने बजाने-नाचने कूदने वाली आत्मा विशेष और कुछ भी कार्य करने में समर्थ हो सकती है केवल "परम चेतन सत्ता" को प्रत्यक्ष अनुभव करने वाले दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष को सम्पन्न करने में अवश्य पूरी तरह से स्वंय को असमर्थ ही साबित करेगी निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो । इसलिये "हे प्यारी साहिबा" "हँसना दूर कर रोने से कर चीत । बिन रोये क्यूं पाइये प्रेम प्यारा मीत ।" "हँस हँस कंत किन्हे न पाइयो । जिन पाइयो तिन रोये । हँसी खुशी पिया मिले तो कौन दुहागिन होये" ? जो पूछे उसी भी ये नुस्खा विशेष लिखा दे "प्यारी साहिबा !" नुस्खा खाने से क्या लक्षण प्रत्यक्ष होते हैं ? "सुखिया सब संसार है खावे है और सोवे है । दुखिया दास कबीर है जागे है और रोवे है" (खून के आँसू) !

जब से इस नीच जात के जुलाहे विशेष ने माई से नुस्खा लिखवा कर नेम से खाना शुरू किया बिना नागा तो जिस रोग विशेष को लेकर आया था बचने के लिये ये दुर्लभ रोग उल्टा "महामारी" विशेष ही बन कर उस बेचारे नीच जात के पूरे शरीर में फैल कर रोम-2 से प्रत्यक्ष होने लगा । ये "महामारी" विशेष "महाभूत" बन कर बेचारे नीच जात के जुलाहे विशेष को चुमड़ (चिपक) गई । ये मुफ्त का नुस्खा विशेष माई का दिया हुआ

बेचारे जुलाहे को बहुत महंगा साबित हुआ । अब क्या नतीजा निकला इस "हरी नाम की दुर्लभ महामारी" विशेष का ? "मन निरमल भया जैसे गंगा नीर । पाछे लागो हरि फिरे कहत कबीर कबीर ।" अब बेचारा जुलाहा नीच जात का जहाँ कहीं भी इस महारोग से बचने के लिये दौड़ता है ये "हरी" नाम का "महामारी" रूपी "महाभूत" सब ओर जड़ चेतन में पहले से ही भरपूर समाया हुआ भूत की तरह से प्रत्यक्ष बेचारे नीच जात के जुलाहे को धर दबोचता है । बेचारे के साथ बहुत बुरी हुई । भाई अब तो ये "दुर्लभ महामारी" विशेष जान ले कर के ही बख्शेगी नीच जात के जुलाहे विशेष को पूरी तरह से भाई अब तो इस नीच जुलाहे का इन "शैतानी मुल्कों" विशेष से सदा के लिये पत्ता विशेष पूरी तरह से साफ ही हो गया दीखता है निश्चित रूप से । ये "कब्रिस्तान विशेष-2" तो बेचारे जुलाहे नीच के हाथों से पूरी तरह से निकल ही गये दीखते हैं निश्चित रूप से जान लों । अब जुलाहे नीच ने सोचा कि मैं तो डूबा ही हूँ अब औरों को भी साथ ले कर डूबूंगा उस हरी नाम की "दुर्लभ महामारी विशेष" में निश्चित रूप से । अब इस नीच का क्या धन्धा है ? ये तो पूरी नीचता पर ही उतर आया है यकीनी तौर पर । "कबीरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ । जो घर फूंके आपणा चाले हमारे साथ ।" खुद तो पूरी तरह से डूब ही चुका है इस दुर्लभ हरी नाम की "महामारी विशेष" में अब औरों को डूबने में मदद करने का "दुर्लभ व्यवसाय विशेष"

अपना रखा है नीच जुलाहे ने निश्चित रूप से । यदि आप को भी इस "महामारी दुर्लभ" विशेष में पूरी तरह से डूबने का दुर्लभ शौक़ विशेष है तो भाई इस नीच को बाजार से पकड़ लाओ, बिना कुछ भी आप से लिये ये नीच जुलाहा आप को आपका ही घर विशेष आपके ही हाथों विशेष से फूकंने में पूरी मदद दुर्लभ करेगा निश्चित रूप से । ज्यादातर वेला (खाली) ही रहता है बेचारे को कोई भी कस्टमर विशेष मिलता ही नहीं "बरसों" जिसके कारण घर में "भुखमरी विशेष" ही व्याप्त रहती है निश्चित रूप से । "दुर्लभ कस्टमर विशेष" की तलाश में बेचारा नीच जुलाहा गाँव-2 ठोकरें खाता फिरता है। अब बेचारे को कोई ढंग का एक भी दुर्लभ कस्टमर विशेष मिला ही नहीं जो यह कहे कि चलो केवल "मेरा घर विशेष फूंके ।" इसे तो केवल ऐसे ही कस्टमर विशेष-2 मिलते हैं जो दूसरों का घर विशेष फूकंने में ही केवल "इन्ट्रैस्टिड" होते हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । भूख बहुत दानवला ही है "प्रभु" सब की सुनता है । शायद आप ही इस विशेष तौर पर भूखे बेचारे की कुछ "मदद विशेष" कर सको ! अपने हाथों ही केवल अपना ही घर विशेष फूंकने का "शौक़ दुर्लभ" विशेष पाल कर । यदि आपको भी ऐसा ही कोई दुर्लभ विशेष कार्य अच्छी तरह से पूर्ण सम्पन्न करना है तो इस नीच जुलाहे का पता विशेष माई जी के पास उपलब्ध है बाजार में न मिलने पर घर पर ही पकड़ लेना । काफी "निपुण" है अपने दुर्लभ पेशे विशेष में शीघ्र ही आपका

सब कुछ आप दुर्लभ सहित पूरी तरह से सवाहा करने में देर नहीं लगायेगा बेचारा "नीच जुलाहा" निश्चित रूप से । इतनी गारंटी तो भाई कोई भी दे ही देगा उपलब्धी विशेष को "मध्य नजर" रखते हुऐ यकीनी तौर पर आपको शर्मिंदा होने के लिये कुछ भी उपलब्ध ही नहीं होगा आप सहित निश्चित रूप से । अब तो बेचारे जुलाहे विशेष का मर्ज विशेष ला-इलाज ही हो गया है दौरे विशेष पड़ने लगे हैं । सब में उसे ये महाभूत विशेष ही समाया हुआ दिखाई देता है निश्चित रूप से "तू तू करता तू हुआ मुझ में रहा ना हूं । जब आपा पर का मिट गया जत देखूं तत तू !" "समझे कि समझाई ।" समझने वाले समझ गये हैं ना समझे वो अनाड़ी हैं अरे भाई "महामारी जी" ये क्या तीर विशेष चला गई भाई । दुनिया तो लूट कर के ले गई हमारे लिये क्या "नाड़ी" भी नहीं बची ? "महामारी विशेष" अरे निखट्टू रो मत । तुझे नहीं पता ये माई मोटा सा गोल-2 चश्मा लगा कर लिखती है "गाड़ा-गाड़ा सा विशेष ।" सब के पल्ले पड़ने वाला नहीं है विशेष तौर पर । "वो चाँद हँसा ये तारे खिले । ये रात अजब मतवाली है समझने वाले समझ गये हैं जो ना समझे-जो ना समझे वो अनाड़ी हैं" अर्थात माई चाँद कहती है "परम चेतन सत्ता" को । "हँसा" का भाव है । "प्रभु" की "दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा विशेष" जो "दुर्लभ लिखित विशेष" के रूप में प्रत्यक्ष उपलब्ध ही है निश्चित रूप से । "रात" का भाव दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष को बताती हैं । "अजब"

को बताती है कि जो "आत्मा विशेष" "शैतानी ताकतों" के मुँह पर थूक विशेष देवे निश्चित रूप से प्रत्येक उपलब्ध शह विशेष को ठुकरा कर निश्चित तौर पर प्रत्येक काल विशेष में "मतवाली" अर्थात आत्मा विशेष "प्रभु" की उपलब्ध आत्मिक प्रेरणा का व्यवहारिक स्वरूप ही हो जाये अपने इस मनुष्य जन्म रूपी रात विशेष में तो अवश्य अजब यानी के हैरानी का ही विशय विशेष है यकीनी तौर पर । फिर ये "तारे" यानी के "आत्मा विशेष" अवश्य "खिल" जाती है अर्थात अपनी निजी समर्था विशेष बारह सूर्यो जैसा प्रकाश को प्रत्यक्ष उपलब्ध कर लेती है यकीनी तौर पर । अब जो "आत्मा विशेष" अपने इस मनुष्य जन्म के "अर्थ विशेष" को प्रत्यक्ष उपलब्ध करने के लिये ही केवल केवल निरन्तर प्रयन्नशील रहती है वो तो माई विशेष की नजर विशेष में नाड़ी अर्थात जानकर या विवेकशील विशेष ही है अपना "निज कल्याण" करने के कारण विशेष तौर से और जो "शैतानी ताकतों" विशेष के संग नाचता कूदता बाजे ढोल बजाता है और अपने दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष को खो देता है व्यर्थ के कर्मकाण्डों विशेषों में निश्चित रूप से माई विशेष उसे "अनाड़ी विशेष" ही बताती है यकीनी तौर पर । अब तेरा क्या धन्धा है बस रोना-पीटना बिना विचारे मुर्दो की हड्डियों विशेषों का बन्दोबस्त ही करते फिरना जिन्दगी भर केवल स्वंय को डुबोने के लिये ही निरन्तर मुर्दा बनते हुऐ निश्चित रूप से । बुद्धि नाम का पदार्थ

विशेष तो तेरे पूरे खानदान के पास केवल दुर्लभ विशेष ही है निश्चित रूप से। ये सब "मुर्दे विशेष" के "संग विशेष" का "दुर्लभ प्रभाव विशेष" ही है तुझे कैसे समझ में आवेगा ये "गाड़ा-गाड़ा" सा विशेष-2 निश्चित रूप से ? अरे "महामारी विशेष" जरा संभालियो ये फिर से मोटा-2 सा गोल-2 चश्मा विशेष लगाये कलम दवात विशेष पकड़े चली आ रही है । भाई बिना भेजे की खोपड़ी विशेष चाटने, देखियो बच के रहियो कहीं फिर से कोई बाण विशेष न छोड़ देवे ! अजी एक जरूरी बात तो पूछनी रह ही गई थी ? तुम्हारा गुरू कौन है ? कौन तुम्हें पढ़ाता है ये टेड़ा मेड़ा सा नक्शा विशेष ? रहता कहाँ है ? अरे सुन भाई एक बार कहीं बाहर से ये छूत की "महामारी विशेष" अपने को भी चुमड़ ही गई "महाभूत विशेष" बन कर । कहने लगी तुझे लंगूर से मानव विशेष बनायेंगे । हमने कहा कि भाई इस मानव नाम की बीमारी विशेष में भला क्या खूबी है जो हमें तबदील करोगे लंगूर से मानव विशेष में तो "महामारी विशेष" ब्यान देने लगी कि ये मानव "प्रभु" का खास रूप ही है । फिर इस में दुम नहीं हुआ करती । ये केवल "आँखों-आँखों" में ही दृष्टि मार कर ही सब कुछ निगल लेता है बिना चबाये, सामने वाले को कुछ पता भी नहीं चलता कि कब हज्म कर लिया गया पूरी तरह से निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । फिर मुँह में "आग विशेष" ही लिये फिरता है दुनिया को पूरी तरह से फूंकने के लिये । साँप तो एक दो को ही डसंता है फिर

स्वंय ही मरने जैसा हो जाता है परन्तु इस मानव विशेष की एक ही फुंकार विशेष से मुल्क के मुल्क लाशों के ढेर बनाने में पूर्ण समर्थ है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । बस बस बाकी की खूबियाँ हम खुद ही प्रत्यक्ष अनुभव कर लेंगे, अब तो तुम जल्दी से मुझे लंगूर से मानव विशेष ही बना दो निश्चित रूप से । अब जैसे ही महामारी विशेष ने दुम को काटा तो हमें प्यार उमड़ आया इस प्यारी सी दुर्लभ संपत्ति विशेष दुम पर । सभी लगूरों विशेषों को अपनी दुम विशेष से अत्यंत लगाव विशेष रहता ही है यकीनी तौर पर । हम ने भी एक तरफ से पकड़ लिया कसकर पूँछ को मोह विशेष के चक्कर में फिर याद आया कि गुरू को क्या मुँह दिखायेंगे भाई कुछ तो निशानी विशेष रहनी ही चाहिये अवश्य आवश्यक रूप से कि हम भी आखिर गुरू विशेष वाले ही हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर हमें डर भी लगा कि कहीं गुरू जी नाराज ही न हो जायें बस फट से हमने जितनी पूँछ हाथ में बची थी विशेष तौर पर तुरन्त मुँह पर चिपका ली पक्की तरह से गोंद विशेष लगा कर ताकी शिष्य विशेष की दुर्लभ पहचान विशेष बनी ही रहे यकीनी तौर पर । इससे हमारा अपनी संपत्ति विशेष पर प्यार भी साबित हो ही गया और गुरू विशेष वाले भी साबित हो ही गये बस अब कोई "डर विशेष" नहीं रहा "गुरू विशेष जी" का प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस गुप्त भेद विशेष को पड़ोसन ने कान धर कर सुन ही लिया । अब हज्म नहीं कर सकी बेचारी

। अर्थात गुप्त भेद और हज्म, दोनों एक ही पेट में, वो भी औरत के यानी के दोनों इकट्ठे रहें ऐसा दुर्लभ विशेष हो ही नहीं सकता किसी भी काल में यकीनी तौर पर । फट से नतीजा प्रत्यक्ष हुआ है ! भाई ये शोर कैसा है "महामारी विशेष जी" ? तेरा गुप्त भेद मानव विशेष बनने का उगल दिया है पड़ोसन ने सारे मोहल्ले में सभी हाथ में पूँछ पकड़े लाईन में खड़े हैं कि बस पूँछ काट कर मुँह पर ही चिपका दो, हमें भी गुरू वाला विशेष बना दो बिना कुछ भी "पुरुषार्थ विशेष" किये जल्दी से निश्चित तौर पर । अब तेरा धन्धा विशेष खूब चलेगा बस पूँछ काट कर बांस वालों को बेच देना है और बालों वाला सिरा मुँह पर ही चिपका देना बिना टैक्स दिये पूरा कारखाना विशेष ही खुल गया छप्पड़ फाड़ कर दुर्लभ गुरू+मुख वाला विशेष बनाने का निश्चित रूप से, देखियो किसी की काली सी नजर विशेष ही न लग जाये इसलिये कुछ टूना-वूना (जादू-मंतर) करते रहियो नियम से काली नजर वाली से तो तेरा डूबना भी हज्म नहीं होता फिर कारखाने विशेष को कैसे हज्म कर सकेगी । साधन विशेष-2 जुटेंगे पुश्ते राज करेंगी । ऐसे थोड़े ही कहा है "प्रभु" ने कि "खालसा मेरो रूप है खास, खालसे मह हो करो निवास" यानी पूँछ काट कर मुँह पर चिपका ली हमने और बस बन गये खालसा विशेष दुनिया को उल्लू विशेष बनाने वास्ते धन्धा विशेष तो अपना वही पुराना खानदानी लंगूर विशेष वाला ही है निश्चित रूप से फिर "प्रभु" जी फट से अधिकार

विशेष जमा ही बैठे इस खास से रूप विशेष पर यकीनी तौर पर । "हींग लगे न फटकरी और फिर रंग भी चोखा ।" इसलिये हे भाई हमारा "गुरू अथवा महामारी विशेष" हमारी पूँछ जो मुँह पर चिपका ली थी ना हमने, उसके एक बाल के सबसे छोटे से हिस्से में दुम दबाकर विशेष रूप से पूरी तरह से डूबा हुआ आनन्द विशेष ही मनाता रहता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस "महामारी विशेष" को तो कोई सुनाना भी पसन्द ही नहीं करता फिर देखे कौन और फिर संग विशेष की कौन सी कल्पना धरी जाये ? वे तो हम ही हैं जो इस "महामारी विशेष" को पाल रहे हैं मुफ्त में केवल अपनी तबाही विशेष के हेतू ही विशेष तौर पर । हमारे इस दुर्लभ संग विशेष से इस "महामारी विशेष" को भी हमारी खानदानी बीमारी विशेष छूत की लग ही गई है किसी के फटे में टांग अड़ाने वाली विशेष तौर पर बिना मतलब अच्छे भले को अंगुली विशेष देने की निश्चित रूप से । अब इस "महामारी" विशेष का संग विशेष तो कोई करना पसन्द ही नहीं करता फिर जब "खुरक विशेष" होती है इस "महामारी विशेष" की पूँछ में तो ये अंगुली विशेष देता है हमको दुर्लभ संग विशेष के कारण दे दिन-दे दिन-दे दिन । आखिर कब तक कोई बर्दाश्त करे इस दुर्लभ सी अंगुली विशेष को बस दुर्लभ बकवास विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध होना शुरू हो ही जाता है ना ना विशेष रूप से करते हुए भी हाँ हाँ हो ही जाती है निश्चित रूप से । "ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर

बैठे । करना था नो-नो-इन्कार-मगर-इकरार तुम्हीं से कर बैठे।" हाँ हाँ हो ही गई आखिर खसीटते-खसीटते डूब ही गई पूरी तरह से "आत्मा विशेष" इस महामारी विशेष में निश्चित रूप से यकीनी तौर पर । अब कि जब वैद्य के पास जायेगी हाजमे का नुस्खा विशेष लेने तो खुजली विशेष की औषधि विशेष भी अवश्य याद से लेती आइयो । इसे घोल कर नहलायेंगे "महामारी विशेष" को शायद कुछ फायदा उपलब्ध हो जाये ठीक होने का विशेष तौर पर बिना मतलब दूसरे को अंगुली विशेष देने की दुर्लभ बीमारी विशेष में और अपने को भी कुछ राहत विशेष मिले । वैसे लगता है कुछ लाभ विशेष होगा नहीं क्योंकि ये लाइलाज "महामारी विशेष" है । अगर इलाज हो गया तो फिर ये "महामारी" विशेष ही कैसे हुई भला जरा सोच तो सही । पर अब क्या हो सकता है भाई अब तो पूरी तरह से डूबने का प्रमाण पत्र विशेष उपलब्ध हो गया है निश्चित रूप से । अब तो केवल जीना है पल-पल मरने के लिये ही यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । इसीलिये कहा है कि संग हमेशा खूब सोच विचार कर करो । एक बार छूत का रोग विशेष लग गया तो फिर पूरी तरह से जान लेकर के ही छूटेगा आत्मा विशेष निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गाँठ बाँध लो यकीनी तौर पर । दुनिया के गुरू कैसे वट से रहते हैं । जब चलते हैं तो धरती भी कंपकंपाती है । पूरा "शाही लश्कर विशेष" ही ले कर के निकलते हैं "बेताज बादशाह" निश्चित रूप से । तुम्हारे गुरू

विशेष के पास तो रहने के लिये कोई और अच्छी खुली सी जगह भी नहीं है जो यह पूँछ के बाल के छोटे से हिस्से में बड़ी तंगी विशेष में फँस कर के ही रहता है बेचारा । हमने तो कभी देखा ही नहीं ऐसा गुरू विशेष तंगी सी में सिसकता हुआ बेचारा दीन हीन सा । माई देखोगी कैसे ? इस का तो "ना रूप"-"ना रेख"-"ना रंग किछ"। भेद की बात है किसी से बताईये मत, नहीं तो अपने "पाखाने" विशेष में ही लाईनें लग जायेंगी दुर्लभ दर्शनों विशेषों हेतू हाथ में तेल की बोतल विशेष पकड़े हुऐ दुर्लभ-2 विशेषों की निश्चित रूप से । भाई पाखाने का क्या चक्कर है ? कई बार मैंने देखा है धूप बत्ती लिये फिरते हो "पाखाने" विशेष में भी जरा बताओ तो सही "कसम" से किसी से नहीं कहूँगी यकीनी तौर पर । अच्छा तो सुन "पाखाने" में जो सफेद रंग की सीट सी विशेष है ना बस वही इस "दुर्लभ विशेष" "गुरू जी महाराज" "महामारी विशेष" का बिना ताज के राज करने का "दुर्लभ सिंहासन" विशेष ही है निश्चित रूप से । इसीलिये हम इसे धूप बत्ती करते रहते हैं स्प्रे विशेष की ताकि कोई छोटे-2 कीड़े विशेष गुरू जी महाराज को तंग न करें । यहीं से सभी राज सत्ता विशेष-2 प्रत्यक्ष होती है निश्चित रूप से । "अनन्त ब्राह्मण्ड" इस "दुर्लभ सिंहासन" विशेष के नीचे एक कोने में चक्कर ही काटते रहते हैं डर विशेष के मारे यकीनी तौर पर यहाँ ये "महामारी जी महाराज" खूब दुम फटकारते हुऐ उछल कूद करते रहते हैं बिना

किसी की भी विघ्न बाधा विशेष के निश्चित रूप से । यहाँ का पूरा राज विशेष इन महामारी विशेष जी का अपना ही है यकीनी तौर पर । पूँछ में तो केवल हमारे दुर्लभ संग विशेष की ही खातिर बेचारे फँसे से रहते हैं अपनी "खुरक विशेष" को मिटाने के लिये ही निश्चित रूप से । जड़ चेतन में निरन्तर भरपूर समाई ही रहती है इन की "सत्ता विशेष", पूँछ में छुपी हुई खुरक विशेष के रूप में यकीनी तौर पर। लफजों में इन "महामारी विशेष" की महिमा विशेष को व्यक्त करना केवल असम्भव सा ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले । ये तो केवल एक आत्मिक बोध ही है निश्चित रूप से "पागल आत्मा विशेष" का केवल स्वंय की निजी दुर्लभ संपत्ति विशेष के रूप में यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । तुम्हारी बातें तो कोई महा पागल विशेष ही समझेगा निश्चित रूप से नियमानुसार कोई बड़ा सा पागल विशेष ही घौर से पागल को समझ पाता है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में तुम्हें कोई ढंग का हट्टा कट्टा सा दाड़ी वाला गुरू नहीं मिला था जो इस "महामारी विशेष" को ही बांध लाये हो केवल स्वंय को कुल परिवार सहित डुबाने हेतू ही निश्चित रूप से.....। क्या गुरूओं का अकाल ही पड़ गया है ..... जो बिना शक्ल वाले को लटकाई फिरते हो पूँछ विशेष में बड़-बड़-बड़ । इस "महामारी विशेष" के "संग विशेष" से तुम भी केवल "नीम पागल" ही हो गये हो ..... बड़-बड़-बड़ । अब तो आगरे के दुर्लभ पागलखाने विशेष के फेल

होने का भी खतरा विशेष पूरी तरह से बन गया ही दिखता है इस "महामारी विशेष" में प्रत्यक्ष उपलब्ध होने के कारण निश्चित रूप से । तुम जैसे नीम पागल विशेष का इलाज तो अब जल्दी गाँव व्यास के सचखण्ड नाम के महान पागल खाने विशेष में भी आंशिक रूप से भी ठीक होना केवल "असंभव लफ्ज" विशेष को ही सार्थक बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । चेला करेला तो गुरू नीम चढ़ा बड़-बड़-बड़ । जैसा गुरू वैसा चेला बड़-बड़-बड़ । दोनों महापागल बड़-बड़-बड़ । दोनों महामारियाँ विशेष बड़-बड़-बड़। लगता है अब तो तीनों मुल्कों की लुटिया ही डूबेगी पूरी तरह से निश्चित रूप से नजर आ रहा है कि अब क्या प्रत्यक्ष होने वाला है बड़-बड़-बड़ । महापागलों विशेषों के हाथ सत्ता विशेष देने का यही दुर्लभ नतीजा विशेष निकलता है निश्चित रूप से यकीनी तौर पर बड़-बड़-बड़ । बेचारे पूँछ तो पहले ही मुंडवा चुके थे अब बिना दुम के कैसे भागेंगे भला । ये नियम शास्त्र है या गाली शास्त्र । शरम भी नहीं लगती उल्टी सीधी हांकते ..... बड़-बड़-बड़ ! बस बड़ बड़ मत करो अब चुप रहो तुम्हें कुछ पता भी है कि "पूरा गुरू" केवल "परमात्मा" ही होता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में फिर परमात्मा में "शक" की गुंजाईश विशेष नहीं हुआ करती प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । तुम ने "परमात्मा" विशेष पर "शक" किया है अब उठाओ अपना टीन टप्पड़ और दुड़िकी लगाओ यहाँ से पता नहीं कहाँ-2 से आ जाते

हैं बिना भेजे वाली खोपड़ी विशेष को चाटने .....। अब एक लफज भी ब्यान नहीं होगा विशेष रूप से .....। अपना नहीं पता आधी रात को कब्रें विशेष खोदती रहती है फिर मुर्दों विशेषों से पता नहीं क्या-2 गिट पिट करती रहती है .....। कितनी ही भयानक-2 सी चुड़ेलें विशेष-2 बस में कर रखी हैं कब्रिस्तानों विशेषों पर राज दुर्लभ विशेष स्थापित करने के हेतू ही निश्चित रूप से .....। दो खुर्राट से "भूत" विशेष भी अधीन कर रखे हैं अपने डण्डे विशेष से बांध कर इन खुर्राट श्रेणी के विशेष ताकतवर प्रेतों को निकलती है .....। या तो टोटकों विशेषों का चक्कर या शमशान भूमियों का चक्र विशेष .....। सभी "डाकनिया" बेचारी नाक रगड़ती हैं अपनी सलामती विशेष के हेतू इस माई विशेष के आगे यकीनी तौर पर .....। पूरी "जादूगरनी है जादूगरनी" ही निश्चित रूप से .....। मेरे अन्दर भी एक "खुर्राट सा भूत" विशेष घुसा रखा है जो दिन रात बिना रूके मुझे भी झुलाता ही रहता है पकड़ कर हवा में .....। "पागल" सा ही बना दिया है मुझे इस प्रेत खुर्राट ने यकीनी तौर पर .....। कहाँ जाऊँ ..... ? किस से इलाज विशेष करवाऊँ । सभी रोगी विशेष ही दीखते हैं इस महामारी विशेष के मारे हुऐ निश्चित रूप से .....! "जो जो दीसे सोई रोगी-रोग रहित मेरा "सतिगुर" जोगी ।"

"अभी रात बाकी है अभी बात बाकी है" ..... "अभी रात बाकी है अभी बात बाकी है" ..... सुना आपने लगता है फिर

से "खुर्क (खुजली) विशेष" उठ रही है "महामारी विशेष" की दुम में यकीनी तौर पर, अब फिर से दौरा विशेष पड़ेगा और "उगुंली विशेष" देगी ये "महामारी विशेष" दुर्लभ-2 जूतों विशेष को एकत्र करने हेतू ही निश्चित रूप से .....लगता है पेट भरा नहीं कुछ जगह खाली रह गई होगी उदर विशेष में .....। भाई लोगों डाक खर्च काफी कठिन हो गया है चुकाना अतः सभी जूतों विशेषों के पार्सल दुर्लभ-2 भेजने वालों को इस कठिन समस्या का भान होना ही चाहिये आवश्यक रूप से यानी के डाक खर्च चुका कर के ही केवल दुर्लभ तोहफा जूतों विशेषों का प्रदान करें, "सावधान" चप्पलों का जमाना लद चुका अतः पूरी तरह से निषेध ही हैं चप्पलें केवल जोड़ा ही भेजें जूतों का भी !

धन्यवाद .....!

"अभी और बाकी है...? "दुर्लभ पैगाम विशेष" "धुर विशेष से" ?